पन्ना प्रमुख

{ पन्ना समिति }

—बूथ से विजय तक—

यजुवेंद्र दुबे

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Yajuvendra Dubey 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRoseONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-81-6744-567-4

Cover Design: Aafiya Saifi
Typesetting: Namrata Saini

First Edition: September 2026

समर्पण

इतिहास बड़े नेताओं के नाम अवश्य याद रखता है,

लेकिन हर विजय की नींव उन अनगिनत कार्यकर्ताओं के परिश्रम पर टिकी होती है,

जिनका नाम शायद कहीं दर्ज नहीं होता,

लेकिन उनकी मेहनत संगठन की हर उपलब्धि में दिखाई देती है।

यह पुस्तक उन सभी निष्ठावान, समर्पित और कर्मठ कार्यकर्ताओं को सादर समर्पित है, जो बिना किसी अपेक्षा के अपना कर्तव्य निभाते हैं और संगठन को निरंतर मजबूत बनाने में अपना योगदान देते हैं।

— **यजुवेंद्र दुबे**

लेखक की बात

हर पुस्तक के पीछे केवल अध्ययन नहीं, बल्कि अनुभवों की एक लंबी यात्रा होती है। "पन्ना प्रमुख : बूथ से विजय तक" भी ऐसी ही यात्रा का परिणाम है। यह पुस्तक किसी एक चुनाव, किसी एक अभियान या किसी एक व्यक्ति की कहानी नहीं, बल्कि संगठन, समाज और कार्यकर्ताओं के बीच दो दशकों से अधिक समय तक मिले अनुभवों, सीख और निरंतर संवाद का संकलन है।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्र जीवन में छात्र राजनीति और सामाजिक गतिविधियों से जुड़ने का अवसर मिला। वहीं से सार्वजनिक जीवन, संगठन और समाज के प्रति मेरी रुचि विकसित हुई। शिक्षा पूर्ण करने के बाद मैं अपने माता-पिता की कर्मभूमि सूरत आया। परिवार के आग्रह पर कुछ समय तक पिताजी के साथ उनके व्यवसाय में जुड़ा, लेकिन मन हमेशा समाज के बीच रहकर कुछ सार्थक करने की ओर प्रेरित करता रहा। पत्रकारिता से पहले से जुड़ाव होने के कारण मैंने सूरत में हिंदी पत्रकारिता को अपना माध्यम बनाया। उस समय परिस्थितियाँ आसान नहीं थीं, फिर भी समाज के मुद्दों को उठाते-उठाते जनसंपर्क और संगठन—दोनों से मेरा जुड़ाव निरंतर बढ़ता गया।

इसी दौरान मेरा परिचय भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेताओं से हुआ। वर्ष 2004 में संगठन के कार्य में सक्रिय होने का अवसर मिला। शुरुआती दिनों में मुझे उत्तर भारतीय समाज के मतदाताओं को मतदाता सूची में चिन्हित करने और संगठन से जोड़ने की जिम्मेदारी मिली, जिसे मैंने पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ निभाने का प्रयास किया। समय के साथ संगठन का विस्तार हुआ और पंचायत क्षेत्र महानगरपालिका में शामिल हुआ। संगठन ने मुझ पर विश्वास व्यक्त करते हुए नवगठित वार्ड से पार्षद पद का प्रत्याशी बनाया। उस समय उस क्षेत्र में कांग्रेस का वर्षों से प्रभाव था, फिर भी घर-घर संपर्क, प्रत्येक सोसायटी में सक्रिय कार्यकर्ताओं का नेटवर्क तैयार करने और निरंतर जनसंवाद की रणनीति के बल पर हमें अल्प अंतर से विजय प्राप्त हुई।

उस अनुभव ने मुझे एक गहरी सीख दी कि चुनाव केवल लोकप्रियता से नहीं, बल्कि संगठित संपर्क, प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं और प्रत्येक परिवार तक निरंतर पहुँच से जीते जाते हैं। यही विश्वास आगे चलकर मुझे बूथ प्रबंधन, पन्ना प्रमुख और सूक्ष्म संगठनात्मक कार्यप्रणाली को गंभीरता से समझने की प्रेरणा देता रहा।

आगे चलकर आदरणीय सी. आर. पाटिल के मार्गदर्शन में गुजरात के साथ-साथ उत्तर प्रदेश, बिहार और अन्य राज्यों में संगठनात्मक प्रशिक्षण तथा पन्ना प्रमुख व्यवस्था से जुड़े कार्यों को निकट से देखने, समझने और कार्य करने का अवसर मिला। इस यात्रा ने यह विश्वास और अधिक दृढ़ किया कि किसी भी संगठन की सबसे बड़ी शक्ति उसके पदाधिकारी नहीं, बल्कि प्रशिक्षित, उत्तरदायी और समाज के बीच निरंतर सक्रिय कार्यकर्ता होते हैं।

इन्हीं अनुभवों, अध्ययन और व्यवहारिक कार्य के आधार पर यह पुस्तक लिखने का प्रयास किया गया है। इसका उद्देश्य किसी व्यवस्था का महिमामंडन करना नहीं, बल्कि उस संगठनात्मक कार्यसंस्कृति को समझना और प्रस्तुत करना है, जिसने बूथ स्तर के कार्य को नई दिशा दी। इस पुस्तक में जहाँ आवश्यक हुआ है, वहाँ सार्वजनिक स्रोतों, उपलब्ध दस्तावेजों, व्यवहारिक अनुभवों और संगठनात्मक अध्ययन का सहारा लिया गया है, ताकि विषय को यथासंभव संतुलित और प्रमाणिक रूप में प्रस्तुत किया जा सके।

यदि यह पुस्तक किसी कार्यकर्ता को अपने दायित्व को अधिक गंभीरता से निभाने, नए कार्यकर्ताओं को तैयार करने, समाज के बीच सतत सक्रिय रहने और संगठन की शक्ति को उसकी सबसे छोटी इकाई से समझने की प्रेरणा दे सके, तो मैं अपने इस प्रयास को सार्थक मानूँगा।

— **यजुवेंद्र दुबे**

भूमिका

दलीय हो या निर्दलीय, अगर आपको चुनावी जंग को मजबूती से लड़ना और जीत की बेहतर रणनीति बनानी है, तो भारतीय राजनीति में उभरकर सामने आई इस संगठनात्मक व्यवस्था को समझना जरूरी है। भाजपा ने पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति के माध्यम से बूथ संगठन को मतदाता सूची के एक-एक पन्ने और फिर परिवारों तक जोड़ने का प्रयास किया है।

पन्ना प्रमुख केवल मतदाता सूची के एक पन्ने की जिम्मेदारी संभालने वाला कार्यकर्ता नहीं है। वह संगठन और मतदाता के बीच लगातार संपर्क की एक कड़ी है। उसके साथ पन्ना समिति की सामूहिक भूमिका जुड़ती है, जिससे चुनावी तैयारी केवल मतदान के दिन की गतिविधि न रहकर लंबे समय तक चलने वाले संगठनात्मक संपर्क का रूप लेती है।

इस किताब के अध्यायों में आपको पता चलेगा कि भाजपा को चुनावी माहौल और सीटों के संभावित परिणामों का अंदाजा कई बार पहले से कैसे लग जाता है। कोई नेता पार्टी छोड़ देता है या राजनीतिक समीकरण बदलते हैं, तब भी जमीनी संगठन अपनी भूमिका कैसे निभाता है। गुजरात से शुरू हुआ पन्ना समिति का प्रयोग किस तरह चर्चा का विषय बना और अलग-अलग राज्यों में स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार इसे अपनाने की कोशिश कैसे हुई।

इस पुस्तक में पन्ना प्रमुख की भूमिका से लेकर पन्ना समिति की संरचना, बूथ प्रबंधन, मतदाता संपर्क, संगठन के विस्तार और डिजिटल दौर में बदलती कार्यशैली तक कई पहलुओं को सरल भाषा में सामने रखा गया है।

आखिर एक पन्ने में दर्ज मतदाताओं से शुरू होने वाली यह छोटी-सी जिम्मेदारी चुनावी संगठन की इतनी बड़ी ताकत कैसे बनती है?

इस सवाल का जवाब जानने के लिए किताब का एक पन्ना पढ़िए, फिर अगला पन्ना अपने आप पढ़ते चले जाएंगे।

प्रस्तावना

इतिहास गवाह है कि बड़े परिवर्तन अक्सर छोटे-छोटे प्रयासों से जन्म लेते हैं। लोकतंत्र भी इसका अपवाद नहीं है। चुनावी विजय केवल बड़े मंचों, विशाल रैलियों या प्रभावशाली भाषणों से नहीं बनती; उसकी वास्तविक नींव उन समर्पित कार्यकर्ताओं के परिश्रम पर टिकी होती है, जो समाज के बीच रहकर विश्वास, संवाद और सहभागिता का सेतु बनाते हैं।

भारतीय लोकतंत्र के साथ चुनावी प्रबंधन की चुनौतियाँ भी लगातार बढ़ी हैं। इन चुनौतियों के बीच ऐसी संगठनात्मक व्यवस्था की आवश्यकता महसूस हुई, जो प्रत्येक मतदाता तक प्रभावी ढंग से पहुँच सके। इसी सोच ने 'पन्ना प्रमुख' जैसी कार्यप्रणाली को जन्म दिया, जिसने बूथ-स्तर के संगठन को एक नई दिशा दी।

लेकिन पन्ना प्रमुख केवल मतदाता सूची के एक पन्ने की जिम्मेदारी संभालने वाला कार्यकर्ता नहीं है। वह संगठन और मतदाता के बीच सबसे निकट का संपर्क-बिंदु है। उसके सामने केवल एक सूची नहीं होती, बल्कि उस सूची में दर्ज प्रत्येक नाम के पीछे एक परिवार, एक विश्वास, एक अपेक्षा और लोकतंत्र से जुड़ी एक कहानी होती है। यही कारण है कि पन्ना प्रमुख की भूमिका छोटी दिखाई दे सकती है, लेकिन उसका प्रभाव अत्यंत व्यापक हो सकता है।

'पन्ना प्रमुख : बूथ से विजय तक' इसी विचार और कार्यसंस्कृति को समझने का प्रयास है। यह पुस्तक किसी चुनाव की रणनीति मात्र नहीं बताती, बल्कि उस संगठनात्मक दर्शन को सामने रखती है, जिसमें चुनाव जीतने से पहले कार्यकर्ता को तैयार किया जाता है, संगठन को बूथ तक पहुँचाया जाता है और मतदाता से संबंध को केवल चुनावी संपर्क न मानकर निरंतर संवाद का रूप दिया जाता है।

किसी भी बड़े राजनीतिक संगठन की वास्तविक शक्ति उसके कार्यालयों या मंचों पर नहीं, बल्कि उन हजारों-लाखों कार्यकर्ताओं में दिखाई देती है, जो बिना किसी बड़े मंच और प्रचार के अपने क्षेत्र में संगठन का चेहरा बनकर

काम करते हैं। पन्ना प्रमुख इसी शक्ति को व्यवस्थित रूप देने की कार्यपद्धति है। यह उस सिद्धांत पर आधारित है कि जब संगठन की अंतिम इकाई मजबूत होती है, तभी उसकी पूरी संरचना मजबूत होती है।

इस व्यवस्था की सबसे बड़ी विशेषता इसका सूक्ष्म प्रबंधन है। मतदाता सूची के एक पन्ने से शुरू होने वाली जिम्मेदारी धीरे-धीरे परिवार, मोहल्ले, बूथ और पूरे संगठन से जुड़ती चली जाती है। यहाँ संख्या केवल संख्या नहीं रहती; वह संपर्क का आधार बनती है। सूची केवल कागज नहीं रहती; वह संवाद का माध्यम बनती है। और कार्यकर्ता केवल पदाधिकारी नहीं रहता; वह संगठन की जीवंत कड़ी बन जाता है।

इसीलिए पन्ना प्रमुख की सफलता का मूल्यांकन केवल चुनाव के दिन नहीं किया जा सकता। उसकी असली परीक्षा चुनाव से बहुत पहले शुरू होती है—जब वह मतदाता को जानता है, उसके परिवार से परिचित होता है, उसकी अपेक्षाओं को समझता है, उसकी समस्याओं को सुनता है और संगठन तथा समाज के बीच विश्वास का संबंध बनाता है। चुनाव के दिन दिखाई देने वाला परिणाम वास्तव में लंबे समय तक किए गए इसी मौन और निरंतर परिश्रम का परिणाम होता है।

इस पुस्तक में पन्ना प्रमुख की अवधारणा, उसके विकास, संगठनात्मक प्रयोग, कार्यकर्ता निर्माण, मतदाता संपर्क, सूक्ष्म प्रबंधन और बूथ-स्तरीय कार्यप्रणाली को सरल और व्यावहारिक ढंग से समझाने का प्रयास किया गया है। साथ ही, गुजरात मॉडल के अनुभवों को इस दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है कि पाठक यह समझ सके कि एक विचार किस प्रकार कार्यपद्धति बनता है और कार्यपद्धति किस प्रकार संगठन की शक्ति में परिवर्तित होती है।

गुजरात ने बूथ प्रबंधन और पन्ना प्रमुख व्यवस्था को जिस गंभीरता, अनुशासन और निरंतरता के साथ संगठनात्मक प्रयोगों से जोड़ा, उसने इस पूरी कार्यप्रणाली को एक व्यापक पहचान दी। इस मॉडल का महत्व केवल चुनावी परिणामों तक सीमित नहीं है; इसका वास्तविक महत्व उस संगठनात्मक संस्कृति में है, जिसमें प्रत्येक कार्यकर्ता को यह महसूस कराया जाता है कि उसकी भूमिका छोटी नहीं है और उसकी जिम्मेदारी का प्रभाव उसके अनुमान से कहीं बड़ा हो सकता है।

यह पुस्तक उसी अदृश्य शक्ति को शब्द देने का प्रयास है।

क्योंकि लोकतंत्र में विजय केवल मतों की संख्या से तय नहीं होती; उसके पीछे लोगों तक पहुँचने की क्षमता, लोगों का विश्वास जीतने की शक्ति और उस विश्वास को संगठनात्मक ऊर्जा में बदलने का कौशल भी होता है। पन्ना प्रमुख इसी यात्रा की सबसे निचली, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण सीढ़ियों में से एक है—पन्ने से परिवार तक, परिवार से समाज तक और समाज से विजय तक।

मेरा विश्वास है कि यह पुस्तक केवल राजनीतिक कार्यकर्ताओं के लिए ही नहीं, बल्कि चुनाव प्रबंधन, संगठन निर्माण, राजनीति विज्ञान और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को समझने वाले विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं तथा सामान्य पाठकों के लिए भी उपयोगी होगी। विशेष रूप से उन कार्यकर्ताओं के लिए, जो संगठन में अपनी भूमिका को केवल एक दायित्व नहीं, बल्कि एक मिशन के रूप में देखते हैं, यह पुस्तक उनके अनुभवों को एक व्यवस्थित दृष्टि देने का प्रयास करेगी।

अंततः किसी भी संगठन की सबसे बड़ी ताकत उसका सबसे बड़ा नेता नहीं, बल्कि उसका सबसे छोटा दायित्व निभाने वाला वह कार्यकर्ता होता है, जो बिना किसी अपेक्षा के अपने हिस्से का काम पूरी निष्ठा से करता है। पन्ना प्रमुख उसी कार्यकर्ता की पहचान, उसकी जिम्मेदारी और उसकी शक्ति का नाम है।

यदि यह पुस्तक किसी एक कार्यकर्ता को भी यह सोचने के लिए प्रेरित कर सके कि “मेरे हिस्से का एक पन्ना भी संगठन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है”, यदि वह अपनी जिम्मेदारी को नए उत्साह के साथ निभाने लगे और यदि उसके छोटे-से प्रयास से संगठन और समाज के बीच एक मजबूत संबंध बन सके—तो मैं इस प्रयास को सार्थक मानूँगा।

— **यजुवेंद्र दुबे**

अनुक्रमणिका

अध्याय–1: पन्ना प्रमुख : बूथ से विजय तक 1
बूथ की शक्ति 3
बूथ अध्यक्ष 5
एक बूथ–दश यूथ 7
पन्ना प्रमुख 9
आदर्श पन्ना प्रमुख 11
पन्ना प्रमुख का आचरण 13
मतदाता सूची का एक पन्ना 15
पन्ना प्रमुख और परिवार 17
पन्ना प्रमुख : विश्वास की मजबूत सेतु 19
प्रथम संपर्क 21
सेवा 23
युवा मतदाता 25
वरिष्ठ नागरिक 27
महिला मतदाता 29
सुनना भी एक कला है 31
निरंतर संपर्क 33
एक प्रभावी पन्ना प्रमुख 35
पन्ना प्रमुख की डायरी 37

अध्याय – 2: पन्ना प्रमुख का इतिहास 40
बूथ समिति 42
बदलती चुनौती 44
एक पन्ना, एक जिम्मेदारी 46
पन्ना प्रमुख की शुरुआत 48
पन्ना प्रमुख से राष्ट्रीय पहचान तक 50
गुजरात में संगठनात्मक प्रयोग 52
पन्ना प्रमुख के साथ टीम 54

नवसारी : पन्ना समिति का महाप्रयोग 55
नवसारी से राष्ट्रीय पहचान तक 59
संगठन का महा-मॉडल : लिम्बायत 63
कार्यशैली ही बनाती है लोकप्रिय 67
महाराष्ट्र में भी पन्ना प्रमुख की भूमिका 71
बंगाल में पन्ना प्रमुख की परीक्षा 73
वाराणसी में पन्ना समिति का नया प्रयोग 76
चार राज्यों से चार अनुभव 79

अध्याय – 3: पन्ना समिति की भूमिका 81

पन्ना समिति की संरचना 83
सही सदस्य का चयन 85
बिहार में पन्ने का बदलता गणित 87
बिहार की जमीन पर पन्ना और पन्ना समिति 90
पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति का तालमेल 93
जब कोई कार्यकर्ता निष्क्रिय हो जाए... 96
एंटी-इनकंबेंसी के बीच पन्ना प्रमुख की भूमिका 98
मत से पहले मन जीतिए 100

अध्याय – 4: पन्ने के गणित का आविष्कार 102

महिला सशक्तिकरण और पन्ना प्रमुख 104
Gen Z और पन्ना प्रमुख 106
प्रथम मतदाता और पन्ना प्रमुख 108
वरिष्ठ नागरिक और दिव्यांग मतदाता 110
अफवाहों के दौर में सजग कार्यकर्ता 112
सरकारी योजनाओं के लाभार्थियों से संवाद 114
मतदान दिवस की कार्ययोजना 116
मतदान के बाद भी संगठन की परीक्षा 118

अध्याय–5: डिजिटल पन्ना प्रमुख 120

फेक न्यूज़ के दौर में डिजिटल सतर्कता 122
व्हाट्सऐप समूह 124
डिजिटल मतदाता सूची और डेटा प्रबंधन 126

सरल एप / Saral App 128
नमो ऐप कार्यकर्ताओ के लिये क्यो जरूरी है 129
मन की बात 132
डिजिटल युग में सतत प्रशिक्षण 135
मिस्ड कॉल से डिजिटल सदस्यता तक 137
एक युवा का मिस्ड कॉल पर हुआ पुरुस्कृत.. 139
मैं भी पन्ना प्रमुख.. 141
विशेष महत्वपूर्ण.. 143

उपसंहार 159

अध्याय–1

पन्ना प्रमुख : बूथ से विजय तक

लोकतंत्र की सबसे छोटी इकाई, सबसे बड़ी शक्ति

संगठन सूत्र

"मेरा बूथ–सबसे मजबूत, यही भाजपा की विजय का सबसे बड़ा मूलमंत्र है।"
— ***नरेंद्र मोदी*** **(प्रधानमंत्री)**

हर विजय की शुरुआत बूथ से

हर चुनाव की तैयारी मतदान के दिन शुरू नहीं होती। उसकी नींव बहुत पहले रखी जाती है। जब कोई कार्यकर्ता अपने क्षेत्र के लोगों से मिलता है, उनके परिवार को जानता है और सुख-दुःख में उनके साथ खड़ा रहता है, तभी संगठन और समाज के बीच संबंध बनना शुरू होता है। चुनाव के समय यही संबंध काम आता है।

भारत जैसे बड़े लोकतंत्र में चुनाव केवल मतदान केंद्र तक पहुँचने और मत डालने की प्रक्रिया नहीं है। इसके पीछे लंबे समय तक चलने वाला जनसंपर्क भी होता है। किसी संगठन की वास्तविक पहुँच का पता इस बात से चलता है कि उसके कार्यकर्ता लोगों के बीच कितने सहज हैं और सामान्य दिनों में उनसे कितना संपर्क रखते हैं।

इसी कारण बूथ को संगठन की सबसे महत्वपूर्ण जमीनी इकाई माना गया। बूथ वह स्थान है जहाँ मतदाता और कार्यकर्ता आमने-सामने आते हैं। यहाँ चुनावी गतिविधियों के साथ सामाजिक संपर्क की भी जगह बनती है। किसी परिवार की जरूरत जानना, नए मतदाता से मिलना, बुजुर्गों का हाल पूछना या किसी सामाजिक अवसर पर साथ खड़ा होना—ये छोटे काम धीरे-धीरे संबंधों को मजबूत करते हैं।

लेकिन एक बूथ पर परिवारों की संख्या अधिक होती है। प्रत्येक परिवार तक लगातार पहुँचना एक व्यक्ति के लिए आसान नहीं है। काम को छोटे हिस्सों में बाँटने की जरूरत यहीं से महसूस हुई। मतदाता सूची के एक पन्ने पर दर्ज परिवारों को एक कार्यकर्ता से जोड़ने की व्यवस्था ने इस काम को अधिक व्यवस्थित बनाया।

यहीं पर पन्ना प्रमुख की आवश्यकता ने जन्म लिया। जिसका काम तय हुआ अपने पन्ने के सभी परिवारों समझना और पहचानना। बूथ से परिवार तक पहुँचने वाली यही छोटी-सी कड़ी आगे चलकर संगठन की बड़ी ताकत बनती है।

पन्ना प्रमुख की कहानी इसलिए केवल एक संगठनात्मक व्यवस्था की कहानी नहीं है। यह उस कार्यकर्ता की कहानी है, जो बड़े राजनीतिक संगठन को घर-घर तक पहुँचाने का काम करता है।

लेखक की सोच

"हर मजबूत बूथ के पीछे एक सक्रिय कार्यकर्ता होता है
और हर बड़ी विजय के पीछे एक मजबूत बूथ।"

बूथ की शक्ति

संगठन की मजबूत नींव

संगठन सूत्र

*"चुनाव सिर्फ मंचों और भाषणों से नहीं जीते जाते, बल्कि वे हर एक पोलिंग बूथ पर लड़े और जीते जाते हैं।" — **नरेंद्र मोदी (प्रधानमंत्री)***

किसी भी चुनाव का अंतिम परिणाम मतगणना केंद्र पर घोषित होता है, लेकिन उसकी असली तैयारी बहुत पहले बूथ पर शुरू हो जाती है। मतदाता जिस मतदान केंद्र पर जाकर अपने मत का प्रयोग करता है, वही बूथ संगठन के लिए सबसे निचली और सबसे निकट की इकाई होता है। यहीं से कार्यकर्ता सीधे लोगों के बीच पहुँचता है।

बूथ की मजबूती केवल चुनाव के दिन की व्यवस्था से तय नहीं होती। उसका आधार यह है कि वहाँ कार्यकर्ताओं की टीम कितनी सक्रिय है और वे अपने क्षेत्र के लोगों से कितना जुड़ाव रखते हैं। जब कार्यकर्ता अपने क्षेत्र के परिवारों को जानते हैं, उनकी जरूरतों को समझते हैं और समय पर उनसे संपर्क करते हैं, तब बूथ धीरे-धीरे मजबूत होता है।

इसी सोच के साथ बूथ को केवल मतदान केंद्र तक सीमित रखने के बजाय वर्षभर सक्रिय संगठनात्मक इकाई के रूप में विकसित किया गया। कार्यकर्ताओं का काम चुनाव आने तक इंतजार करना नहीं, बल्कि सामान्य दिनों में भी समाज के बीच बने रहना है। सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेना, लोगों से मिलना, उनकी बात सुनना और जरूरत के समय सहयोग करना इसी जुड़ाव का हिस्सा है।

समय के साथ यह भी स्पष्ट हुआ कि एक बूथ पर काम करने की जिम्मेदारी केवल एक व्यक्ति के भरोसे नहीं छोड़ी जा सकती। क्षेत्र बड़ा हो तो परिवारों की संख्या भी अधिक होती है। हर परिवार तक नियमित रूप से पहुँचने के लिए कार्यकर्ताओं के बीच काम बाँटना जरूरी होता है। इसी आवश्यकता से

बूथ अध्यक्ष, बूथ समिति, एक बूथ–दस युवा (One Booth, Ten Youth) पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति जैसी व्यवस्थाएँ विकसित हुईं।

इन व्यवस्थाओं का उद्देश्य केवल चुनावी तैयारी करना नहीं था। इनका मूल उद्देश्य बूथ को ऐसा सक्रिय केंद्र बनाना था, जहाँ संगठन और समाज के बीच लगातार संपर्क बना रहे। संपर्क से संवाद बढ़ता है, संवाद से परिचय और परिचय से विश्वास का संबंध बनता है।

मजबूत बूथ किसी एक दिन की मेहनत से नहीं बनता। वह कार्यकर्ताओं की नियमित उपस्थिति, आपसी सहयोग और लोगों के साथ बने संबंधों से तैयार होता है।

लेखक की सोच

"जिस संगठन ने बूथ को समझ लिया, उसने जनता तक पहुँचने का सबसे प्रभावी मार्ग खोज लिया।"

बूथ अध्यक्ष

बूथ संगठन की पहली कड़ी

संगठन सूत्र

"बूथ ही संगठन की आत्मा है, अगर बूथ स्तर का ढांचा मजबूत और अनुशासित है, तो कोई भी चुनौती बड़ी नहीं होती।"
— बी. एल. संतोष (राष्ट्रीय संगठन महामंत्री), भाजपा

किसी भी चुनाव में संगठन की वास्तविक परीक्षा बूथ पर होती है। मतदान केंद्र की तैयारी, कार्यकर्ताओं का आपसी समन्वय और चुनाव के दिन की व्यवस्था के लिए एक जिम्मेदार नेतृत्व जरूरी होता है। यही जिम्मेदारी बूथ अध्यक्ष संभालता है।

बूथ अध्यक्ष अपने क्षेत्र में संगठन और कार्यकर्ताओं के बीच संपर्क बनाए रखता है। वह बूथ से जुड़े कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर काम तय करता है और उनकी जिम्मेदारियाँ बाँटता है। मतदाता सूची की जानकारी रखना, मतदान केंद्र से जुड़ी तैयारियों को देखना और चुनाव से पहले जरूरी संपर्क पूरा करना उसके काम का हिस्सा है। चुनाव के दिन भी कार्यकर्ताओं के बीच तालमेल बनाए रखना जरूरी होता है, ताकि सभी अपने-अपने दायित्व को ठीक से निभा सकें। किसी कार्यकर्ता को कोई परेशानी हो तो बूथ अध्यक्ष उसके साथ खड़ा रहता है और जरूरत के अनुसार उचित व्यक्ति तक बात पहुँचाता है।

बूथ अध्यक्ष का काम केवल निर्देश देना नहीं है। उसे अपने साथ काम करने वाले कार्यकर्ताओं को समझना और उन्हें जिम्मेदारी के अनुसार आगे बढ़ाना होता है। जब कार्यकर्ताओं के बीच काम स्पष्ट रहता है, तो बूथ की व्यवस्था अधिक सहज हो जाती है। एक व्यक्ति पर पूरा भार रखने के बजाय अलग-अलग काम अलग कार्यकर्ताओं को देने से टीम मजबूत होती है।

बूथ से आगे : जिम्मेदारी का विस्तार

समय के साथ यह महसूस हुआ कि बूथ की जिम्मेदारी केवल मतदान दिवस की व्यवस्था तक सीमित नहीं रह सकती। चुनाव समाप्त होने के बाद भी लोगों के बीच संपर्क बनाए रखना जरूरी था। इसके लिए बूथ से जुड़े अधिक कार्यकर्ताओं को अलग-अलग काम देना आवश्यक हुआ।

बूथ अध्यक्ष संगठन को दिशा देता था, लेकिन हर परिवार तक लगातार पहुँचना अकेले उसके लिए संभव नहीं था। बूथ में जितने अधिक कार्यकर्ता सक्रिय होंगे, उतना ही काम आसानी से बाँटा जा सकेगा। किसी को क्षेत्र के परिवारों से संपर्क की जिम्मेदारी दी जा सकती थी। कोई नए मतदाताओं की जानकारी रख सकता था। कोई सामाजिक कार्यक्रमों में कार्यकर्ताओं की भागीदारी देख सकता था।

इस तरह बूथ का काम धीरे-धीरे टीम के रूप में आगे बढ़ने लगा। जिम्मेदारी बाँटने से कार्यकर्ताओं को भी अपनी भूमिका समझने का अवसर मिला। वे केवल चुनाव के समय सक्रिय रहने के बजाय संगठन के नियमित काम से जुड़ने लगे।

इस बदलाव का एक और लाभ हुआ। बूथ अध्यक्ष को हर छोटे काम को स्वयं देखने की जरूरत नहीं रही। वह कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर काम की निगरानी कर सकता था और जहाँ जरूरत हो, वहाँ मार्गदर्शन दे सकता था।

बूथ को मजबूत बनाने के लिए अब केवल एक नेतृत्व नहीं, बल्कि सक्रिय कार्यकर्ताओं की टीम की जरूरत सामने आने लगी। इसी जरूरत ने आगे बूथ स्तर पर नई कार्यपद्धतियों के विकास का रास्ता तैयार किया।

लेखक की सोच

"संगठन तब मजबूत होता है, जब जिम्मेदारी किसी एक व्यक्ति तक सीमित न रहकर अनेक कार्यकर्ताओं की शक्ति बन जाए।"

एक बूथ–दश यूथ

बूथ को मिली नई ऊर्जा

संगठन सूत्र

*"युवा शक्ति जब संगठन से जुड़ती है, तो राष्ट्र निर्माण की गति और तेज होती है।" — **नरेंद्र मोदी*** **(प्रधानमंत्री)**

बूथ को मजबूत बनाने के लिए केवल नेतृत्व पर्याप्त नहीं था। अधिक युवाओं को संगठन से जोड़ना और उन्हें काम की जिम्मेदारी देना भी जरूरी था। इसी सोच के साथ एक बूथ–दस युवा(One Booth, Ten Youth) की कार्ययोजना को व्यापक रूप से अपनाया गया।

लोकसभा चुनाव 2014 की तैयारियों में प्रत्येक बूथ पर युवाओं की सक्रिय टीम बनाने का प्रयास किया गया। इन युवाओं को संगठन के कार्यक्रमों, जनसंपर्क और बूथ से जुड़े दूसरे कामों में लगाया गया। इससे बूथ पर काम करने वाले लोगों की संख्या बढ़ी और कार्यकर्ताओं के बीच काम बाँटना आसान हुआ।

युवाओं की भागीदारी से बूथ की गतिविधियों में भी तेजी आई। नए कार्यकर्ता संगठन से जुड़े और उन्हें जमीन पर काम करने का अवसर मिला। इससे बूथ केवल चुनाव के समय सक्रिय होने वाली इकाई न रहकर लगातार काम करने वाली टीम के रूप में आगे बढ़ने लगा।

नवंबर 2014 में जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव के दौरान तत्कालीन भाजपा राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन) श्री रामलाल ने कार्यकर्ताओं से लोकसभा चुनाव की तरह "एक बूथ–दस युवा" के सूत्र को अपनाने का आह्वान किया। इससे इस कार्यपद्धति को मिले संगठनात्मक महत्व का संकेत मिलता है।

इस पहल से बूथ पर कार्यकर्ताओं की संख्या और सक्रियता दोनों बढ़ीं। लेकिन इसके साथ एक नई जरूरत भी सामने आई। बूथ पर सक्रिय टीम तो तैयार हो गई थी, अब हर परिवार तक व्यक्तिगत और नियमित संपर्क कैसे बनाया जाए?

जबकि उस बूथ पर 1500 से 1800 मतदाता मौजद हैं। यू कहे एक बूथ में अनेको परिवार हैं। सभी परिवारों से लगातार संपर्क रखने के लिए जिम्मेदारी को और छोटे स्तर पर बाँटना जरूरी बनने लगा था। यही आवश्यकता आगे चलकर पन्ना प्रमुख की अवधारणा की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बनी।

लेखक की सोच

"युवा कार्यकर्ताओं की ऊर्जा ने बूथ को गति दी; अगली जरूरत उस ऊर्जा को परिवार-परिवार तक पहुँचाने की थी।"

पन्ना प्रमुख

बूथ से परिवार तक

संगठन सूत्र

"चुनाव नेताओं के भाषणों या रैलियों से नहीं, बल्कि पन्ना प्रमुख की तत्परता और पोलिंग बूथ पर उसकी सक्रियता से जीते जाते हैं।"
***— अमित शाह* (केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री)**

बूथ पर कार्यकर्ताओं की सक्रियता बढ़ी तो संगठन के सामने अगला सवाल आया। बूथ से जुड़े हर परिवार तक नियमित रूप से कैसे पहुँचा जाए? एक बूथ पर तो कई परिवार हैं। सभी से एक ही व्यक्ति लगातार संपर्क रखे, यह व्यवहार में आसान नहीं था। इसके लिए काम को छोटे हिस्सों में बाँटना जरूरी था।

मतदाता सूची का एक पन्ना इस काम के लिए स्वाभाविक आधार बना। उस पन्ने पर दर्ज परिवारों की संख्या सीमित होती है। यदि उन परिवारों की जिम्मेदारी किसी एक कार्यकर्ता को दी जाए, तो वह उन्हें बेहतर ढंग से जान सकता है। परिवार में कौन नया है, किससे मिलना है, किसकी कोई आवश्यकता है और किससे पहले संपर्क हो चुका है—इन बातों का ध्यान रखना भी आसान हो जाता है।

यहीं से पन्ना प्रमुख की भूमिका सामने आई। उसे केवल मतदाता सूची के कुछ नामों की जिम्मेदारी नहीं दी गई, बल्कि उन नामों से जुड़े परिवारों तक पहुँचने का दायित्व मिला। उसका काम लोगों से मिलना, उनकी बात सुनना और उनके साथ सहज संबंध बनाए रखना था।

इस व्यवस्था ने बूथ के काम को मतदाता परिवारों के और करीब ला दिया। अब यह कार्य केवल चुनाव के समय तक होने वाली गतिविधि नहीं रही। सामान्य दिनों में भी परिवारों से मिलना, सामाजिक अवसरों पर शुभकामनाएँ देना और आवश्यकता के समय उपलब्ध रहना इसके हिस्से हो गए।

पन्ना प्रमुख की ताकत उसके पास मौजूद सूची में नहीं, बल्कि उन परिवारों के साथ बने संबंधों में होता है। वह जितना अपने क्षेत्र के लोगों को समझेगा, उतना ही सहज होकर उनके बीच काम कर सकेगा। चुनाव के समय उसका अनुभव संगठन के लिए उपयोगी होता है, लेकिन उसकी असली पहचान तब होता है जब कोई चुनाव सामने नहीं होता है और वह पन्ना के परिवारों के साथ घुलमिल मिल जाता है।

इस तरह बूथ से परिवार तक पहुँचने की एक ऐसी कड़ी बनी, जिसने संगठन के कार्य को अधिक व्यक्तिगत और व्यवस्थित कर दिया।

लेखक की सोच

"बूथ की शक्ति तब परिवार तक पहुँचती है, जब कोई कार्यकर्ता उस जिम्मेदारी को अपना दायित्व समझकर निभाता है।"

आदर्श पन्ना प्रमुख

कैसे बने प्रभावी कार्यकर्ता?

संगठन सूत्र

"जब कार्यकर्ता जनता के पास समाधान बनकर पहुँचता है,
तो संगठन के प्रति विश्वास अपने आप बढ़ता है।"
— ***बी. एल. संतोष*** **(राष्ट्रीय संगठन महामंत्री), भाजपा**

पन्ना प्रमुख संगठन का केवल प्रतिनिधि नहीं होता। वह अपने क्षेत्र के परिवारों के बीच संगठन का परिचित चेहरा होता है। लोग उसे उसके पद से कम और उसके व्यवहार से अधिक पहचानते हैं। वह किस तरह बात करता है, किसी की परेशानी को कितनी गंभीरता से सुनता है और जरूरत पड़ने पर कितना साथ खड़ा रहता है, यही उसकी वास्तविक पहचान बनती है।

एक अच्छा पन्ना प्रमुख अपने क्षेत्र के लोगों से केवल चुनाव के समय संपर्क नहीं करता। वह सामान्य दिनों में भी लोगों के बीच रहता है। किसी परिवार में खुशी का अवसर हो तो शुभकामना देता है। किसी के घर परेशानी हो तो हाल पूछता है। कोई व्यक्ति अपनी बात रखना चाहता है तो उसे समय देता है। हर समस्या का समाधान उसके पास हो, यह जरूरी नहीं है। लेकिन सही व्यक्ति तक बात पहुँचाने की कोशिश वह जरूर कर सकता है।

उसके व्यवहार में सहजता होनी चाहिए। सामने वाला अपनी बात बिना झिझक कह सके, ऐसा वातावरण बनाना भी कार्यकर्ता की जिम्मेदारी है। असहमति होने पर बहस करना जरूरी नहीं। कई बार धैर्य से सुन लेना ही सबसे अच्छा उत्तर होता है।

एक आदर्श पन्ना प्रमुख में ये गुण होने चाहिए

✓ संपर्कशील — अपने क्षेत्र के परिवारों से नियमित संपर्क रखे।

✓ विश्वसनीय — लोग उसके सामने अपनी बात सहजता से रख सकें।

✓ सेवाभावी — आवश्यकता के समय अपनी क्षमता के अनुसार साथ दे।

✓ अनुशासित — संगठन की मर्यादा और तय जिम्मेदारियों का पालन करे।

✓ सकारात्मक — हर बात में शिकायत खोजने के बजाय रास्ता तलाशे।

✓ सक्रिय — चुनाव के बाद भी अपने दायित्व से जुड़ा रहे।

✓ संयमी — कठिन परिस्थिति में भी भाषा और व्यवहार पर नियंत्रण रखे।

✓ टीम भावना — दूसरे कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर काम करे।

पन्ना प्रमुख की सफलता इस बात से नहीं मापी जाती कि वह कितने लोगों से मिला। असली बात यह है कि उसके संपर्क के बाद लोगों के मन में उसके और संगठन के प्रति कैसी भावना बनी। व्यवहार अच्छा हो तो छोटी-सी मुलाकात भी लंबे संबंध की शुरुआत बन सकती है।

लेखक की सोच

"पन्ना प्रमुख की असली पहचान उसके पद से नहीं,
उसके व्यवहार और निरंतर सक्रियता से बनती है।"

पन्ना प्रमुख का आचरण

विश्वास ही पहचान

संगठन सूत्र

"संगठन की असली ताकत भाषणों में नहीं, बल्कि कार्यकर्ता के धैर्य और संवाद में निहित है।" — ***विनोद तावड़े*** **(राष्ट्रीय महासचिव) भाजपा**

किसी कार्यकर्ता के बारे में पहली राय उसके व्यवहार से बनती है। वह सामने वाले से किस तरह मिलता है, किस भाषा में बात करता है और किसी कठिन बात पर कैसी प्रतिक्रिया देता है—इन छोटी बातों का असर लंबे समय तक रहता है। पन्ना प्रमुख के मामले में यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि उसके व्यवहार को लोग केवल उसका व्यक्तिगत व्यवहार मानकर नहीं देखते। कई बार उसी से पूरे संगठन के बारे में अपनी धारणा बनाते हैं।

किसी घर में जाएँ तो बातचीत की शुरुआत सहज ढंग से होनी चाहिए। सामने वाला अपनी बात कह रहा हो तो बीच में रोकना ठीक नहीं। उसकी बात अपनी सोच से अलग हो, तब भी उसे पूरा सुनना चाहिए। हर मतभेद को बहस में बदल देना समझदारी नहीं है। राजनीति में अलग राय होना स्वाभाविक है। रिश्ते बनाए रखने के लिए हर बात पर सहमत होना जरूरी भी नहीं।

परिवार की निजी बातें भी इसी सावधानी का हिस्सा हैं। किसी ने भरोसा करके कोई व्यक्तिगत बात कही है तो उसे दूसरे लोगों के बीच चर्चा का विषय नहीं बनाना चाहिए। मोहल्ले में छोटी-सी बात भी जल्दी फैलती है। एक असावधानी से बना भरोसा टूट सकता है।

इसी तरह जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र या व्यक्तिगत पसंद के आधार पर व्यवहार बदलना संगठन की भावना के अनुकूल नहीं है। सामने वाला किसी दूसरे विचार का हो सकता है, फिर भी उसके साथ सम्मान बना रहना चाहिए।

कभी बातचीत में तीखी बात सुनने को मिल सकती है। किसी समस्या को लेकर नाराजगी भी सामने आ सकती है। ऐसे समय में तुरंत जवाब देना आवश्यक नहीं। पहले स्थिति को समझना चाहिए। जहाँ अपनी जानकारी पर्याप्त न हो, वहाँ अनुमान लगाने के बजाय बात को उचित स्तर तक पहुँचाना बेहतर है।

पन्ना प्रमुख का आचरण किसी किताब में लिखे नियमों से नहीं बनता। वह रोजमर्रा की छोटी मुलाकातों में दिखाई देता है। लोग बहुत-सी बातें भूल सकते हैं, लेकिन उनके साथ कैसा व्यवहार हुआ, यह अक्सर याद रहता है।

लेखक की सोच

"लोग पहले कार्यकर्ता का व्यवहार याद रखते हैं, उसके बाद संगठन को पहचानते हैं। कार्यकर्ता ही पार्टी और जनता के बीच विश्वास का सेतु है।"

मतदाता सूची का एक पन्ना

अनेक परिवार, एक जिम्मेदारी

संगठन सूत्र

"बूथ पर जितना अधिक सूक्ष्म प्रबंधन होगा, संगठन उतना ही मजबूत होगा।"

— अमित शाह (केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री)

मतदाता सूची में दर्ज नामों को ध्यान से देखें तो एक बूथ की पूरी तस्वीर सामने आने लगती है। किस परिवार में कितने मतदाता हैं, कहाँ नए मतदाता जुड़े हैं और किन घरों तक पहुँचना बाकी है—इन छोटी-छोटी जानकारियों को समझने के लिए पूरी सूची को एक साथ देखना हमेशा आसान नहीं होता। इसलिए सूची को छोटे हिस्सों में बाँटकर देखने की जरूरत महसूस हुई।

एक पन्ने पर दर्ज परिवारों की संख्या सीमित होती है। कार्यकर्ता के लिए अपने हिस्से के घरों को पहचानना और उनसे मिलना इससे आसान हो जाता है। वह केवल नाम और पता याद नहीं करता, बल्कि धीरे-धीरे यह भी जानने लगता है कि किस घर में कौन रहता है। किसी परिवार में नया सदस्य आया है, कोई बुजुर्ग हैं, कोई युवा पहली बार मतदान करेगा या किसी परिवार से विशेष रूप से मिलना है—ऐसी बातें व्यक्तिगत जानकारी से ही सामने आती हैं।

यहीं से मतदाता सूची का एक पन्ना कार्यकर्ता के लिए अपने क्षेत्र की छोटी-सी जिम्मेदारी बन जाता है। उसे पूरे बूथ का बोझ एक साथ नहीं उठाना पड़ता। वह अपने हिस्से के परिवारों को अच्छी तरह जान सकता है और उनके साथ सहज संबंध बना सकता है।

यह अभ्यास केवल चुनाव के दिनों के लिए नहीं है। बीच-बीच में अपने पन्ने को देखना, जानकारी में हुए बदलाव को समझना और जिन परिवारों से मुलाकात नहीं हुई है, वहाँ पहुँचना कार्यकर्ता के नियमित अभ्यास का हिस्सा बनाया जा सकता है।

प्रशिक्षण अभ्यास : अपने पन्ने को जानें

अपने पन्ने की जानकारी स्वयं तैयार करें—

कुल परिवार : _________

कुल मतदाता : _________

नए मतदाता : _________

वरिष्ठ नागरिक : _________

विशेष संपर्क : _________

जिन परिवारों से अभी मिलना है : _________

यह अभ्यास कागज पर संख्या भरने के लिए नहीं, बल्कि अपने क्षेत्र को करीब से समझने के लिए है। पन्ना जितना परिचित होगा, कार्यकर्ता के लिए अपने दायित्व को निभाना उतना ही सहज होगा।

लेखक की सोच

"एक पन्ना छोटा दिखाई देता है, लेकिन उसके पीछे जुड़े परिवार पन्ना प्रमुख की बड़ी जिम्मेदारी होते हैं।"

पन्ना प्रमुख और परिवार

संपर्क से रिश्ते तक

संगठन सूत्र

"राजनीति का उद्देश्य केवल शासन करना नहीं, बल्कि लोगों का विश्वास जीतना और उनकी सेवा करना है।" ***— सुषमा स्वराज***

पन्ना प्रमुख और परिवार का संबंध केवल चुनावी संपर्क तक सीमित नहीं होना चाहिए। चुनाव आते-जाते हैं, लेकिन परिवारों से बने संबंध लंबे समय तक बने रहते हैं। इसलिए पन्ना प्रमुख के लिए अपने पन्ने पर दर्ज परिवारों को केवल मतदाता के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। उन्हें अपने क्षेत्र के ऐसे परिवारों के रूप में जानना जरूरी है, जिनके साथ उसका लगातार परिचय और संबंध बनता है।

हर परिवार की अपनी परिस्थितियाँ होती हैं। किसी परिवार में बुजुर्ग सदस्य होते हैं, तो किसी में युवा अधिक होते हैं। कहीं बच्चों की पढ़ाई प्रमुख विषय होती है, तो कहीं रोजगार या व्यवसाय से जुड़ी चिंता रहती है। किसी परिवार में लंबे समय से लोग एक ही स्थान पर रह रहे होते हैं, जबकि कुछ परिवार हाल में वहाँ आकर बसे होते हैं। पन्ना प्रमुख जब इन सामान्य बातों को समझता है, तो उसके लिए अपने पन्ने के परिवारों को पहचानना आसान हो जाता है।

परिवार को जानने का अर्थ उसकी निजी बातों में हस्तक्षेप करना नहीं है। पन्ना प्रमुख को यह अंतर हमेशा समझना चाहिए। जो बात परिवार स्वयं बताना चाहे, उसे ध्यान से सुनना और उसका सम्मान करना चाहिए। किसी परिवार की व्यक्तिगत जानकारी को दूसरे लोगों के बीच चर्चा का विषय बनाना उचित नहीं है। संबंध तभी सहज रहते हैं, जब दोनों ओर विश्वास और मर्यादा बनी रहे।

एक ही पन्ने पर दर्ज परिवारों की सोच भी अलग-अलग हो सकती है। किसी की राजनीतिक पसंद अलग हो सकती है, किसी की सामाजिक प्राथमिकताएँ भी अलग हो सकती हैं। ऐसे मतभेदों को स्वाभाविक रूप से स्वीकार करना

पन्ना प्रमुख के व्यवहार का हिस्सा होना चाहिए। सामने वाले की राय को समझने का प्रयास करना, उससे सहमत होना जरूरी नहीं है।

परिवारों से परिचय धीरे-धीरे बढ़ता है। पहली मुलाकात में जितनी जानकारी मिलती है, वह पूरी तस्वीर नहीं होती। समय के साथ परिवार के सदस्यों से परिचय बढ़ता है और उनके बारे में सामान्य समझ बनने लगती है। यही समझ आगे के संपर्क को अधिक सहज बनाती है। चुनाव के समय यही परिचय संगठन के लिए उपयोगी होता है, लेकिन उसकी नींव सामान्य दिनों में ही तैयार होती है।

लेखक की सोच

"जब परिवार आपको केवल कार्यकर्ता नहीं, अपना मानने लगे—तभी संपर्क विश्वास में बदलता है।"

पन्ना प्रमुख : विश्वास की मजबूत सेतु

संवाद ही सबसे बड़ी शक्ति

संगठन सूत्र

"हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण न बड़े नेता हैं, न नए चेहरे।
हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण हैं बूथ प्रभारी और पन्ना प्रमुख।"
— *अमित शाह* (केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री)

पन्ना प्रमुख की सबसे बड़ी पहचान उसके पास मौजूद मतदाता सूची नहीं, बल्कि उसका जीवंत संवाद है। जिस कार्यकर्ता का समाज से निरंतर संपर्क बना रहता है, वही संगठन और परिवारों के बीच विश्वास का मजबूत सेतु बन पाता है।

संवाद का अर्थ केवल अपनी बात कहना नहीं है। एक प्रभावी पन्ना प्रमुख पहले लोगों की बात सुनता है। उनकी अपेक्षाओं और समस्याओं को समझता है और फिर अपनी बात सरल भाषा में रखता है। बातचीत में सामने वाले को यह महसूस होना चाहिए कि उसकी बात को केवल औपचारिकता के लिए नहीं सुना जा रहा है।

कई बार किसी व्यक्ति के पास कोई शिकायत होती है, लेकिन वह सीधे संगठन के किसी बड़े व्यक्ति तक अपनी बात नहीं पहुँचा पाता। ऐसे समय में पन्ना प्रमुख उसकी बात सुनकर उचित स्थान तक पहुँचाने का माध्यम बन सकता है। हर समस्या का समाधान उसके पास हो, यह आवश्यक नहीं है। अपनी सीमा को समझना और गलत आश्वासन न देना भी संवाद का हिस्सा है।

संवाद में भाषा के साथ व्यवहार का भी महत्व है। सामने वाला किसी दूसरे राजनीतिक विचार से जुड़ा हो सकता है। उसकी राय पन्ना प्रमुख से अलग हो सकती है। ऐसी स्थिति में बहस या कटुता के बजाय सम्मान बनाए रखना अधिक उपयोगी होता है। विचार अलग होने के बाद भी बातचीत का रास्ता खुला रह सकता है।

जब किसी परिवार को यह अनुभव होता है कि पन्ना प्रमुख केवल चुनाव के समय नहीं, बल्कि सामान्य दिनों में भी उनका हालचाल पूछता है, तब संगठन के प्रति आत्मीयता बढ़ती है। धीरे-धीरे परिचय सहज बातचीत में और बातचीत भरोसे में बदलती है।

पन्ना प्रमुख का उद्देश्य बहस जीतना नहीं, बल्कि दिल जीतना है। सम्मानपूर्ण संवाद ही उसकी सबसे बड़ी शक्ति है।

लेखक की सोच

"लोग आपकी बात तभी सुनते हैं, जब उन्हें विश्वास हो कि आप पहले उनकी बात सुनने आए हैं।"

प्रथम संपर्क

पहली मुलाकात की सही शुरुआत

संगठन सूत्र

"कार्यकर्ता ही हमारी सबसे बड़ी पूँजी है।" ***— अटल बिहारी वाजपेयी***

किसी परिवार से पहली मुलाकात पन्ना प्रमुख के लिए छोटा, लेकिन महत्वपूर्ण अवसर होती है। इसी मुलाकात से यह तय होता है कि आगे का संपर्क सहज रहेगा या केवल औपचारिक। इसलिए पहली बार मिलने का उद्देश्य बहुत कुछ कह देना नहीं, बल्कि एक अच्छा परिचय बनाना होना चाहिए।

दरवाजे पर पहुँचते ही विनम्रता दिखाई देनी चाहिए। मुस्कान के साथ अभिवादन करें और अपना परिचय संक्षेप में दें। यह भी स्पष्ट करें कि आप किस क्षेत्र से जुड़े हैं और किस उद्देश्य से मिलने आए हैं। परिचय इतना ही हो कि सामने वाले को असहजता न लगे।

पहली मुलाकात में परिवार के समय और सुविधा का ध्यान रखना जरूरी है। यदि परिवार किसी काम में व्यस्त है तो बातचीत को लंबा खींचने के बजाय संक्षेप में बात पूरी करना बेहतर है। इससे सामने वाले को यह अनुभव होता है कि कार्यकर्ता उसके समय का सम्मान करता है।

पहली बार मिलते समय बहुत अधिक राजनीतिक चर्चा शुरू करना उचित नहीं। किसी व्यक्ति की राजनीतिक पसंद, निजी जीवन या परिवार से जुड़े संवेदनशील प्रश्न सीधे पूछने से बचना चाहिए। पहले सामान्य परिचय बने। फिर धीरे-धीरे बातचीत का अवसर आएगा।

पहली मुलाकात में आसपास की सामान्य जानकारी भी ध्यान में रखी जा सकती है। परिवार में कितने सदस्य हैं, कौन लंबे समय से क्षेत्र में रह रहा है और कौन नया आया है—इतनी सामान्य जानकारी आगे के संपर्क में उपयोगी हो सकती

है। लेकिन जानकारी लेने और निजी जीवन में दखल देने के बीच का अंतर समझना जरूरी है।

पहली मुलाकात का एक उद्देश्य अगली मुलाकात की संभावना बनाए रखना भी है। बातचीत समाप्त करते समय जल्दबाजी न दिखाएँ और सामने वाले को अपनी सुविधा के अनुसार आगे मिलने का अवसर दें। संबंध एक मुलाकात में नहीं बनता। पहली मुलाकात केवल उसकी शुरुआत होती है।

पहली मुलाकात के पाँच सूत्र
✓ सहज अभिवादन
✓ संक्षिप्त परिचय
✓ परिवार की सुविधा का ध्यान
✓ अधिक सुनें, कम बोलें
✓ अगली मुलाकात का अवसर छोड़ें

लेखक की सोच

"पहली मुलाकात का उद्देश्य अपनी बात मनवाना नहीं,
सामने वाले के मन में सहजता पैदा करना होना चाहिए।"

सेवा

विश्वास की सबसे मजबूत नींव

संगठन सूत्र

"संगठन की जड़ें वोटों से नहीं, जनता के प्रति उसकी सेवा और संवेदनशीलता से गहरी होती हैं।"
— अमित शाह (गृह एवं सहकारिता मंत्री)

एक प्रभावी पन्ना प्रमुख की पहचान केवल उसके संपर्क करने मात्र से नही, बल्कि उसकी सेवा भावना से होती है। समाज उसी कार्यकर्ता को याद रखता है, जो आवश्यकता के समय बिना किसी अपेक्षा के खड़ा दिखाई देता है। सेवा का अर्थ किसी पर उपकार करना नहीं है। इसका अर्थ है, सामने वाले की जरूरत को समझना और अपनी क्षमता के अनुसार उसके काम आना।

सेवा के लिए हमेशा बड़ी व्यवस्था या आर्थिक साधन जरूरी नहीं होते। किसी बीमार व्यक्ति का हालचाल पूछना, रक्तदान के लिए प्रेरित करना, सरकारी योजनाओं की जानकारी देना, जरूरतमंद परिवार को सही स्थान तक पहुँचाना या आपदा के समय उपलब्ध रहना भी सेवा है। कई बार किसी व्यक्ति को केवल सही जानकारी और उचित मार्गदर्शन की जरूरत होती है। ऐसे समय में पन्ना प्रमुख उसकी सहायता कर सकता है।

सेवा करते समय अपनी सीमा समझना भी जरूरी है। जिस काम को स्वयं पूरा करना संभव न हो, उसके लिए झूठा आश्वासन देना उचित नहीं। बेहतर है कि संबंधित व्यक्ति या संस्था तक बात पहुँचाई जाए। इससे सहायता का उद्देश्य भी पूरा होता है और कार्यकर्ता के प्रति भरोसा भी बना रहता है।

सेवा का संबंध केवल कठिन समय से नहीं है। परिवार में खुशी का अवसर हो, किसी बुजुर्ग को सहायता की जरूरत हो या किसी सामान्य समस्या में मार्गदर्शन चाहिए, वहाँ संवेदनशीलता के साथ उपस्थित रहना भी सेवा का

हिस्सा है। ऐसी छोटी पहलें किसी प्रचार की तरह नहीं, बल्कि स्वाभाविक मानवीय व्यवहार की तरह होनी चाहिए।

जब पन्ना प्रमुख समाज के सुख-दुःख में सहभागी बनता है, तब उसका परिचय केवल संगठन के कार्यकर्ता के रूप में नहीं, बल्कि विश्वसनीय साथी के रूप में बनता है। यही विश्वास समय के साथ संगठन की बड़ी पूँजी बन जाता है।

लेखक की सोच

"जिस कार्यकर्ता को लोग अपने सुख में बुलाएँ और संकट में याद करें, वही समाज के बीच अपनी सच्ची पहचान बना चुका होता है।"

युवा मतदाता

नई पीढ़ी से संवाद

संगठन सूत्र

"युवा शक्ति भारत की सबसे बड़ी शक्ति है।"
— राजनाथ सिंह (केंद्रीय रक्षा मंत्री)

हर चुनाव में अनेक युवा पहली बार मतदान का अधिकार प्राप्त करते हैं। उनके लिए यह केवल मतदान नही बल्कि लोकतंत्र को समझने और उसमें अपनी भूमिका तय करने का अवसर भी है। पहली बार मतदान करने वाला युवा अपने आसपास की घटनाओं, शिक्षा, रोजगार, विकास और देश के भविष्य को लेकर कई सवाल रखता है। उसे केवल मतदाता के रूप में देखना उसके महत्व को छोटा करना होगा।

पन्ना प्रमुख के लिए नए मतदाताओं की जानकारी रखना जरूरी है। उन्हें मतदान की प्रक्रिया और मतदाता सूची से जुड़ी सामान्य जानकारी दी जा सकती है। लेकिन इससे भी जरूरी है कि युवाओ की सोच को समझा जाए। वह क्या सोचता है, किन विषयों को अपने लिए महत्वपूर्ण मानता है और किन बातों को लेकर उसके मन में सवाल हैं—इन बातों को जानना किसी भी संपर्क को सार्थक बनाता है।

युवा से बात करते समय यह मानकर चलना ठीक नहीं कि उसे राजनीति के बारे में कुछ पता नहीं है। आज का युवा अपने आसपास और देश-दुनिया में हो रही घटनाओं से परिचित है। उसके पास अपनी राय होती है। वह सवाल करता है और कई बार स्थापित धारणाओं पर भी अपनी बात रखता है। ऐसे में उसकी बात को धैर्य से सुनना और तथ्य के आधार पर अपनी बात रखना अधिक प्रभावी होता है।

युवा ऊर्जा को सही दिशा मिले तो उसका असर केवल चुनाव तक सीमित नहीं रहता। शिक्षा, रोजगार, सामाजिक कार्य, खेल, तकनीक और स्थानीय

समस्याओं जैसे विषयों में युवाओं की भागीदारी समाज को आगे बढ़ाती है। पन्ना प्रमुख का प्रयास होना चाहिए कि युवा लोकतांत्रिक प्रक्रिया को समझे और अपनी जिम्मेदारी को गंभीरता से ले।

इसलिए युवा मतदाता से जुड़ना केवल चुनावी संपर्क नहीं है। यह उस पीढ़ी से संवाद है, जो आने वाले वर्षों में समाज और देश की दिशा तय करने में अपनी भूमिका निभाएगी।

लेखक की सोच

"युवा को केवल अपने साथ जोड़ने की कोशिश न करें;
पहले उसके सपनों और विचारों को समझने का प्रयास करें।"

वरिष्ठ नागरिक

अनुभव का सम्मान

संगठन सूत्र

"जिस समाज में बुजुर्गों का सम्मान होता है, वही समाज अपने संस्कारों और मूल्यों को सुरक्षित रखता है।" ***— अटल बिहारी वाजपेयी***

हर बूथ पर ऐसे वरिष्ठ नागरिक होते हैं, जिन्होंने अपने जीवन का लंबा समय उसी समाज के बीच बिताया है। उन्होंने क्षेत्र को बदलते देखा है। कई परिवारों को वर्षों से जानते हैं और स्थानीय परिस्थितियों की ऐसी जानकारी रखते हैं, जो किसी सूची या रिकॉर्ड में नहीं मिलेगा। उनका अनुभव नई पीढ़ी के लिए उपयोगी हो सकता है।

पन्ना प्रमुख के लिए वरिष्ठ नागरिकों से जुड़ना केवल एक सामाजिक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि अपने क्षेत्र को बेहतर ढंग से समझने का अवसर भी है। किसी मोहल्ले में पहले क्या स्थिति थी, कौन-से परिवार कब से रह रहे हैं, पुराने सामाजिक संबंध कैसे बने और समय के साथ क्या बदलाव आए—इन सबकी जानकारी वरिष्ठ लोगों के पास होती है। ऐसे अनुभव संगठन के जमीनी काम को भी अधिक समझदार बनाते हैं।

वरिष्ठ नागरिकों के साथ व्यवहार में सबसे पहले सम्मान दिखाई देना चाहिए। उम्र को केवल एक संख्या मानकर उनसे औपचारिकता निभाना पर्याप्त नहीं है। उनके समय और अनुभव को महत्व देना जरूरी है। बातचीत के दौरान जल्दबाजी न हो और उनके सामने अनावश्यक दिखावे से बचा जाए। कई बार थोड़ी देर बैठकर सामान्य बातचीत करना ही पर्याप्त होता है।

कुछ वरिष्ठ नागरिकों को सरकारी योजनाओं, स्थानीय सुविधाओं या किसी आवश्यक प्रक्रिया की जानकारी चाहिए हो सकती है। ऐसी स्थिति में पन्ना प्रमुख अपनी जानकारी के अनुसार सही मार्ग बता सकता है। जहाँ स्वयं जानकारी न

हो, वहाँ अनुमान लगाने के बजाय संबंधित व्यक्ति या विभाग तक पहुँचने में मदद करना उचित है।

वरिष्ठ नागरिकों को केवल आवश्यकता के समय याद करना भी सही नहीं। सामाजिक और पारिवारिक अवसरों पर उनका सम्मान करना तथा समय-समय पर कुशलक्षेम जानना संबंध को सहज बनाए रखता है। इससे नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के बीच दूरी भी कम होती है।

वरिष्ठ नागरिक किसी संगठन के लिए केवल मतदाता नहीं होते। वे उस समाज की स्मृति और अनुभव का हिस्सा होते हैं, जिसे समझे बिना जमीनी काम अधूरा रह सकता है।

लेखक की सोच

"वरिष्ठ नागरिकों का सम्मान केवल संस्कार नहीं, संगठन की उस पीढ़ी के अनुभव को स्वीकार करना है जिसने समाज को करीब से देखा है।"

महिला मतदाता

सम्मान और संवेदनशील संवाद

संगठन सूत्र

"महिला शक्ति भारत की सबसे बड़ी सामर्थ्य है।" ***— द्रौपदी मुर्मू***

परिवार और समाज के जीवन में महिलाओं की भूमिका केवल घर तक सीमित नहीं है। वे परिवार के निर्णयों में भाग लेती हैं, बच्चों की शिक्षा और भविष्य को लेकर सोचती हैं और अपने आसपास होने वाले बदलावों को भी करीब से देखती हैं। इसलिए पन्ना प्रमुख के लिए महिला मतदाताओं से जुड़ना किसी अलग औपचारिक गतिविधि की तरह नहीं, बल्कि परिवार और समाज को समझने की प्रक्रिया का हिस्सा होना चाहिए।

महिला से बातचीत करते समय सबसे जरूरी बात है कि उसे सम्मान और सहजता का अनुभव हो। घर पर संपर्क हो तो समय और परिस्थिति का ध्यान रखना चाहिए। बातचीत ऐसी हो जिसमें किसी तरह की असहजता पैदा न हो। स्थानीय परंपराओं और पारिवारिक मर्यादाओं का सम्मान करना कार्यकर्ता के व्यवहार का स्वाभाविक हिस्सा होना चाहिए।

महिलाओं की अपनी प्राथमिकताएँ और अनुभव होते हैं। घर की सुविधा, बच्चों की पढ़ाई, स्वास्थ्य, सुरक्षा, रोजगार या आसपास की किसी भी समस्या को लेकर उनकी अपनी अलग चिंता हो सकती है। इन विषयों को केवल चुनावी मुद्दे मानकर जल्दबाजी में उत्तर देना उचित नहीं। पहले यह समझना जरूरी है कि सामने वाली महिला उस विषय को किस रूप में देखती है।

किसी महिला की राजनीतिक पसंद उसके अपने निर्णय का विषय है। पन्ना प्रमुख का काम उस पर दबाव बनाना नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक प्रक्रिया से जुड़ी सही जानकारी उपलब्ध कराना और सम्मानजनक संबंध बनाए रखना है। असहमति होने पर भी बातचीत का सम्मान बना रहना चाहिए।

महिला मतदाता से जुड़ाव का असर केवल उस एक व्यक्ति तक नहीं रहता। घर की बातचीत में उसके अनुभव और विचार भी आते हैं। इसलिए एक सम्मानजनक व्यवहार परिवार के दूसरे सदस्यों के बीच भी कार्यकर्ता की सकारात्मक छवि बना सकता है। यही नही महिला पुरुष से ज्यादा गांव के घरों की चलने वाली राजनीति के नजाकत को समझती और सुनती है। जिसका परिणाम अब होने वाले चुनावों में महिला मतदाताओं के पड़ने वाले मतदान से आंक सकते हैं। पहले इनकी मतदान संख्या बहुत कम रहती थी परंतु अब पीछे नही हैं।

लेखक की सोच

"संगठन का संवाद वहाँ प्रभावी होता है, जहाँ सामने वाले को यह महसूस हो कि उसकी बात को सम्मान के साथ सुना जा रहा है।"

सुनना भी एक कला है

अच्छा कार्यकर्ता पहले सुनता है, फिर बोलता है

संगठन सूत्र

"अच्छा वक्ता होना राजनीति में आसान हो सकता है, लेकिन एक अच्छा 'श्रोता' होना संगठन के लिए सबसे कठिन और आवश्यक कला है।"
— बी. एल. संतोष (राष्ट्रीय संगठन महामंत्री) भाजपा

राजनीति में बोलने की कला को अक्सर नेतृत्व की पहचान माना जाता है। भाषण, तर्क और अपनी बात प्रभावी ढंग से रखने की क्षमता निश्चित रूप से जरूरी है। लेकिन जमीनी राजनीति में एक दूसरी क्षमता उतनी ही महत्वपूर्ण है—ध्यान से सुनना। पन्ना प्रमुख के लिए यह गुण इसलिए जरूरी है, क्योंकि उसके सामने आने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपनी अलग परिस्थिति और अलग अनुभव लेकर आता है।

किसी परिवार से मिलकर केवल अपनी बात कह देना संपर्क हो सकता है, लेकिन उससे सामने वाले की वास्तविक स्थिति समझ में नहीं आती। कई बार व्यक्ति अपनी परेशानी सीधे शब्दों में नहीं बता पाता। उसकी बातचीत के बीच से उसकी चिंता, नाराजगी या अपेक्षा का संकेत मिलता है। कार्यकर्ता यदि धैर्य से सुनेगा, तभी इन बातों को समझ पाएगा।

सुनने का मतलब हर बात से सहमत होना भी नहीं है। सामने वाला किसी विषय पर आलोचना कर सकता है, संगठन या व्यवस्था को लेकर अपनी नाराजगी बता सकता है। ऐसी स्थिति में तुरंत सफाई देने की जरूरत नहीं। पहले यह समझना अधिक जरूरी है कि नाराजगी की वजह क्या है। कई बार जवाब देने से पहले कुछ देर चुप रहना ही बेहतर रास्ता होता है।

राजनीति में जल्दबाजी से कही गई बात का असर लंबे समय तक रह सकता है। इसलिए जो जानकारी पूरी तरह मालूम न हो, उस पर अनुमान लगाकर उत्तर देना ठीक नहीं। "मुझे इसकी पूरी जानकारी नहीं है" कहना किसी

कार्यकर्ता की कमजोरी नहीं, बल्कि उसकी ईमानदारी है। बाद में सही जानकारी लेकर बात स्पष्ट की जा सकती है।

ध्यान से सुनने वाला कार्यकर्ता अपने क्षेत्र को कागज पर दर्ज आंकड़ों से अलग रूप में देख पाता है। उसे पता चलता है कि लोगों की वास्तविक चिंताएँ क्या हैं, किन विषयों पर असंतोष है और कहाँ संगठन की ओर से अधिक ध्यान देने की जरूरत है। यही समझ आगे के काम की दिशा तय करने में मदद करती है। जो दूसरों को समझने का धैर्य रखता है, वही सही समय पर सही बात कह पाता है।

प्रशिक्षण सूत्र

एक अच्छा पन्ना प्रमुख—
✓ पहले पूरी बात सुनता है।
✓ बीच में बात नहीं काटता।
✓ असहमति में भी सम्मान बनाए रखता है।
✓ जो नहीं जानता, उसका अनुमान नहीं लगाता।
✓ आवश्यकता होने पर उचित व्यक्ति तक बात पहुँचाता है।

लेखक की सोच

"हर व्यक्ति चाहता है कि कोई उसकी बात सुने;
पन्ना प्रमुख की शुरुआत वहीं से होती है।"

निरंतर संपर्क

एक मुलाकात नहीं, सतत जुड़ाव

संगठन सूत्र

"संगठन का विस्तार कार्यकर्ताओं के निरंतर संपर्क और सतत परिश्रम से होता है।" — ***जे. पी. नड्डा***

पन्ना प्रमुख का काम किसी परिवार से एक बार मिलने के बाद समाप्त नहीं हो जाता। पहली मुलाकात परिचय की शुरुआत करती है, लेकिन संबंध समय के साथ बनता है। इसलिए पन्ना प्रमुख के लिए जरूरी है कि वह अपने क्षेत्र के परिवारों से संपर्क को केवल चुनावी गतिविधि न माने।

निरंतर संपर्क का अर्थ यह भी नहीं है कि हर परिवार से बार-बार मिलने की कोशिश की जाए। जरूरत से अधिक संपर्क कई बार सामने वाले को असहज कर सकता है। सही तरीका यह है कि परिवार की परिस्थिति और सुविधा को समझते हुए समय-समय पर संपर्क बना रहे। कभी सामान्य कुशलक्षेम पूछना पर्याप्त होता है, तो कभी किसी सामाजिक या पारिवारिक अवसर पर शुभकामना देना संबंध को सहज बनाए रखता है।

समय के साथ परिवारों की परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं। किसी घर में नया सदस्य आता है, कोई युवा पहली बार मतदाता बनता है, कोई परिवार दूसरे स्थान पर चला जाता है या किसी बुजुर्ग को पहले की तुलना में अधिक सहयोग की जरूरत पड़ सकती है। पन्ना प्रमुख यदि अपने क्षेत्र को ध्यान से देखता है, तो ऐसे बदलाव उसकी जानकारी में आते रहते हैं। यह जानकारी केवल मतदाता सूची को अद्यतन रखने के लिए नहीं, बल्कि क्षेत्र को ठीक से समझने के लिए भी उपयोगी है।

निरंतर संपर्क में समय का ध्यान रखना भी जरूरी है। हर सूचना पर तुरंत पहुँच जाना या हर छोटी बात में हस्तक्षेप करना संपर्क नहीं है। कई बार उचित समय का इंतजार करना ही समझदारी होती है।

संपर्क का एक और पहलू यह है कि चुनाव समाप्त होने के बाद भी संबंध बना रहे। यदि कार्यकर्ता केवल मतदान के आसपास दिखाई देता है, तो संपर्क औपचारिक लग सकता है। इसके विपरीत सामान्य दिनों में सहज उपस्थिति धीरे-धीरे परिचय को स्थायी संबंध में बदल देता है।

पन्ना प्रमुख को अपने संपर्क का कोई दिखावटी हिसाब बनाने के बजाय यह देखना चाहिए कि उसके क्षेत्र के लोग उसे आवश्यकता के समय याद कर सकें। यही निरंतरता संगठन के जमीनी काम को स्थायित्व देती है।

प्रशिक्षण सूत्र

एक सक्रिय पन्ना प्रमुख—

✓ समय-समय पर परिवारों से संपर्क रखता है।

✓ सामाजिक एवं पारिवारिक अवसरों पर शुभकामनाएँ देता है।

✓ नए परिवारों और मतदाताओं की जानकारी रखता है।

✓ आवश्यकता पड़ने पर सहयोग के लिए उपलब्ध रहता है।

लेखक की सोच

"संपर्क की कीमत मुलाकातों की संख्या से नहीं,
उसकी निरंतरता और आत्मीयता से तय होती है।"

एक प्रभावी पन्ना प्रमुख

क्या करें, क्या न करें?

संगठन सूत्र

"पन्ना प्रमुख का कार्य केवल चुनाव के समय नहीं,
बल्कि पूरे साल सामाजिक सेवा और संवाद बनाए रखना है।"
— तरुण चुग (राष्ट्रीय महासचिव), भाजपा

पन्ना प्रमुख की जिम्मेदारी केवल लोगों से मिलने तक सीमित नहीं है। उसके काम का असर इस बात से तय होता है कि वह लोगों के बीच किस तरह व्यवहार करता है और अपनी जिम्मेदारी को कितनी गंभीरता से निभाता है। किसी परिवार से मिलने में कुछ मिनट लग सकते हैं, लेकिन उस मुलाकात से बनी धारणा लंबे समय तक रह सकती है। इसलिए छोटी-छोटी बातों में सावधानी जरूरी है।

किसी परिवार से मिलने जाएँ तो अभिवादन और व्यवहार में सहजता होनी चाहिए। सामने वाले को यह महसूस नहीं होना चाहिए कि कार्यकर्ता केवल अपना काम पूरा करने आया है। बातचीत में जो जानकारी निश्चित रूप से मालूम हो, वही बतानी चाहिए। किसी योजना, कार्यक्रम या संगठन से जुड़ी बात की पूरी जानकारी न हो तो अनुमान लगाकर उत्तर देने के बजाय सही जानकारी प्राप्त करना बेहतर है।

पन्ना प्रमुख अकेले काम नहीं करता। बूथ अध्यक्ष और दूसरे कार्यकर्ताओं के साथ तालमेल रहने से जिम्मेदारियाँ स्पष्ट रहती हैं। किसी व्यक्ति की आवश्यकता ऐसी हो जिसे वह स्वयं पूरा नहीं कर सकता, तो उसे उचित व्यक्ति या संस्था तक पहुँचाने का प्रयास करना चाहिए। झूठा आश्वासन देकर तत्काल प्रभाव पैदा करने से बेहतर है अपनी सीमा को साफ रखना।

कुछ बातों से विशेष रूप से बचना चाहिए। अपुष्ट सूचना या अफवाह आगे बढ़ाना, किसी परिवार की निजी बात सार्वजनिक करना, छोटी जिम्मेदारी को

टालना और बिना जानकारी के आश्वासन देना कार्यकर्ता की विश्वसनीयता को नुकसान पहुँचा सकता है। व्यक्तिगत मतभेदों को संगठनात्मक संबंधों से अलग रखना भी जरूरी है।

क्या करें?

✓ प्रत्येक परिवार का सम्मानपूर्वक अभिवादन करें।
✓ सही और प्रमाणित जानकारी ही साझा करें।
✓ संपर्क के बाद आवश्यक बातों को याद रखें या दर्ज करें।
✓ बूथ अध्यक्ष और सहयोगी कार्यकर्ताओं से समन्वय रखें।
✓ अपनी जिम्मेदारी समय पर पूरी करें।
✓ आवश्यकता समझकर उचित व्यक्ति तक बात पहुँचाने का प्रयास करें।

क्या न करें?

✗ अपुष्ट जानकारी या अफवाह आगे न बढ़ाएँ।
✗ किसी परिवार की निजी बात सार्वजनिक न करें।
✗ छोटी जिम्मेदारी को महत्वहीन समझकर न टालें।
✗ बिना जानकारी के किसी विषय पर आश्वासन न दें।
✗ व्यक्तिगत मतभेद को संगठनात्मक संबंधों पर हावी न होने दें।
✗ केवल चुनाव के समय सक्रिय न हों।

लेखक की सोच

"संगठन में बड़ी जिम्मेदारी से पहले छोटी जिम्मेदारियों को सही ढंग से निभाना सीखना पड़ता है।"

पन्ना प्रमुख की डायरी

एक नमूना प्रारूप

संगठन सूत्र

"संगठन की सफलता का आधार सूक्ष्म योजना और उसका प्रभावी क्रियान्वयन है।" ***— अमित शाह (केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री)***

पन्ना प्रमुख के पास अपने क्षेत्र से जुड़ी अनेक छोटी-बड़ी जानकारियाँ होती हैं। सब कुछ स्मृति में रखना हमेशा संभव नहीं होता। इसलिए एक साधारण डायरी उसके काम को व्यवस्थित रखने में उपयोगी हो सकती है। इसका उद्देश्य केवल नामों की सूची तैयार करना नहीं, बल्कि अपने दायित्व से जुड़ी जरूरी बातों को एक स्थान पर सुरक्षित रखना है।

डायरी में बूथ संख्या, पन्ना क्रमांक, ग्राम या वार्ड, पन्ना प्रमुख का नाम और संपर्क संबंधी विवरण जैसी आधारभूत जानकारी रखी जा सकती है। इसके बाद परिवारों से जुड़ी आवश्यक जानकारी के लिए अलग स्थान हो। परिवार प्रमुख का नाम, सदस्यों की संख्या, संपर्क हुआ या नहीं और कोई जरूरी टिप्पणी—इन बातों को संक्षेप में दर्ज किया जा सकता है।

ऐसी डायरी बनाते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इसमें केवल वही जानकारी लिखी जाए जिसकी वास्तव में आवश्यकता हो। किसी परिवार की निजी या संवेदनशील बात को अनावश्यक रूप से दर्ज करना उचित नहीं है। दर्ज जानकारी का उपयोग भी सावधानी और गोपनीयता के साथ होना चाहिए।

डायरी का एक उपयोग यह भी है कि समय बीतने के साथ क्षेत्र में हुए बदलावों को समझा जा सके। कोई नया मतदाता जुड़ा हो, कोई परिवार स्थानांतरित हुआ हो या किसी वरिष्ठ अथवा दिव्यांग व्यक्ति के लिए विशेष सहयोग की जरूरत हो, तो ऐसी जानकारी अलग से चिन्हित की जा सकती है। मूल प्रारूप में भी नए मतदाता, वरिष्ठ नागरिक, दिव्यांग मतदाता, स्थानांतरित परिवार और विशेष संपर्क योग्य परिवार के लिए अलग स्थान रखा गया है।

डायरी को हर दिन भरना आवश्यक नहीं। जरूरत के अनुसार उसमें बदलाव करते रहना पर्याप्त है। समय-समय पर पुराने विवरण को देखकर यह भी समझा जा सकता है कि कौन-सी जानकारी बदल चुकी है और कहाँ ध्यान देने की जरूरत है। इस तरह एक साधारण डायरी पन्ना प्रमुख के काम को याददाश्त पर निर्भर रहने के बजाय व्यवस्थित रखने का साधन बन जाती है।

पन्ना प्रमुख डायरी — नमूना

बूथ संख्या : ______________________
पन्ना क्रमांक : ____________________
ग्राम / वार्ड : _____________________
पन्ना समिति के सदस्य : ____________
____
____
____
मोबाइल : _______________________

परिवार विवरण

क्रमांक	परिवार प्रमुख	सदस्यों की संख्या	संपर्क हुआ	विशेष टिप्पणी
1				☐
2				☐
3				☐
4				☐

विशेष जानकारी

□ नए मतदाता : _________

□ वरिष्ठ नागरिक : _________

□ दिव्यांग मतदाता : _________

□ स्थानांतरित परिवार : _________

□ विशेष संपर्क योग्य परिवार : _________

लेखक की सोच

"डायरी में दर्ज छोटी-छोटी जानकारियाँ पन्ना प्रमुख के बड़े दायित्व को व्यवस्थित करने में मदद करती हैं।"

अध्याय – 2

पन्ना प्रमुख का इतिहास

बूथ से परिवार तक संगठन की यात्रा

संगठन सूत्र

“हमारा संगठन ऊपर से नहीं, नीचे से मजबूत होता है।”
— अटल बिहारी वाजपेयी

किसी संगठन की वर्तमान कार्यपद्धति को समझने के लिए यह जानना जरूरी होता है कि वह बनी कैसे। पन्ना प्रमुख की व्यवस्था भी अचानक सामने नहीं आई। इसके पीछे बूथ स्तर पर काम करते हुए सामने आई कई व्यावहारिक जरूरतें थीं। जैसे-जैसे चुनाव का स्वरूप बदला, मतदाताओं की संख्या बढ़ी और समाज की अपेक्षाएँ अलग रूप लेने लगीं, वैसे-वैसे संगठन के सामने भी अपने काम को अधिक व्यवस्थित करने की आवश्यकता महसूस हुई।

शुरुआत में बूथ एक महत्वपूर्ण आधार था। बूथ समिति और बूथ अध्यक्ष के माध्यम से स्थानीय स्तर पर कार्यकर्ताओं को जोड़ा गया। चुनावी तैयारी, मतदाता सूची और क्षेत्र से जुड़े कामों को संभालने के लिए यह व्यवस्था उपयोगी रही। लेकिन एक बूथ केवल एक मतदान केंद्र नहीं था। उसके भीतर अनेक परिवार रहते थे और प्रत्येक परिवार की अपनी परिस्थितियाँ थीं।

यहीं से एक व्यावहारिक कठिनाई सामने आई। पूरे बूथ की जिम्मेदारी एक बूथ समिति संभाल सकती थी, लेकिन हर परिवार के साथ व्यक्तिगत परिचय बनाए रखना आसान नहीं था। संगठन जितना समाज के करीब जाना चाहता था, उतना ही काम को छोटे और स्पष्ट हिस्सों में बाँटने की जरूरत महसूस हुई।

इस जरूरत ने संगठनात्मक सोच को एक नए स्तर पर पहुँचाया। मतदाता सूची केवल मतदान से जुड़ा दस्तावेज नहीं रही; उसके प्रत्येक पन्ने को एक सीमित क्षेत्र और कुछ परिवारों से जोड़कर देखा जाने लगा। यदि उस हिस्से

की जिम्मेदारी किसी एक कार्यकर्ता को दी जाए, तो उसके लिए संबंधित परिवारों को जानना और अपने दायित्व को समझना अधिक सहज हो सकता था।

यहीं से पन्ना प्रमुख की अवधारणा ने आकार लेना शुरू किया। एक पन्ना, उससे जुड़े परिवार और उनकी जिम्मेदारी संभालने वाला कार्यकर्ता—यह छोटा ढाँचा बूथ की व्यापक जिम्मेदारी को अधिक स्पष्ट हिस्सों में बाँटने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम था।

आगे चलकर इसी सोच से पन्ना प्रमुख के साथ पन्ना समिति जैसी सहयोगी व्यवस्थाओं के विकास का आधार तैयार हुआ। इस पूरी यात्रा को समझना इसलिए जरूरी है, क्योंकि पन्ना प्रमुख किसी एक चुनाव की बनाई हुई व्यवस्था नहीं, बल्कि जमीनी संगठन को अधिक सूक्ष्म बनाने की जरूरत से विकसित हुई कार्यपद्धति है।

लेखक की सोच

संगठन की वास्तविक शक्ति उसकी पहुँच की व्यापकता में नहीं, बल्कि प्रत्येक परिवार से बने जीवंत संबंध की गहराई में होती है।

बूथ समिति

संगठन की पहली संगठित शक्ति

संगठन सूत्र

"संगठन की वास्तविक शक्ति उसके जमीनी कार्यकर्ताओं में होती है।"
— पंडित दीनदयाल उपाध्याय

किसी राजनीतिक संगठन की मजबूती केवल उसके शीर्ष नेतृत्व से तय नहीं होता । उसकी असली क्षमता तब दिखाई देती है, जब संगठन की जिम्मेदारी जमीन पर कार्य करने वाले कार्यकर्ताओं तक पहुँचती है। इसी दृष्टि से बूथ समिति की भूमिका को समझना जरूरी है। बूथ वह स्तर है जहाँ संगठन की योजना स्थानीय परिस्थितियों से जुड़ती है और कार्यकर्ताओं का कार्य एक निश्चित क्षेत्र में आकार लेता है।

भारतीय जनता पार्टी की संगठनात्मक कार्यपद्धति में बूथ को इसी कारण विशेष स्थान मिला। बूथ समिति और बूथ अध्यक्ष के माध्यम से स्थानीय कार्यकर्ताओं के बीच समन्वय बनाने, मतदाता सूची से जुड़ी जानकारी रखने और चुनावी तैयारियों को व्यवस्थित करने का काम आगे बढ़ा। यह व्यवस्था केवल चुनाव के दिन की तैयारी के लिए नहीं थी। इसके माध्यम से एक निश्चित क्षेत्र में संगठन की गतिविधियों को जिम्मेदारी के साथ संचालित करने का आधार तैयार हुआ था।

बूथ समिति का महत्व उसकी संख्या में नहीं, बल्कि उसके काम के बँटवारे में था। अलग-अलग कार्यकर्ताओं को अलग जिम्मेदारियाँ मिलने से किसी एक व्यक्ति पर पूरा भार नहीं रहता है। क्षेत्र की जानकारी रखने वाला कार्यकर्ता स्थानीय स्थिति को बेहतर समझ सकता है और आवश्यकता के अनुसार दूसरे साथियों के साथ समन्वय कर सकता है।

लेकिन समय के साथ बूथ का दायरा भी चुनौतीपूर्ण होने लगा। एक बूथ के भीतर परिवारों की संख्या बढ़ती गई। समिति पूरे क्षेत्र की देखरेख कर सकती

थी, लेकिन प्रत्येक परिवार तक व्यक्तिगत रूप से पहुँचना उसके लिए सहज नहीं था। यही वह स्थिति थी जहाँ संगठन को अपने कार्य को और छोटे तथा स्पष्ट हिस्सों में बाँटने की जरूरत ज्यादा लगने लगी ।

इस बदलाव को पन्ना प्रमुख की यात्रा में एक महत्वपूर्ण पड़ाव के रूप में देखा जा सकता है। बूथ समिति ने संगठन को स्थानीय आधार दिया और आगे चलकर इसी आधार पर जिम्मेदारियों को अधिक सूक्ष्म बनाने की आवश्यकता सामने आई। इस तरह बूथ समिति केवल एक चुनावी ढाँचा नहीं रही; उसने उस संगठनात्मक सोच के लिए जमीन तैयार की, जिसमें बड़े क्षेत्र की जिम्मेदारी को छोटे हिस्सों में बाँटकर अधिक कार्यकर्ताओं तक पहुँचाया जा सके।

लेखक की सोच

बूथ संगठन की शुरुआत है, लेकिन उसकी वास्तविक ताकत तब बढ़ती है जब जिम्मेदारी अधिक से अधिक कार्यकर्ताओं तक पहुँचती है।

बदलती चुनौती

जब बूथ से आगे बढ़ने की आवश्यकता महसूस हुई

संगठन सूत्र

"संगठन को समय की आवश्यकता के अनुसार स्वयं को निरंतर बदलते और सशक्त बनाते रहना चाहिए।"
— नितिन गडकरी (केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री)

संगठन के सामने चुनौतियाँ हमेशा एक जैसी नहीं रहतीं। समाज बदलता है, चुनाव का क्षेत्र बदलता है और मतदाताओं की संख्या तथा उनकी अपेक्षाएँ भी समय के साथ बदलती रहती हैं। किसी एक समय में जो व्यवस्था पर्याप्त दिखाई देती है, कुछ वर्षों बाद उसी में नई जरूरतें दिखाई देने लगती हैं। संगठन के विस्तार के साथ यही स्थिति बूथ स्तर पर भी सामने आई।

बूथ समिति ने स्थानीय संगठन को एक आधार दिया था। कार्यकर्ताओं के बीच जिम्मेदारियाँ बाँटी गई और एक निश्चित क्षेत्र में चुनावी काम को व्यवस्थित करने की व्यवस्था बनी । लेकिन बूथ की सीमा के भीतर रहने वाले लोगों की संख्या स्थिर नहीं थी। नए परिवार जुड़ते रहे, मतदाताओं की संख्या बढ़ती रही और क्षेत्र की सामाजिक संरचना भी बदलती रही।

इस बदलाव का असर संगठन के रोजमर्रा के काम पर पड़ा। एक ओर बूथ की पूरी जिम्मेदारी देखना जरूरी था, दूसरी ओर उसी क्षेत्र के प्रत्येक परिवार के बारे में जानकारी रखना और उनसे व्यक्तिगत स्तर पर जुड़ना कठिन होता जा रहा था। समिति पूरे बूथ को देख सकती थी, लेकिन हर घर की अलग परिस्थिति को एक समान तरीके से समझ पाना आसान नहीं था।

यहीं से संगठन के सामने एक व्यावहारिक प्रश्न खड़ा हुआ। क्या बड़ी जिम्मेदारी को और छोटे हिस्सों में बाँटा जा सकता है? क्या प्रत्येक कार्यकर्ता को ऐसा निश्चित क्षेत्र दिया जा सकता है, जिसकी जिम्मेदारी वह स्वयं समझे और जिसके बारे में उसके पास पर्याप्त जानकारी हो?

यह प्रश्न केवल काम बाँटने का नहीं था। इसके पीछे संगठन को अधिक व्यवस्थित बनाने की जरूरत थी। बड़े क्षेत्र को छोटे हिस्सों में समझने से कार्यकर्ता अपने दायित्व को स्पष्ट रूप से देख सकता था। इससे यह भी तय करना आसान होता कि किस क्षेत्र की जिम्मेदारी किसके पास है और किस काम के लिए किस कार्यकर्ता से संपर्क किया जाए।

यही बदलती चुनौती आगे की संगठनात्मक सोच का आधार बनी। बूथ को मजबूत करने के बाद अगली जरूरत थी—उसके भीतर की जिम्मेदारियों को और स्पष्ट करना। इसी आवश्यकता ने आगे पन्ना प्रमुख की भूमिका के लिए जमीन तैयार की।

लेखक की सोच

जब जिम्मेदारी छोटी और स्पष्ट होती है, तब कार्यकर्ता की पहुँच बड़ी और प्रभावी बन जाती है।

एक पन्ना, एक जिम्मेदारी

सूक्ष्म संगठन की ओर अगला कदम

संगठन सूत्र

*"पन्ना समिति का मंत्र है—'एक पन्ना, पाँच कार्यकर्ता, हर घर से सीधा नाता'। जब कार्यकर्ता हर पन्ने की ज़िम्मेदारी निष्ठा से संभालता है, तो बूथ अपने आप अजेय बन जाता है।" — **तरुण चुग (राष्ट्रीय महासचिव) भाजपा***

जब बूथ का क्षेत्र बड़ा हो और जिम्मेदारियां अनेक हो,तब संगठन को अधिक सूक्ष्म ढंग से व्यस्थिति करने की आवश्यकता होती है। इसी सोच ने मतदाता सूची को केवल एक चुनावी कागज न मानकर जिम्मेदारी के छोटे-छोटे कार्यक्षेत्र के रूप में देखने की दिशा दी।

मतदाता सूची इस कार्य के लिए एक स्वाभाविक माध्यम बनी। सूची में नाम पहले से क्रमबद्ध होते हैं और उनका विभाजन पन्नों में होता है। इससे बड़े बूथ को एक साथ संभालने के बजाय उसे छोटे हिस्सों में समझने का रास्ता खुला।

एक कार्यकर्ता को एक पन्ने की जिम्मेदारी देने का अर्थ केवल सूची में दर्ज नामों की निगरानी करना नहीं था। इसका उद्देश्य यह स्पष्ट करना था कि उसके काम का दायरा कहाँ से शुरू होता है और कहाँ समाप्त होता है। जिम्मेदारी स्पष्ट होने पर कार्यकर्ता अपने हिस्से के लोगों और क्षेत्र से जुड़ी आवश्यक जानकारी को आसानी से समझ सकता है।

इस व्यवस्था में संख्या बढ़ाना मुख्य उद्देश्य नहीं था। असली बात जिम्मेदारी को निश्चित करना था। जब एक कार्यकर्ता के सामने उसका तय कार्यक्षेत्र होता है, तो वह अपनी भूमिका को लेकर भ्रमित नहीं रहता। बूथ की बड़ी जिम्मेदारी उसके लिए छोटे और समझने योग्य हिस्से में बदल जाता है।

यहीं संगठनात्मक कार्यशैली में एक महत्वपूर्ण बदलाव दिखाई देता है। पहले ध्यान पूरे बूथ को संभालने पर था; अब उसी बूथ के भीतर जिम्मेदारियों की

बारीकी से पहचान का मौका मिल जाता है। यह बदलाव आगे चलकर पन्ना प्रमुख की भूमिका को लोगो के सामने लाया।

इस प्रकार एक पन्ना केवल मतदाता सूची का हिस्सा नहीं रहा। वह एक निश्चित जिम्मेदारी की इकाई बनने की दिशा में आगे बढ़ा।

लेखक की सोच

संगठन तब अधिक प्रभावी होता है, जब हर कार्यकर्ता को यह स्पष्ट हो कि उसकी जिम्मेदारी कहाँ से शुरू होती है और कहाँ समाप्त।

पन्ना प्रमुख की शुरुआत

जब जिम्मेदारी को मिला एक स्पष्ट चेहरा

संगठन सूत्र

"माइक्रो-मैनेजमेंट ही संगठन की असली ताकत है। जब एक पन्ना प्रमुख अपने पन्ने के परिवारों का सटीक डेटा, मूड और रुझान जानता है, तो कोई भी भ्रामक प्रचार या विरोधी लहर हमारे संगठन को डिगा नहीं सकती।"

— सुनील बंसल (राष्ट्रीय महासचिव) भाजपा

मतदाता सूची के पन्ने को केवल चुनावी कागज मानने के बजाय उसके पीछे जुड़े परिवारों के छोटे समूह के रूप में देखने की सोच ने संगठन के काम करने के तरीके में एक नया अध्याय जोड़ा। अब बूथ की जिम्मेदारी को केवल सामूहिक रूप से देखने के बजाय उसके भीतर काम करने वाले कार्यकर्ता को भी अपना हिस्सा मिला।

एक कार्यकर्ता को जब किसी एक पन्ने की जिम्मेदारी दी गई, तो उसके काम का क्षेत्र अपने आप सीमित हो गया। उसे पूरे बूथ की चिंता एक साथ नहीं करनी थी। उसके सामने कुछ परिवार थे, उनके नाम थे और उनके बारे में जरूरी जानकारी रखने की जिम्मेदारी थी। इससे काम बोझ की तरह नहीं, अपने हिस्से के दायित्व की तरह दिखाई देने लगा।

यहीं से "पन्ना प्रमुख" शब्द को एक अलग अर्थ मिला। यह केवल संगठन में किसी कार्यकर्ता को पुकारने का नाम नहीं रहा। इसके साथ एक काम जुड़ा, एक क्षेत्र जुड़ा और उस क्षेत्र से जुड़े परिवारों की जिम्मेदारी जुड़ गई।

इस बदलाव की खूबी यह थी कि इसमें किसी बड़े ढाँचे की जरूरत नहीं थी। मतदाता सूची पहले से मौजूद थी और उसके पन्ने भी। जरूरत केवल इतनी थी कि उस पन्ने को किसी ऐसे कार्यकर्ता से जोड़ा जाए, जो अपने हिस्से के लोगों को पहचान सके और उनके बारे में जरूरी जानकारी रख सके।

इससे संगठन और मतदाता के बीच एक नई कड़ी बनी। बूथ की सामूहिक जिम्मेदारी अपनी जगह रही, लेकिन उसके भीतर काम करने वाले कार्यकर्ता की भूमिका अधिक व्यक्तिगत हो गई। अब संगठन की पहुँच केवल मतदान केंद्र तक नहीं देखी जा रही थी; उसके बीच के घर और परिवार भी काम की इकाई बनने लगे थे।

पन्ना प्रमुख की शुरुआत इसी बदलाव की देन थी। आगे चलकर यही भूमिका चुनावी संगठन की एक चर्चित कार्यपद्धति बनी।

लेखक की सोच

किसी बड़े संगठन की मजबूती तब दिखाई देती है, जब उसकी सबसे छोटी जिम्मेदारी भी स्पष्ट रूप से किसी सक्षम कार्यकर्ता के हाथ में हो।

पन्ना प्रमुख से राष्ट्रीय पहचान तक

एक स्थानीय व्यवस्था का व्यापक संगठनात्मक विस्तार

संगठन सूत्र

"भाजपा की असली ताकत उसके बूथ स्तर के कार्यकर्ताओं में है।"
— अमित शाह (केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री)

पन्ना प्रमुख की शुरुआत जिस काम के लिए हुई थी, समय के साथ उसका दायरा बढ़ता गया। जो जिम्मेदारी कभी मतदाता सूची के एक पन्ने से जुड़ी दिखाई देती थी, उसने धीरे-धीरे संगठन के जमीनी काम में अपनी जगह बना ली। बूथ पर काम करने वाले कार्यकर्ताओं के लिए यह केवल चुनाव के समय निभाई जाने वाली भूमिका नहीं रही।

इसका असर संगठन के काम करने के तरीके पर भी दिखाई देने लगा। चुनावी तैयारी हो या संगठन का कोई अभियान, बूथ तक पहुँचने के लिए पन्ना प्रमुख का उल्लेख होने लगा। कार्यकर्ता के पास अपने क्षेत्र की जानकारी थी और संगठन के पास जमीनी स्तर तक पहुँचने वाली एक ऐसी कड़ी मिल गई थी जो अलग-अलग परिस्थितियों में भी उपयोगी साबित हो रही थी।

किसी भी संगठन में किसी प्रयोग की पहचान तभी बनती है, जब वह केवल एक जगह तक सीमित न रहे। पन्ना प्रमुख के साथ भी यही हुआ। अलग-अलग प्रदेशों और चुनावी परिस्थितियों में बूथ को मजबूत करने की कोशिशों के बीच इसकी भूमिका को अधिक महत्व मिला। धीरे-धीरे यह नाम संगठन की कार्यशैली में पहचाना जाने लगा।

28 जनवरी 2019 को हिमाचल प्रदेश के ऊना में आयोजित भाजपा के पन्ना प्रमुख सम्मेलन ने इस भूमिका को सार्वजनिक और व्यापक पहचान देने का काम किया। वहाँ पन्ना प्रमुखों को संबोधित करते हुए अमित शाह ने बूथ स्तर के कार्यकर्ताओं को संगठन की ताकत बताया। यह अवसर इस बात का संकेत

भी था कि पन्ना प्रमुख अब किसी एक क्षेत्र की सीमित दायरे में नहीं रह गया था।

इसके बाद पन्ना प्रमुख भाजपा की बूथ-स्तरीय कार्यशैली की पहचान से जुड़ता गया। उसकी चर्चा केवल मतदाता सूची के संदर्भ में नहीं, बल्कि उस कार्यकर्ता के रूप में होने लगी जो संगठन की जमीनी मौजूदगी को जीवंत रखता है।

फ़ोटो कैप्शन: अमित शाह 28 जनवरी 2019 को ऊना (हिमाचल प्रदेश) में आयोजित भाजपा के 'पन्ना प्रमुख सम्मेलन' को संबोधित करते हुए।

लेखक की सोच

किसी संगठनात्मक प्रयोग की असली परीक्षा उसके विस्तार में नहीं, बल्कि अलग-अलग परिस्थितियों में उसकी कार्यक्षमता में होती है।

गुजरात में संगठनात्मक प्रयोग

जहाँ पन्ना प्रमुख व्यवस्था ने नया विस्तार देखा

संगठन सूत्र

"दायित्व छोटा हो या बड़ा, निष्ठा ही एक कार्यकर्ता की पहचान है।"
— नितिन नवीन (राष्ट्रीय अध्यक्ष) भाजपा

किसी संगठन में एक विचार की यात्रा उसके जन्म के साथ समाप्त नहीं होती। जब कोई कार्यपद्धति जमीन पर काम करने लगती है, तो उसके सामने नई परिस्थितियाँ आती हैं। कहीं उसका कोई हिस्सा अधिक उपयोगी दिखाई देता है, कहीं उसमें बदलाव की जरूरत महसूस होती है। इसी अनुभव से आगे की राह निकलती है। पन्ना प्रमुख की व्यवस्था के साथ भी ऐसा ही हुआ।

गुजरात में बूथ स्तर पर संगठन को मजबूत बनाने के लिए अलग-अलग स्तरों पर काम होता रहा। यहाँ की राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों ने कार्यकर्ताओं को केवल चुनावी तैयारियों तक सीमित रहने के बजाय लंबे समय तक चलने वाले संगठनात्मक काम की ओर बढ़ाया। क्षेत्र की विविधता, शहरों का तेजी से फैलाव और लगातार बदलती स्थानीय परिस्थितियाँ अपने ढंग से काम करने की माँग करती थीं।

इस दौरान पन्ना प्रमुख की भूमिका को केवल मतदाता सूची से जुड़ी जिम्मेदारी मानकर नहीं देखा गया। उसके काम को बूथ के व्यापक संगठन से जोड़कर समझा गया। कार्यकर्ता अपने क्षेत्र में क्या देख रहा है, किस तरह की कठिनाई का सामना कर रहा और काम करते समय किन- किन बातों का अनुभव मिल रहा है—इन अनुभवों ने आगे की सोच को प्रभावित किया।

गुजरात में हुए इन प्रयोगों की खास बात यह थी कि किसी व्यवस्था को केवल इसलिए अंतिम नहीं मान लिया गया कि वह पहले से चल रही है। काम के दौरान जहाँ कमी दिखाई दी, वहाँ उसके दूसरे तरीके तलाशे गए। एक कार्यकर्ता की भूमिका को देखते हुए यह सवाल भी सामने आया कि क्या उसके

साथ कुछ और कार्यकर्ताओं का सहयोग हो, तो काम अधिक भरोसे के साथ आगे बढ़ सकता है!

यह सवाल किसी नई संरचना की घोषणा से पहले की स्वाभाविक जिज्ञासा थी। यदि एक पन्ने से जुड़ी जिम्मेदारी किसी कार्यकर्ता के पास है, तो उसकी अनुपस्थिति, व्यस्तता या किसी दूसरी परिस्थिति में संगठन का कार्य रुकना नहीं चाहिए। साथ ही यह भी जरूरी था कि सहयोग करने वाले कार्यकर्ता अपनी भूमिका को समझें और जरूरत पड़ने पर आगे आ सकें।

यहीं गुजरात के अनुभव ने पन्ना प्रमुख की व्यवस्था को अगले पड़ाव की ओर देखने का अवसर दिया। एक कार्यकर्ता से जुड़े कार्य को सहयोग की भावना से कैसे मजबूत किया जाए—यह विचार आगे चलकर पन्ना समिति की दिशा में पहला कदम रहा।

लेखक की सोच

संगठन की जीवंतता इस बात में है कि वह अपनी सफल व्यवस्था को अंतिम मानकर रुकता नहीं, बल्कि अनुभव से सीखकर उसे और बेहतर बनाने का प्रयास करता रहता है।

पन्ना प्रमुख के साथ टीम

सहयोग से पन्ना समिति की शुरुआत

संगठन सूत्र

"एक अच्छा संगठन वही है, जिसमें प्रत्येक कार्यकर्ता को अपनी भूमिका और जिम्मेदारी का बोध हो।" ***— लालकृष्ण आडवाणी***

पन्ना प्रमुख की व्यवस्था ने एक निश्चित क्षेत्र की जिम्मेदारी एक कार्यकर्ता तक पहुँचाई। लेकिन संगठन के अनुभव ने एक व्यावहारिक आवश्यकता सामने रखी—क्या उस जिम्मेदारी को सहयोगी कार्यकर्ताओं की टीम से और मजबूत बनाया जा सकता है?

किसी पन्ना प्रमुख की अनुपस्थिति, व्यस्तता या किसी अन्य कारण से कार्य प्रभावित न हो और निर्धारित कार्यक्षेत्र लगातार सक्रिय रहे, इसके लिए सहयोगी टीम की आवश्यकता महसूस हुई।

इसी विचार ने पन्ना समिति की दिशा में रास्ता खोला। इसका उद्देश्य पन्ना प्रमुख का स्थान लेना नहीं, बल्कि उसके साथ कार्य करने वाली ऐसी टीम तैयार करना था, जो जिम्मेदारी को निरंतरता और सामूहिक शक्ति दे।

इस व्यवस्था में एक पन्ना केवल एक कार्यकर्ता का दायित्व न रहकर एक छोटी टीम का साझा कार्यक्षेत्र बन गया। यही बदलाव पन्ना समिति की मूल भावना बना।

लेखक की सोच

एक जिम्मेदार कार्यकर्ता व्यवस्था को शुरू कर सकता है, लेकिन संगठित टीम उसे निरंतर आगे बढ़ाती है।

नवसारी : पन्ना समिति का महाप्रयोग

एक लोकसभा क्षेत्र से निकली संगठनात्मक कार्यशैली की बड़ी कहानी

संगठन सूत्र

"मतदाता सूची का हर एक पन्ना हमारी जीत की असली नींव है, अगर पन्ना मजबूत है, तो बूथ और चुनाव अपने आप मजबूत हो जाता है।"
— ***नरेंद्र मोदी (प्रधानमंत्री)***

किसी संगठनात्मक प्रयोग की पहचान केवल इस बात से नहीं होती कि वह कहाँ से शुरू हुआ। उसकी असली कहानी तब सामने आती है, जब वह जमीन पर काम करते हुए अपनी उपयोगिता साबित करता है। गुजरात का नवसारी लोकसभा क्षेत्र पन्ना प्रमुख के साथ पन्ना समिति खड़ी करने के शुरुआती और महत्वपूर्ण प्रयोग के लिए जाना जाता है।

फोटो कैप्शन : नवसारी में कार्यकर्ताओं के साथ सी. आर. पाटिल—बूथ से पन्ने तक संगठन की कार्यशक्ति का दृश्य।

नवसारी के सांसद और केंद्रीय जलशक्ति मंत्री सी. आर. पाटिल ने अपने संसदीय क्षेत्र में बूथ संगठन को मतदाता सूची के पन्नों तक ले जाने और पन्ना प्रमुख के साथ पन्ना समिति की टीम तैयार करने पर विशेष जोर दिया। एक कार्यकर्ता की जिम्मेदारी को टीम की ताकत में बदलने का यह प्रयोग आगे चलकर संगठन के काम की एक अलग पहचान बना।

इस प्रयोग की खासियत केवल इसकी संरचना नहीं, बल्कि इसका व्यापक विस्तार रहा। गुजरात पन्ना समिति के प्रदेश प्रभारी यज्ञेश दवे से प्राप्त आँकड़े के अनुसार नवसारी से संबंधित संगठनात्मक संख्या 2,53,162 है। यह आँकड़ा बताता है कि छोटी-छोटी जिम्मेदारियों को बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं तक पहुँचाने का प्रयास कितने बड़े स्तर तक गया।

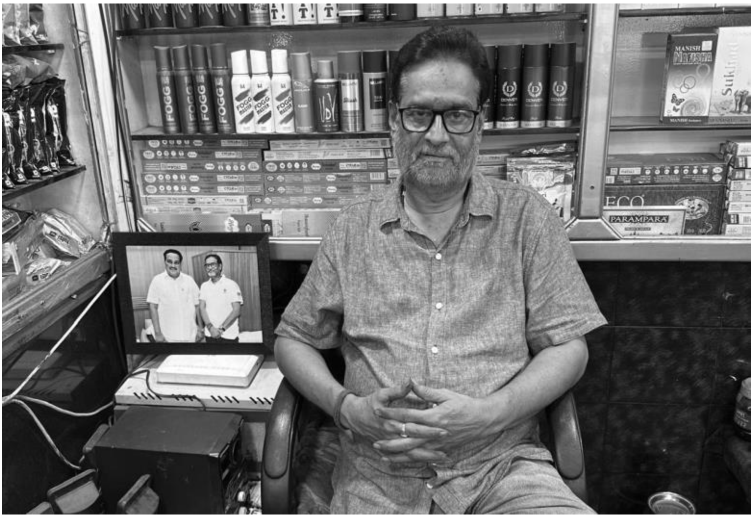

फोटो कैप्शन : "लोकप्रियता का यह अद्भुत मंजर! सी आर पाटिल जी के संसदीय/विस्तार क्षेत्र में लोगों के दिलों का जुड़ाव ऐसा है कि 4 से 5 लाख से अधिक घरों और दुकानों में उनकी फोटो फ्रेम गर्व के साथ सजी दिखाई देती है।"

नवसारी की एक और अलग तस्वीर छोटे-बड़े अनेक कार्यकर्ताओं के साथ केंद्रीय जलशक्ति मंत्री सी. आर. पाटिल के व्यक्तिगत फोटो में दिखाई देती है। यह केवल राजनीतिक संबंध का दृश्य नहीं है। इसके पीछे नेतृत्व और

कार्यकर्ता के बीच लगातार बने उनके निरन्तर संगठनात्मक संपर्क और व्यक्तिगत जुड़ाव की झलक दिखाई देती है।

इस मॉडल का असर चुनावी परिणामों में भी दिखाई देता है। नवसारी लोकसभा क्षेत्र में सी. आर. पाटिल की जीत का अंतर 2009 में 1,32,643, 2014 में 5,58,116, 2019 में 6,89,668 और 2024 में बढ़कर 7,73,551 रहा। इन आँकड़ों ने नवसारी के संगठनात्मक प्रयोग को गुजरात से बाहर भी चर्चा में ला दिया।

नवसारी लोकसभा : जीत का बढ़ता अंतर

चुनाव वर्ष	सी. आर. पाटिल की जीत का अंतर
2009	1,32,643
2014	5,58,116
2019	6,89,668
2024	7,73,551

नवसारी का अनुभव आगे बढ़ा तो पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति की कार्यशैली को दूसरे चुनावी क्षेत्रों में भी स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार अपनाने के प्रयास हुए। महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल और कर्नाटक जैसे राज्यों में भी बूथ स्तर पर सूक्ष्म संगठन और स्थानीय कार्यकर्ताओं के समन्वय पर जोर दिखाई दिया।

फोटो कैप्शन : "Gen Z में भी छाया सी. आर. पाटिल जी का क्रेज!"

नवसारी की सबसे बड़ी बात यही थी कि संगठनात्मक ढाँचे को केवल चुनाव के समय सक्रिय करने के बजाय उसे कार्यकर्ताओं से जुड़ी स्थायी व्यवस्था बनाने की कोशिश की गई। पन्ना प्रमुख को जिम्मेदारी मिली, पन्ना समिति ने उस जिम्मेदारी को टीम में बदला और बूथ संगठन ने उसे व्यापक चुनावी समन्वय से जोड़ा।

फोटो कैप्शन : रोड शो के दौरान फूलों की वर्षा के बीच समर्थकों और क्षेत्रवासियों का विनम्र अभिवादन स्वीकार करते केंद्रीय जलशक्ति मंत्री सी. आर. पाटिल

लेखक की सोच

किसी प्रयोग की सफलता तभी सार्थक होती है, जब उसका अनुभव आगे की कार्यपद्धति को दिशा दे।

नवसारी से राष्ट्रीय पहचान तक

पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति की कार्यशक्ति का विस्तार

संगठन सूत्र

"संगठन की शक्ति उसके कार्यकर्ताओं की मेहनत और समर्पण में है।"
— नरेंद्र मोदी (प्रधानमंत्री)

भारतीय राजनीति में बूथ प्रबंधन को मजबूत करने की दिशा में पन्ना प्रमुख की अवधारणा ने एक बड़ा बदलाव किया। भाजपा में तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष और वर्तमान केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के नेतृत्व में पन्ना प्रमुख जैसी व्यवस्था को चुनावी संगठन के साथ जोड़कर बूथ को मजबूत करने का प्रयोग देशव्यापी तौर पर आगे बढ़ाया गया। जिसका परिणाम भी मिलने लगा। जिसमे बूथ प्रबंधन की मजबूत कड़ी पन्ना प्रमुख को एक निश्चित हिस्से की जिम्मेदारी देकर मतदाता सूची को संगठन के काम का आधार बनाया गया।

गुजरात में इस सोच को और व्यापक करने का काम तत्कालीन प्रदेश अध्यक्ष व वर्तमान केंद्रीय जलशक्ति मंत्री सी. आर. पाटिल ने किया। अपने संसदीय क्षेत्र नवसारी में उन्होंने पन्ना प्रमुख की जिम्मेदारी को केवल एक व्यक्ति तक सीमित रखने के बजाय उसके साथ एक छोटी टीम खड़ी करने का प्रयोग किया। एक पन्ने पर दर्ज मतदाताओं और परिवारों से संपर्क की जिम्मेदारी पन्ना प्रमुख के साथ पन्ना समिति के सदस्यों तक बाँटी गई। उपलब्ध विवरणों के अनुसार, एक पन्ने पर लगभग 30 मतदाताओं के लिए 5-6 लोगों की टीम का प्रयोग किया गया।

यहीं नवसारी प्रयोग की असली विशेषता सामने आती है। पन्ना प्रमुख अकेला संपर्ककर्ता नहीं रहा। उसके साथ काम करने वाले कार्यकर्ताओं की टीम तैयार हुई। इससे एक व्यक्ति की जिम्मेदारी सामूहिक जिम्मेदारी में बदली और परिवारों तक पहुँच का दायरा बढ़ा।

नवसारी में इस प्रयोग का व्यापक विस्तार हुआ। गुजरात के पन्ना समिति के प्रदेश प्रभारी यज्ञेश दवे से प्राप्त आँकड़ों के अनुसार नवसारी से संबंधित संगठनात्मक संख्या 2,53,162 बताई गई है। यह संख्या केवल एक आँकड़ा नहीं, बल्कि छोटी-छोटी जिम्मेदारियों को बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं तक पहुँचाने के प्रयास का संकेत है।

यग्नेश दवे ने बताया की पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति को मजबूती देने के लिए तत्कालीन प्रदेश अध्यक्ष सी आर पाटिल ने जिला स्तर पर पूरे गुजरात का प्रवास किया था। उन्होनें 'एक रात कार्यकर्ताओ के साथ' कार्यक्रम भी किया ,जिसके परिणामस्वरूप 70 लाख से अधिक पन्ना समिति के सदस्य बनाये गए थे।

इस प्रयोग की परीक्षा गुजरात के उन आठ विधानसभा क्षेत्रों के उपचुनावों में भी हुई, जहाँ सी आर पाटिल के प्रदेश अध्यक्ष बनने के बाद भाजपा ने सभी आठ सीटें जीतीं। पाटिल ने स्वयं इस सफलता का श्रेय कार्यकर्ताओं और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकास कार्यों को दिया। लेकिन सार्वजनिक चर्चाओं और पार्टी के भीतर हुई समीक्षा में पन्ना समिति आधारित सूक्ष्म संगठन को भी इस सफलता की एक वजह के रूप में सामने रखा गया।

इसके बाद 2022 के गुजरात विधानसभा चुनाव में पेज समिति के प्रयोग को पूरे प्रदेश में बड़े पैमाने पर लागू किया गया। भाजपा ने 182 में से 156 सीटें जीतकर गुजरात में अपना अब तक का सबसे बड़ा विधानसभा प्रदर्शन दर्ज किया। चुनाव के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुजरात संगठन, कार्यकर्ताओं और विशेष रूप से सी. आर. पाटिल की भूमिका की सराहना की।

यहाँ एक बात ध्यान देने योग्य है कि किसी चुनावी जीत को केवल एक व्यक्ति, एक रणनीति या एक व्यवस्था के खाते में रखना सही नहीं होगा। चुनाव का परिणाम अनेक कारणों से बनता है। फिर भी नवसारी से शुरू हुआ पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति का प्रयोग यह दिखाता है कि बूथ प्रबंधन को और सूक्ष्म बनाकर कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारी बढ़ाई जा सकती है।

नवसारी का अनुभव गुजरात की सीमा तक नहीं रुका। इस कार्यशैली की चर्चा महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल और कर्नाटक, पंजाब ,हिमाचल प्रदेश, दिल्ली तक पहुँची और अलग-अलग परिस्थितियों में इसे अपनाने के प्रयास किया गया।

यही वह बिंदु है जहाँ नवसारी की कहानी केवल एक लोकसभा क्षेत्र की कहानी नहीं रह जाती। पन्ना प्रमुख से पन्ना समिति और पन्ना समिति से व्यापक बूथ संगठन तक पहुँची यह यात्रा बताती है कि चुनावी संगठन में छोटी जिम्मेदारी को टीम में बदलने का विचार किस तरह बड़े प्रयोग का रूप ले सकता है।

फोटो कैप्शन : नेतृत्व की सहजता, जनसंपर्क की आत्मीयता—केंद्रीय जलशक्ति मंत्री श्री सी. आर. पाटिल अपने विस्तार के विधायकों और आम जनता के साथ समान आत्मीयता से संवाद करते हुए। जनता की बात समझने के लिए स्वयं उनके बीच पहुँचना जमीनी संगठन और नेतृत्व के सीधे जुड़ाव की तस्वीर प्रस्तुत करता है।

नवसारी मॉडल की तीन कड़ियाँ

पन्ना प्रमुख → निश्चित जिम्मेदारी

पन्ना समिति → सामूहिक कार्यशक्ति

बूथ संगठन → व्यापक चुनावी समन्वय

लेखक की सोच

बड़े राजनीतिक प्रयोग अचानक नहीं बनते।

वे छोटे स्तर पर किए गए उन प्रयासों से जन्म लेते हैं, जिन्हें कार्यकर्ता जमीन पर अपने श्रम से सफल बनाते हैं।

नवसारी का प्रयोग इसी यात्रा की एक मिसाल है।

संगठन का महा-मॉडल : लिम्बायत

माइक्रो-मैनेजमेंट की नई मिसाल

संगठन सूत्र

*"पन्ना प्रमुख केवल नाम का पद नहीं है, वह उस पन्ने पर दर्ज हर वोटर के सुख-दुख का साथी है। अगर पन्ना समिति सक्रिय है, तो जीत अपने आप सुनिश्चित हो जाती है।" **— सी. आर. पाटिल (केंद्रीय जलशक्ति मन्त्री, भारत सरकार)***

लिम्बायत विधानसभा क्षेत्र अपनी सामाजिक विविधता के साथ बूथ और पन्ना स्तर पर मजबूत संगठन के लिए भी जाना जाता है। यहां 39,863 पन्ना समितियों का गठन हुआ। इतनी बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं को जिम्मेदारी से जोड़ना अपने आप में एक बड़ा प्रयोग है। इस पूरे प्रयास में विधायक संगीता पाटिल की भूमिका भी उल्लेखनीय रही है। उन्होंने संगठन को केवल चुनावी तैयारी तक सीमित रखने के बजाय कार्यकर्ताओं के साथ लगातार संपर्क और क्षेत्र के लोगों से जुड़े रहने पर जोर दिया।

सूरत की 163, लिम्बायत विधानसभा में मराठी, मुस्लिम, उत्तर भारतीय, गुजराती, तेलुगू, राजस्थानी तथा अन्य समाजों की बड़ी आबादी है। इतने विविध समाज के बीच जनप्रतिनिधि के लिए हर वर्ग तक पहुंच बनाए रखना आसान काम नहीं है। संगीता पाटिल की राजनीति की एक खास बात यह रही है कि उन्होंने इस विविधता के बीच कार्यकर्ताओं के जरिए लोगों तक पहुंच बनाने पर भरोसा किया। बूथ और पन्ना स्तर के कार्यकर्ताओं को साथ लेकर चलने से उनका संपर्क केवल कुछ प्रमुख लोगों तक सीमित नहीं रहा।

क्षेत्र में उनकी सक्रियता का दूसरा पक्ष जनसेवा से जुड़ा है। साड़ी वितरण, बाढ़ पीड़ितों की सहायता और वृद्धाश्रम में बुजुर्गों की सेवा जैसे कामों के माध्यम से उन्होंने सामाजिक संपर्क को केवल राजनीतिक कार्यक्रमों तक सीमित नहीं

रखा। ऐसे अवसरों पर लोगों के बीच मौजूद रहना किसी जनप्रतिनिधि की छवि को चुनावी समय से बाहर भी मजबूत करता है।

लिम्बायत में सामाजिक विविधता के साथ आबादी और संपत्ति के बदलते स्वरूप को लेकर भी समय-समय पर चर्चा होती रही है। कुछ इलाकों में मकानों और छोटे भूखंडों के स्वामित्व में बदलाव को लेकर स्थानीय चिंता सामने आई। इसी संदर्भ में अशांतधारा कानून का विषय भी लिम्बायत की राजनीति से जुड़ा।

अशांतधारा कानून सरकार द्वारा घोषित अशांत क्षेत्रों में संपत्ति के हस्तांतरण को नियंत्रित करता है। ऐसे क्षेत्रों में एक समुदाय से दूसरे समुदाय के बीच संपत्ति का हस्तांतरण करने के लिए सक्षम प्राधिकारी की अनुमति की जरूरत होती है। इस कानून की पृष्ठभूमि सामुदायिक तनाव और दंगों के बाद संपत्तियों की दबाव में या कम कीमत पर होने वाली बिक्री से जुड़ी रही है।

इस कानून की शुरुआत गुजरात में हुई। वर्ष 1986 में गुजरात सरकार ने इससे संबंधित पहला कानून बनाया था। प्रारंभ में इसे अहमदाबाद के दंगा प्रभावित क्षेत्रों में लागू किया गया। वर्ष 1991 में नया कानून बनाकर इसकी व्यवस्था को आगे बढ़ाया गया। समय के साथ इसके दायरे और लागू क्षेत्रों में भी बदलाव होते रहे।

लिम्बायत में संपत्ति और आबादी के बदलते स्वरूप को लेकर उठी चिंताओं के बीच विधायक संगीता पाटिल ने सरकार के सामने अशांतधारा लागू करने की मांग रखी। यह विषय स्थानीय राजनीति में चर्चा का कारण भी बना। एक पक्ष ने इसे सामाजिक संतुलन से जुड़ी चिंता के रूप में देखा, जबकि दूसरे पक्ष ने इस व्यवस्था को लेकर सवाल उठाए। लिम्बायत की राजनीति में संगीता पाटिल की सक्रियता को समझने के लिए यह प्रसंग भी महत्वपूर्ण है।

लेकिन उनकी पहचान केवल ऐसे राजनीतिक मुद्दों तक सीमित नहीं है। कार्यकर्ताओं के साथ उनका संबंध, क्षेत्र में लगातार आना-जाना और लोगों की समस्याओं को सुनना उनकी राजनीति का दूसरा पहलू है। पन्ना प्रमुखों और पन्ना समिति के सदस्यों के साथ संपर्क उन्हें क्षेत्र की छोटी-छोटी बातों से जोड़े रखता है। यही संपर्क चुनाव के समय संगठन के काम आता है और सामान्य दिनों में जनप्रतिनिधि को अपने क्षेत्र से जोड़े रखता है।

संगीता पाटिल की लोकप्रियता को इसी निरंतर जुड़ाव के संदर्भ में देखना अधिक उचित होगा। किसी नेता की पहचान केवल मंच पर दिखाई देने वाले कार्यक्रमों से

नहीं बनती। वह तब बनती है, जब कार्यकर्ता उसे अपने बीच पाता है और आम लोग अपनी बात कहने में सहज महसूस करते हैं। लिम्बायत में उनकी कार्यशैली की यही विशेषता उन्हें पन्ना प्रमुखों और कार्यकर्ताओं के बीच अलग पहचान देती है।

लिम्बायत का अनुभव यह भी बताता है कि विविध समाज के बीच संगठन को केवल आंकड़ों से नहीं समझा जा सकता। उसके पीछे लोगों से बने रिश्ते, कार्यकर्ताओं की मेहनत और नेतृत्व की सक्रियता होती है। संगीता पाटिल ने संगठन और जनसंपर्क को साथ लेकर जिस तरह काम किया, वही इस क्षेत्र के मॉडल को समझने की महत्वपूर्ण कड़ी है।

लेखक से हुई विशेष बातचीत में लिम्बायत विधायक संगीता पाटिल ने अपनी चुनावी सफलता का श्रेय पन्ना प्रमुख,पन्ना समिति और केंद्रीय जलशक्ति मंत्री सी आर पाटिल को देती हैं।उनके अनुसार सी आर पाटिल के मार्गदर्शन में पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति की इस व्यस्था ने बूथ प्रबंधन को बहुत मजबूत किया है। उन्होनें कहा की पन्ना समिति और बूथ समिति हमारी सबसे बड़ी ताकत है,जिसके सामने विरोधी दल कभी टिक नही पाया। रहा सवाल मेरा तो मैं अपने क्षेत्र में बिना भेदभाव संगठन के साथ -साथ विकाश कार्य को पहली प्राथमिकता देती हूं। मैं कार्यकर्ताओ के बीच हमेशा पहुँचती हूँ।

फ़ोटो कैप्शन: विधायक संगीता पाटिल की जनसेवा की विविध झलकियां—साड़ी वितरण, बाढ़ पीड़ितों की सहायता और वृद्धाश्रम में बुजुर्गों की सेवा।

लिंबायत की सामाजिक विविधता

विभिन्न राष्ट्रीय मीडिया के चुनावी विश्लेषणों पर आधारित अनुमान

समाज	**अनुमानित मतदाता**
मराठी	लगभग 80,235
मुस्लिम	लगभग 76,758
गुजराती	लगभग 28,290
उत्तर भारतीय	लगभग 20,795
तेलुगू	लगभग 12,220
राजस्थानी एवं अन्य	लगभग 11,282

नोट: ये आँकड़े विभिन्न मीडिया रिपोर्टों के चुनावी विश्लेषण पर आधारित अनुमान हैं, निर्वाचन आयोग के आधिकारिक आँकड़े नहीं।

लेखक की सोच

संगीता पाटिल की कार्यशैली में संगठन और जनसेवा साथ-साथ दिखाई देते हैं।

कार्यशैली ही बनाती है लोकप्रिय

पन्ना प्रमुखों के बीच विशेष पहचान क्यों रखती हैं संगीताबेन पाटिल?

संगठन सूत्र

"पन्ना समिति का काम सिर्फ प्रचार करना नहीं, बल्कि वोटिंग के दिन अपने पन्ने के सभी 100% मतदाताओं को मतदान केंद्र तक पहुँचाना है।"— ***सी. आर. पाटिल (केंद्रीय जलशक्ति मन्त्री)***

किसी जनप्रतिनिधि की पहचान केवल चुनाव के नतीजे से नहीं बनती। चुनाव जीतने के बाद वह लोगों के बीच कितना रहता है, कार्यकर्ताओं के साथ उसका व्यवहार कैसा है और जरूरत की घड़ी में वह कितनी जल्दी लोगों तक पहुँचता है—इन बातों से धीरे-धीरे उसकी पहचान बनती है। लिम्बायत की विधायक संगीता पाटिल की लोकप्रियता को समझने के लिए उनकी इसी रोजमर्रा की सक्रियता को देखना होगा।

उनकी कार्यशैली में कार्यकर्ताओं के साथ अपनापन दिखाई देता है। पन्ना प्रमुखों और दूसरे कार्यकर्ताओं से उनका संपर्क केवल चुनाव तक नहीं रहता। क्षेत्र में प्रवास के दौरान वे कार्यकर्ताओं को साथ रखती हैं और उनसे सीधे क्षेत्र की बातें जानती हैं। इससे कार्यकर्ता अपने आपको केवल चुनावी जिम्मेदारी निभाने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि जनप्रतिनिधि के साथ काम करने वाली टीम का हिस्सा महसूस करता है।

संगीता पाटिल के लिए कार्यकर्ता से संबंध केवल राजनीतिक जरूरत नहीं है। किसी कार्यकर्ता के घर पारिवारिक कार्यक्रम हो, सामाजिक अवसर हो या उसके सामने कोई निजी परेशानी हो, ऐसे समय में उसके साथ खड़ा होना रिश्ते को अलग अर्थ देता है। राजनीति में मंच पर साथ खड़े होने वाले बहुत लोग मिल जाते हैं, लेकिन निजी सुख-दुःख में साथ खड़ा होने वाला व्यक्ति लंबे

समय तक याद रहता है। यही व्यवहार कार्यकर्ताओं के बीच उनके प्रति आत्मीयता पैदा करता है।

उनकी जनसेवा का मानवीय पक्ष लिम्बायत में हर वर्ष आने वाली बाढ़ के समय अधिक दिखाई देता है। भारी बारिश के दौरान क्षेत्र की खाड़ी और नालों में पानी भरने से आसपास की कई सोसायटियों में जलभराव की स्थिति बन जाती है। ऐसे समय में संगीता पाटिल केवल अधिकारियों से व्यवस्था कराने तक सीमित नहीं रहतीं। वे स्वयं प्रभावित इलाकों में पहुँचती हैं और कई बार पानी के बीच खड़े होकर लोगों की स्थिति देखती हैं। राहत मिलने तक दूध, अनाज और भोजन जैसी जरूरतों की व्यवस्था में भी जुटी रहती हैं।

बाढ़ के समय किसी परिवार के घर में पानी भर जाए तो उसके लिए उस समय राजनीति का अर्थ नहीं रह जाता। उसे सबसे पहले मदद चाहिए होती है। ऐसे मौके पर जनप्रतिनिधि का उसके दरवाजे तक पहुँचना अपने आप में भरोसा पैदा करता है। संगीता पाटिल की लोकप्रियता का एक आधार इस तरह के अनुभवों में भी दिखाई देता है। लोगों को याद रहता है कि मुश्किल समय में कौन उनके साथ खड़ा था।

लिम्बायत जैसे बड़े और विविध क्षेत्र में हर व्यक्ति तक विधायक का स्वयं पहुँचना संभव नहीं है। यहाँ कार्यकर्ता उनकी आँख और कान की तरह काम करते हैं। पन्ना प्रमुखों से मिलने वाली जानकारी में केवल चुनावी रुझान नहीं होते। मोहल्ले की समस्या, किसी परिवार की जरूरत, पानी या सफाई की परेशानी, किसी बुजुर्ग की स्थिति या किसी नए मतदाता से जुड़ी जानकारी भी उनके सामने आती है। इस तरह संगठन के कार्यकर्ता और जनप्रतिनिधि के बीच बना संपर्क क्षेत्र की वास्तविक तस्वीर उन तक पहुँचाता है।

संगीता पाटिल की लोकप्रियता का एक कारण यह भी है कि उनकी राजनीति में संगठन और जनसेवा अलग-अलग दिखाई नहीं देते। कार्यकर्ता उन्हें लोगों तक ले जाते हैं और लोगों के बीच रहना उन्हें क्षेत्र की समस्याओं से जोड़े रखता है। यही संबंध चुनाव के दिनों में संगठन की ताकत बनता है और सामान्य दिनों में जनप्रतिनिधि का जनाधार मजबूत करता है।

लोकप्रियता केवल भीड़ देखकर नहीं मापी जा सकती। वह उस सहजता में दिखाई देती है, जिसके साथ कोई कार्यकर्ता अपनी बात कह सके, कोई

परिवार परेशानी में मदद मांग सके और कोई आम व्यक्ति अपने प्रतिनिधि से मिलने में संकोच न करे। लिम्बायत में संगीता पाटिल की पहचान इसी सहज संपर्क से बनी है।

उनकी कार्यशैली का सबसे मजबूत पक्ष शायद यही है कि वे लोगों के बीच केवल दिखाई देने के लिए नहीं, बल्कि जरूरत के समय उपस्थित रहने के लिए जाती हैं। संगठन के कार्यकर्ताओं के साथ उनका संबंध और संकट के समय आम लोगों के बीच उनकी मौजूदगी—इन दोनों ने मिलकर उनकी ऐसी छवि बनाई है, जिसमें विधायक के साथ-साथ एक सहज और उपलब्ध जनप्रतिनिधि भी दिखाई देता है।

फ़ोटो कैप्शन: जन-जन के बीच बढ़ती लोकप्रियता, आत्मीयता और विश्वास की पहचान—विधायक संगीता पाटिल।

लिंबायत मॉडल की पाँच विशेषताएँ

- ✓ कार्यकर्ता को जिम्मेदारी के साथ सम्मान।
- ✓ पन्ना प्रमुखों से वर्षभर संवाद।
- ✓ क्षेत्रीय प्रवास में स्थानीय कार्यकर्ताओं की सहभागिता।
- ✓ बूथ स्तर से जमीनी फीडबैक।
- ✓ आत्मीयता और उत्तरदायित्व पर आधारित कार्यशैली।

लेखक की सोच

कार्यकर्ता को सम्मान, समय और विश्वास देने वाला नेतृत्व ही लंबे समय तक संगठन को मजबूत बना सकता है।

महाराष्ट्र में भी पन्ना प्रमुख की भूमिका

गुजरात के अनुभव से श्रीगोंदा तक संगठन की नई कार्यशैली

संगठन सूत्र

"संगठन की शक्ति कार्यकर्ता में है और कार्यकर्ता की शक्ति उसके बूथ में।"
— नरेंद्र मोदी (प्रधानमंत्री)

गुजरात में पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति की कार्यशैली का अनुभव जब महाराष्ट्र के चुनावी मैदान तक पहुँचा, तो इसका एक महत्वपूर्ण उदाहरण अहमदनगर जिले की श्रीगोंदा विधानसभा में देखने को मिला।

वर्तमान भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सी. आर. पाटिल के मार्गदर्शन में गुजरात से गई प्रवासी टीम में सूरत के पूर्व महापौर डॉ. जगदीश पटेल को श्रीगोंदा विधानसभा का टीम लीडर बनाया गया। प्रारंभ में स्थानीय संगठन को बाहर से आई टीम की उपयोगिता को लेकर स्वाभाविक संदेह था। लेकिन बूथ स्तर पर स्थानीय कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर जब पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति की कार्यशैली को चुनावी रणनीति से जोड़ा गया, तो परिणाम ने इस प्रयोग की उपयोगिता को सामने रखा।

डॉ. जगदीश पटेल के अनुसार, इस चुनाव में सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि बाहर से आई टीम ने स्थानीय संगठन का स्थान लेने के बजाय स्थानीय कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर बूथ और पन्ने की सूक्ष्म जानकारी को चुनावी रणनीति का आधार बनाया।

श्रीगोंदा में पिछले चुनाव में भाजपा की जीत का अंतर केवल 4,750 मत था। इस बार भाजपा प्रत्याशी विक्रमसिंह बबनराव पांचपुते ने 37,156 मतों के अंतर से विजय प्राप्त की।

फोटो कैप्शन : श्रीगोंदा विधानसभा में स्थानीय संगठन के साथ गुजरात प्रवासी टीम का नेतृत्व करते डॉ. जगदीश पटेल।

डॉ. जगदीश पटेल का अनुभव

> **"स्थानीय संगठन को शुरुआत में हम पर संदेह था। लेकिन जब बूथ प्रबंधन और पन्ना स्तर की जानकारी को स्थानीय कार्यकर्ताओं के साथ जोड़कर काम किया गया, तो पूरी तस्वीर बदल गई। पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति की असली ताकत यही है कि चुनावी काम को छोटे-छोटे दायित्वों में बाँटकर प्रत्येक कार्यकर्ता को जिम्मेदारी दी जाए।"**

श्रीगोंदा का परिणाम

पिछली जीत का अंतर: 4,750 मत
इस बार जीत का अंतर: 37,156 मत
अंतर में बढ़ोतरी: 32,406 मत

लेखक की सोच

पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति की असली परीक्षा तब होती है, जब अलग प्रदेश, अलग भाषा और अलग सामाजिक परिस्थितियों के बीच भी कार्यकर्ता मिलकर एक ही संगठनात्मक पद्धति को जमीन पर परिणाम में बदल दें। श्रीगोंदा का अनुभव इसी क्षमता की एक मिसाल है।

बंगाल में पन्ना प्रमुख की परीक्षा

भवानीपुर के संवेदनशील मैदान में संगठन खड़ा करने का साहस

संगठन सूत्र

"भाजपा का कार्यकर्ता कभी अकेला नहीं होता। संगठन उसके साथ खड़ा रहता है और कार्यकर्ता संगठन को मजबूत करता है।"
— अमित शाह (केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री)

पश्चिम बंगाल की भवानीपुर विधानसभा लंबे समय से राज्य की राजनीति का अत्यंत महत्वपूर्ण केंद्र रही है। कोलकाता की इस सीट का राजनीतिक महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि यह ममता बनर्जी के राजनीतिक प्रभाव का प्रमुख क्षेत्र रही है। 2026 के चुनाव में तो भवानीपुर में ममता बनर्जी के सामने भाजपा के वरिष्ठ नेता शुभेंदु अधिकारी के मैदान में उतरने से मुकाबला प्रदेश की सबसे चर्चित सीटों में शामिल हो गया।

इसी राजनीतिक पृष्ठभूमि में गुजरात प्रवासी टीम के सदस्य व भवानीपुर विधानसभा के प्रवासी चुनाव प्रभारी डॉ. प्रकाश चंद्र पटेल का अनुभव पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति की जमीनी भूमिका को समझने का एक रोचक उदाहरण है।

डॉ. प्रकाश चन्द्र पटेल के अनुसार चुनाव से लगभग चार महीने पहले से ही उन्होंने मतदाता सूची के प्रत्येक पन्ने तक संगठन की पहुँच बनाने, पन्ना प्रमुखों को सक्रिय करने और पन्ना समिति के माध्यम से बूथ संगठन को मजबूत करने पर काम शुरू किया।

फोटो कैप्शन : पश्चिम बंगाल के सीएम शुभेंदु अधिकारी व स्थानीय कार्यकर्ताओ के साथ भवानीपुर विधानसभा के प्रवासी प्रभारी डॉ प्रकाश चन्द्र पटेल

तीन मोर्चों पर काम

01 | पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति का विस्तार

कठिन राजनीतिक वातावरण के बावजूद अधिक से अधिक स्थानीय लोगों को संगठनात्मक जिम्मेदारी से जोड़ना और कार्यकर्ताओं का मनोबल बनाए रखना।

02 | चाय और चौपाल से संवाद

चाय की दुकानों और स्थानीय चौपालों पर सहज रूप से लोगों के बीच जाकर बातचीत करना और सामान्य सामाजिक संवाद के माध्यम से भाजपा के विचारों एवं नीतियों को सामने रखना।

03 | सतर्कता और सूचना-संग्रह

संवेदनशील क्षेत्र की राजनीतिक गतिविधियों पर नजर रखते हुए आवश्यक जानकारी संगठन तक पहुँचाना।

जब जोखिम सामने आया

डॉ. प्रकाश चन्द्र पटेलअपने अनुभव को याद करते हुए कहते हैं—

> **"काम बेहद जोखिम भरा था, लेकिन पार्टी का जो विश्वास मुझ पर था, उसे मैं किसी भी कीमत पर डगमगाने नहीं देना चाहता था।"**

उनके अनुसार चुनावी कार्य के दौरान उनके साथ लगातार रहने वाले, जो शुभेंदु अधिकारी की टीम से जुड़े थे, को गोली मारे जाने की घटना ने परिस्थितियों की गंभीरता को सामने ला दिया। डॉ. प्रकाश चन्द्र पटेल बताते हैं कि उस दिन वे स्वयं भी बाल-बाल बचे।

इसके बावजूद उन्होंने अपना काम नहीं छोड़ा और पन्ना प्रमुख तथा पन्ना समिति के माध्यम से बूथ स्तर पर संगठनात्मक गतिविधियाँ जारी रखीं।

संगठन ने पहचानी मेहनत

डॉ. प्रकाश चन्द्र पटेल के अनुसार, उनके कार्य से प्रभावित होकर शुभेंदु अधिकारी ने उन्हें अपनी मुख्य टीम में स्थान दिया। चुनाव के बाद उन्हें आमंत्रित कर सम्मानित किया गया और प्रशंसा-पत्र भी प्रदान किया गया।

पन्ना प्रमुख के लिए पाँच सीख

साहस — कठिन परिस्थिति में भी जिम्मेदारी निभाना।संपर्क — पन्ना और पन्ना समिति के माध्यम से परिवारों तक पहुँचना।संवाद — सामान्य सामाजिक स्थानों को संपर्क का माध्यम बनाना।सतर्कता — संवेदनशील क्षेत्र की परिस्थितियों को समझकर काम करना।निष्ठा — संगठन के विश्वास को अपनी सबसे बड़ी जिम्मेदारी मानना।

लेखक की सोच

पन्ना प्रमुख की असली परीक्षा तब होती है, जब परिस्थितियाँ उसके अनुकूल न हों। सुविधाजनक माहौल में संगठन के साथ चलना सरल है, विपरीत परिस्थितियों में ही कार्यकर्ता की परीक्षा होती है।

वाराणसी में पन्ना समिति का नया प्रयोग

पन्ना प्रमुख से आगे, हर पेज पर टीम खड़ी करने की पहल

संगठन सूत्र

"हमारा कल कार्यकर्ताओं के कारण था, हमारा आज कार्यकर्ताओं के कारण है और हमारा कल भी कार्यकर्ताओं के कारण होगा"

— नरेंद्र मोदी (प्रधानमंत्री)

पन्ना प्रमुख व्यवस्था के बाद अब पन्ना समिति को संगठन की अगली सूक्ष्म कड़ी के रूप में विकसित करने का प्रयोग उत्तर प्रदेश की वाराणसी लोकसभा में शुरू किया गया है। यह प्रयोग इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ पन्ना प्रमुख की जिम्मेदारी को आगे बढ़ाते हुए प्रत्येक पेज पर एक सहयोगी टीम तैयार करने का प्रयास किया जा रहा है।

फोटो कैप्शन : वाराणसी लोकसभा की रोहनिया विधानसभा में पन्ना समिति के सदस्यों को उनके फोटो एवं विवरण सहित जारी किए गए पहचान-पत्र।

केंद्रीय जलशक्ति मंत्री **सी. आर. पाटिल** के मार्गदर्शन में गुजरात से गई प्रवासी टीम तथा वाराणसी के शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के स्थानीय पदाधिकारी इस अभियान में मिलकर कार्य कर रहे हैं। संगठन से प्राप्त जानकारी के अनुसार अब तक **एक लाख से अधिक सदस्य पन्ना समिति से जोड़े जा चुके हैं।**

60 मतदाता से एक पन्ना प्रमुख

ग्रामीण विधानसभा क्षेत्र के पन्ना समिति प्रभारी एवं जिला महामंत्री संजय सोनकर ने लेखक को बताया कि वाराणसी में पहली बार इस प्रकार का प्रयोग किया जा रहा है।

उनके अनुसार, लगभग 60 मतदाताओं के बीच एक पन्ना प्रमुख की जिम्मेदारी तय की जाती है। इसके बाद पन्ना प्रमुख के साथ 5–6 अन्य सदस्यों को जोड़कर पन्ना समिति तैयार करने का प्रयास किया जा रहा है।

इससे जिम्मेदारी केवल एक कार्यकर्ता तक सीमित नहीं रहती, बल्कि एक छोटे समूह में विभाजित हो जाती है।

वाराणसी मॉडल

लगभग 60 मतदाता
↓
1 पन्ना प्रमुख
↓
5–6 सहयोगी सदस्य
↓
पन्ना समिति
↓
हर पेज पर सक्रिय टीम

एक लाख से अधिक सदस्य

वाराणसी में अब तक 1 लाख से अधिक पन्ना समिति सदस्यों को जोड़ने का आँकड़ा इस प्रयोग के व्यापक स्तर को दर्शाता है। गुजरात की संगठनात्मक

कार्यशैली और वाराणसी के स्थानीय कार्यकर्ताओं के समन्वय से चल रहा यह अभियान यह देखने का अवसर दे रहा है कि पन्ना प्रमुख के व्यक्तिगत दायित्व को टीम आधारित कार्यशैली में किस तरह बदला जा सकता है।

यह प्रयोग अभी विकास की प्रक्रिया में है। इसलिए इसका मूल्यांकन केवल चुनावी परिणाम से नहीं, बल्कि कितने पन्नों पर कितनी सक्रिय टीमें खड़ी हुईं और वे कितनी नियमितता से काम करती हैं, इससे भी किया जाना चाहिए।

फोटो कैप्शन : वाराणसी के जिला महामंत्री संजय सोनकर के साथ गुजरात प्रवासी कार्यकर्ता पन्ना समिति के सदस्यों को पहचान-पत्र वितरित करते हुए।

लेखक की सोच

एक पन्ने की जिम्मेदारी जब एक कार्यकर्ता से आगे बढ़कर टीम की जिम्मेदारी बनती है, तो संगठन का विस्तार केवल संख्या में नहीं, कार्यक्षमता में भी दिखाई देने लगता है। वाराणसी का प्रयोग इसी बदलाव की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

चार राज्यों से चार अनुभव

अलग परिस्थितियाँ, एक मजबूत संगठनात्मक सीख

संगठन सूत्र

*"बूथ प्रबंधन बहुत महत्वपूर्ण है। चुनाव में बूथ जीतना ही वा स्तविक परीक्षा है।" **— नरेंद्र मोदी (प्रधानमंत्री)***

अध्याय 2 की यात्रा में सामने आए अनुभव बताते हैं कि पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति का काम हर क्षेत्र में एक जैसा नहीं होता। स्थान बदलता है, परिस्थितियाँ बदलती हैं, चुनौती बदलती है—लेकिन जमीन पर काम करने वाले कार्यकर्ता की भूमिका महत्वपूर्ण बनी रहती है।

महाराष्ट्र — श्रीगोंदा

संदेह से विश्वास तक

बाहर से पहुँची गुजरात प्रवासी टीम के सामने शुरुआत में स्थानीय संगठन का विश्वास जीतना चुनौती था। स्थानीय कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर बूथ प्रबंधन की रणनीति बनाई गई और टीमवर्क ने परिणाम को मजबूत किया।

सीख: *स्थानीय संगठन के साथ मिलकर किया गया प्रयास ही प्रवासी कार्यकर्ता की वास्तविक ताकत बनता है।*

पश्चिम बंगाल — भवानीपुर

कठिन जमीन पर संगठन

राजनीतिक रूप से संवेदनशील वातावरण में पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति का नेटवर्क तैयार करना आसान नहीं था। जोखिम के बावजूद कार्यकर्ताओं ने संपर्क और संगठनात्मक जिम्मेदारी को आगे बढ़ाया।

सीख: *कठिन परिस्थितियों में कार्यकर्ता की निष्ठा ही संगठन की सबसे बड़ी पूँजी बनती है।*

गुजरात — नवसारी

एक बड़े प्रयोग का केंद्र

नवसारी लोकसभा में पन्ना समिति को व्यापक स्तर पर लागू किए जाने का अनुभव सामने आया। बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं को इस व्यवस्था से जोड़कर बूथ स्तर पर संगठन को व्यापक कार्यशक्ति देने का प्रयास हुआ।

सीख: *जब संगठनात्मक प्रयोग बड़े पैमाने पर कार्यकर्ताओं तक पहुँचता है, तो उसकी क्षमता कई गुना बढ़ जाती है।*

उत्तर प्रदेश — वाराणसी

पन्ने पर टीम खड़ी करने की पहल

वाराणसी में लगभग 60 मतदाताओं के बीच पन्ना प्रमुख की जिम्मेदारी और उसके साथ 5–6 सदस्यों की पन्ना समिति बनाने का प्रयास किया जा रहा है। एक लाख से अधिक सदस्यों को जोड़ने का अभियान इस प्रयोग के व्यापक स्वरूप को दर्शाता है।

सीख: *एक जिम्मेदारी को टीम में बदलना संगठनात्मक क्षमता को नई दिशा दे सकता है।*

लेखक की सोच

संगठन की सफलता का कोई एक फार्मूला नहीं होता। जमीन को समझना, स्थानीय कार्यकर्ता का सम्मान करना और उपलब्ध कार्यशक्ति को सही जिम्मेदारी देना—यही अलग-अलग अनुभवों को सफलता की दिशा देता है।

महाराष्ट्र | पश्चिम बंगाल | नवसारी | वाराणसी

अध्याय – 3

पन्ना समिति की भूमिका

एक जिम्मेदारी से सामूहिक कार्यशक्ति तक

संगठन सूत्र

"बूथ समिति मजबूत हो और उसके कार्यकर्ता सक्रिय हों,
तभी संगठन जमीनी स्तर पर मजबूत बनता है।"
— शिव प्रकाश (राष्ट्रीय सह-संगठन महामंत्री, भाजपा)

पन्ना प्रमुख को एक पन्ने की जिम्मेदारी दी जाती है। उसके पास मतदाता सूची का एक छोटा-सा हिस्सा होता है, लेकिन उस हिस्से से जुड़े परिवारों के साथ संपर्क की जिम्मेदारी छोटी नहीं होती। कुछ परिवारों से लगातार मिलना, लोगों की बात जानना और जरूरत के समय उनके बीच मौजूद रहना एक व्यक्ति के लिए लंबे समय तक अकेले निभाना आसान नहीं होता। यहीं पन्ना समिति की जरूरत सामने आती है।

पन्ना समिति का अर्थ केवल कुछ कार्यकर्ताओं को एक साथ जोड़ देना नहीं है। इसका मूल विचार यह है कि पन्ने से जुड़ी जिम्मेदारी अकेले व्यक्ति की न रहकर साथ काम करने वाले लोगों की साझा जिम्मेदारी बने। पन्ना प्रमुख इस काम का नेतृत्व करता है, लेकिन उसकी सफलता इस बात पर भी निर्भर करती है कि उसके साथ जुड़े कार्यकर्ता कितनी जिम्मेदारी से अपना हिस्सा निभाते हैं।

इसका असर चुनाव के समय ही नहीं दिखाई देता। संगठन का काम साल भर चलता है। परिवार बदलते हैं, नए मतदाता जुड़ते हैं, लोग दूसरी जगह चले जाते हैं और स्थानीय परिस्थितियाँ भी बदलती रहती हैं। ऐसी स्थिति में पन्ने की जानकारी केवल सूची में दर्ज नामों तक सीमित नहीं रह सकती। लोगों के साथ बना संपर्क ही यह समझने में मदद करता है कि क्षेत्र में क्या बदल रहा है।

पन्ना समिति इसी संपर्क को टिकाऊ बनाने का माध्यम बनती है। किसी एक कार्यकर्ता के व्यस्त होने या उपलब्ध न रहने पर भी काम रुकना नहीं चाहिए। एक-दूसरे से जुड़े कार्यकर्ता होने पर संपर्क बना रहता है और पन्ने की जिम्मेदारी चुनाव तक सीमित नहीं रहती।

यहाँ संख्या से ज्यादा मायने काम करने के तरीके का है। समिति में कितने लोग हैं, यह स्थानीय जरूरत के अनुसार बदल सकता है। लेकिन सभी का लक्ष्य एक होना चाहिए—अपने पन्ने से जुड़े परिवारों के साथ भरोसे का संबंध बनाए रखना और संगठन के काम को लगातार आगे बढ़ाना।

यही कारण है कि पन्ना समिति को पन्ना प्रमुख की सहायता करने वाली छोटी टीम भर नहीं माना जा सकता। यह उस जिम्मेदारी को निरंतर चलाने वाला आधार है, जिसके माध्यम से संगठन व्यक्ति से आगे बढ़कर सामूहिक प्रयास में बदलता है।

लेखक की सोच

पन्ना समिति की असली शक्ति उसकी संख्या में नहीं, साथ काम करने वाले कार्यकर्ताओं के भरोसे और निरंतरता में होती है।

पन्ना समिति की संरचना

एक पन्ना, एक टीम, स्पष्ट जिम्मेदारी

संगठन सूत्र

"जब बूथ पर हर वर्ग की भागीदारी होगी, तब संगठन सर्वव्यापी बनेगा।"
— नरेंद्र मोदी (प्रधानमंत्री)

पन्ना समिति की रचना करते समय सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि समिति किसी औपचारिक सूची का नाम नहीं है। इसका काम एक पन्ने से जुड़े कार्यों को इस तरह आगे बढ़ाना है कि पन्ना प्रमुख को अकेले हर जिम्मेदारी न संभालनी पड़े और साथ काम करने वाले कार्यकर्ताओं को भी अपनी भूमिका का पता रहे।

हर क्षेत्र की परिस्थिति एक जैसी नहीं होती। कहीं परिवार अधिक होते हैं, कहीं क्षेत्र छोटा होता है और कहीं लोगों के बीच संपर्क के लिए अधिक कार्यकर्ताओं की जरूरत पड़ती है। इसलिए समिति में सदस्यों की संख्या हर जगह एक जैसी रखना जरूरी नहीं है। स्थानीय जरूरत के अनुसार इसमें बदलाव किया जा सकता है।

पन्ना प्रमुख समिति का नेतृत्व करता है। वह साथियों के बीच काम का तालमेल बनाए रखता है और यह देखता है कि पन्ने से जुड़े परिवारों तक संपर्क बना रहे। उसके साथ काम करने वाले कार्यकर्ता अलग-अलग कामों में हाथ बँटा सकते हैं। किसी की भूमिका परिवारों से मिलने की हो सकती है, कोई लोगों से मिली जानकारी आगे पहुँचा सकता है और कोई सामाजिक गतिविधियों में भागीदारी बढ़ाने में सहयोग कर सकता है।

यहाँ पद से अधिक काम की अहमियत है। किसी सदस्य को केवल नाम के लिए समिति में जोड़ देने से उसका उद्देश्य पूरा नहीं होता। जिस काम की जिम्मेदारी ली गई है, उसे समय देकर निभाना जरूरी है। इसी तरह सभी

सदस्यों के बीच संपर्क बना रहना भी जरूरी है, ताकि एक कार्यकर्ता से मिली जानकारी दूसरे तक पहुँच सके।

समिति का ढाँचा बहुत बड़ा होने की जरूरत नहीं है। छोटी टीम भी अच्छे ढंग से काम कर सकती है, बशर्ते उसमें काम को लेकर समझ और आपसी भरोसा हो। उद्देश्य यह नहीं कि पन्ने पर ज्यादा लोगों के नाम लिखे जाएँ। उद्देश्य यह है कि जितने लोग जुड़े हैं, वे अपने हिस्से का काम करते रहें।

लेखक की सोच

पन्ना समिति का मूल्य उसके सदस्यों की संख्या से नहीं, उनके काम करने के ढंग से तय होता है। जब हर व्यक्ति अपना हिस्सा निभाता है, तभी छोटी टीम भी बड़ा काम कर पाती है।

सही सदस्य का चयन

सही व्यक्ति, सही जिम्मेदारी

संगठन सूत्र

"कार्यकर्ता की क्षमता ही संगठन की सबसे बड़ी पूँजी है।"
— अमित शाह (केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री)

पन्ना समिति बनाते समय नाम जोड़ना आसान है, लेकिन सही व्यक्ति को जिम्मेदारी देना उतना ही जरूरी है। समिति में ऐसे कार्यकर्ताओं को स्थान मिलना चाहिए जो अपने क्षेत्र के लोगों से सहजता से मिल सकें और नियमित रूप से उनके संपर्क में रह सकें।

सदस्य चुनते समय केवल यह देखना पर्याप्त नहीं है कि कौन उपलब्ध है। यह भी देखना चाहिए कि वह अपने पन्ने के परिवारों को कितना जानता है, लोगों से बातचीत करने में कितना सहज है और संगठन के काम के लिए समय दे सकता है या नहीं। टीम में काम करने की आदत भी उतनी ही जरूरी है। किसी एक सदस्य की अनुपस्थिति में दूसरा कार्यकर्ता उसकी जिम्मेदारी संभाल सके, तो काम रुकता नहीं है।

पन्ना समिति बनाते समय पन्ने का सामाजिक संतुलन भी ध्यान में रखना उपयोगी है। मतदाता सूची के एक पन्ने पर परिवारों की संख्या और उनमें दर्ज मतदाताओं की संख्या अलग-अलग हो सकती है। मान लीजिए किसी पन्ने पर कुल 30 मतदाता हैं। किसी परिवार में दो मतदाता हैं, जबकि दूसरे परिवार में छह या सात मतदाता हैं। ऐसे में अधिक मतदाताओं वाले परिवार से जुड़े किसी सदस्य को समिति में शामिल करना उपयोगी हो सकता है। इससे उस परिवार के साथ संपर्क सहज बना रहता है और उसकी जरूरतों की जानकारी भी समय पर मिल सकती है।

लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि अधिक मतदाता वाले परिवार को हर बार प्राथमिकता दी जाए। समिति बनाते समय पन्ने पर रहने वाले अलग-अलग

परिवारों और सामाजिक समूहों की भागीदारी का भी ध्यान रखना चाहिए। उद्देश्य यह होना चाहिए कि समिति की पहुँच किसी एक परिवार या समूह तक सीमित न रहे।

एक अच्छा सदस्य वह है जो केवल चुनाव के समय दिखाई न दे। वह सामान्य दिनों में भी लोगों से मिल सके, उनकी बात सुन सके और जरूरत पड़ने पर उचित कार्यकर्ता या नेतृत्व तक बात पहुँचा सके। उसकी अपनी सामाजिक पहचान भी समिति के लिए उपयोगी हो सकती है, क्योंकि लोग अक्सर उसी व्यक्ति से सहज होकर बात करते हैं जिसे वे पहले से जानते हैं।

इसलिए पन्ना समिति का चयन संख्या पूरी करने के लिए नहीं, बल्कि जिम्मेदारी निभाने की क्षमता देखकर होना चाहिए। सही व्यक्ति, सही परिवारों और सही सामाजिक पहुँच के साथ जुड़ता है तो छोटी समिति भी अपने पन्ने के लोगों से मजबूत संबंध बना सकती है।

लेखक की सोच

सही व्यक्ति छोटी जिम्मेदारी को भी प्रभावी बना सकता है।"

बिहार में पन्ने का बदलता गणित

120 से 60 और फिर 30 तक—सूक्ष्म संगठन की ओर बढ़ता कदम

संगठन सूत्र

*"हर कार्यकर्ता और नेता सिर्फ अपने बूथ को मजबूत कर ले, तो पूरा राज्य और देश अपने आप जीत लेगा।" — **नरेंद्र मोदी (प्रधानमंत्री)***

पन्ना प्रमुख की वास्तविक शक्ति इस बात में छिपी है कि एक कार्यकर्ता कितने मतदाताओं की जिम्मेदारी लेकर उनसे कितना सीधा और आत्मीय संपर्क बना सकता है। बिहार में पन्ना प्रमुख व्यवस्था का विकास इस बदलाव को समझने का एक रोचक उदाहरण है।

हिंदुस्तान टाइम्स में 25 नवंबर 2021 को प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार, बिहार भाजपा ने पन्ना प्रमुख व्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में लक्ष्य निर्धारित किया था। तत्कालीन प्रदेश अध्यक्ष संजय जायसवाल ने जिला संगठनों को 4 अप्रैल 2022 तक पन्ना प्रमुखों की नियुक्ति पूरी करने का लक्ष्य दिया था। उद्देश्य था—बूथ को छोटे-छोटे संपर्क क्षेत्रों में बाँटकर प्रत्येक मतदाता तक संगठन की सीधी पहुँच बनाना।

बिहार : 120 से 60 तक

2017 में बिहार भाजपा ने गुजरात और हिमाचल प्रदेश में पन्ना प्रमुख व्यवस्था की सफलता से प्रेरणा लेते हुए इसे अपने संगठन में लागू करने की तैयारी शुरू की। उस समय दिए गए उदाहरण में 1,200 मतदाताओं को 10 पन्नों में बाँटकर एक पन्ना प्रमुख पर लगभग 120 मतदाताओं की जिम्मेदारी बताई गई थी।

बाद के वर्षों में बिहार में यह जिम्मेदारी और सूक्ष्म हुई। 2018 की रिपोर्ट में एक पन्ने पर लगभग 60 मतदाताओं का उल्लेख मिलता है।

सोच की दिशा

120 मतदाता
↓
60 मतदाता
↓
अधिक व्यक्तिगत संपर्क
↓
अधिक जवाबदेही

गुजरात ने पन्ने को और छोटा किया

गुजरात में इसी सोच को और सूक्ष्म रूप दिया गया। उपलब्ध विवरणों के अनुसार, एक पन्ने पर लगभग 30 मतदाता होते हैं और सी. आर. पाटिल (केंद्रीय जलशक्ति मंत्री एवं बिहार चुनाव के सह प्रभारी) के मॉडल में उसी पन्ने के परिवारों के बीच से एक टीम तैयार कर पन्ना समिति का स्वरूप विकसित किया गया।

यहीं से पन्ना प्रमुख की व्यक्तिगत जिम्मेदारी को सामूहिक कार्यशक्ति में बदलने का रास्ता खुलता है।

पन्ने का बदलता गणित

बिहार : 120 → 60

गुजरात : लगभग 30 + पन्ना समिति

लेखक की सोच

जिम्मेदारी छोटी होती है तो संपर्क अधिक व्यक्तिगत होता है।
व्यक्तिगत संपर्क से भरोसा बनता है और भरोसा संगठन
को मजबूत करता है।

फोटो कैप्शन: "बिहार चुनाव में संगठनात्मक जिम्मेदारी निभाने पहुँची गुजरात की प्रवासी कार्यकर्ताओं की टीम के साथ सी. आर. पाटिल—बूथ से पन्ने तक संगठन को मजबूत करने के अभियान का एक महत्वपूर्ण क्षण।"

(फोटो स्रोत : सी. आर. पाटिल के सोशल मीडिया फेसबुक पोस्ट, 6 नवंबर 2025)

फोटो कैप्शन: "पूर्णिया में सीमांचल के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के साथ सी. आर. पाटिल की संवाद बैठक—संगठन को एकजुट रखते हुए चुनावी तैयारी को मजबूत करने की दिशा में विचार-विमर्श।"

बिहार की जमीन पर पन्ना और पन्ना समिति

चुनौती बड़ी थी, लेकिन प्रयोग की संभावनाएँ उससे भी बड़ी

संगठन सूत्र

*"अगर बूथ स्तर पर क्रियान्वयन सही है, तो कोई भी रणनीति असफल नहीं हो सकती।" — **विनोद तावड़े (राष्ट्रीय महासचिव),भाजपा***

लेखक की बिहार यात्रा

लेखक स्वयं बिहार की रिपोर्टिंग के दौरान कई क्षेत्रों में गए। चुनावी माहौल को करीब से देखने पर एक बात महसूस हुई कि कई क्षेत्रों में भाजपा के प्रति राजनीतिक समर्थन दिखाई देता है, लेकिन संगठन को जमीन पर मजबूत रखने की चुनौती अलग है।

रिपोर्टिंग के दौरान कई जगह ऐसा देखने को मिला कि निर्वाचित प्रतिनिधियों के आसपास स्थानीय कार्यकर्ताओं का अपना मजबूत समूह बना हुआ है। ये कार्यकर्ता अपने नेता से लगातार जुड़े रहते हैं और स्थानीय स्तर पर लोगों के बीच भी सक्रिय दिखाई देते हैं। इसके मुकाबले पार्टी के स्थायी संगठन को उतना मजबूती नही देते हैं जितना संगठन को जरूरत महसूस होती है। वो नेता जब जिस पार्टी में जाता है उसके साथ वो अपने बनाये कार्यकर्ताओ को भी ले जाता है।

यहीं से पन्ना प्रमुख की भूमिका बिहार के लिए बहुत जरूरी हो जाता है। किसी नेता या जनप्रतिनिधि के साथ जुड़े कार्यकर्ता चुनाव के समय काफी सक्रिय हो सकते हैं, लेकिन पार्टी का संगठन केवल चुनाव तक सीमित नहीं रह सकता। उसे बूथ पर लगातार काम करने वाले ऐसे कार्यकर्ताओं की जरूरत होती है, जो अपने क्षेत्र के परिवारों से जुड़े रहें और संगठन के साथ उनका संपर्क हमेशा बनाए रखें।

लेखक की रिपोर्टिंग में यह भी सामने आया कि बिहार जैसे बड़े राज्य में हर क्षेत्र की परिस्थितियाँ एक जैसी नहीं हैं। कहीं संगठन का आधार पहले से मजबूत है, तो कहीं अभी कार्यकर्ताओं को जोड़ने और जिम्मेदारी देने का काम आगे बढ़ाना है। इसलिए गुजरात में काम कर चुके मॉडल को बिहार में लागू करते समय स्थानीय स्थिति को समझना जरूरी हो जाता है।

बिहार में गुजरात मॉडल की चुनौती

बिहार में गुजरात के पन्ना समिति मॉडल को जमीन पर उतारने की कोशिश के दौरान सबसे बड़ी व्यावहारिक समस्या वहीं सामने आई, जहाँ पन्ना प्रमुख की नींव अभी पूरी तरह मजबूत नहीं थी।

प्रवासी टीम से जुड़े कार्यकर्ताओं के अनुभव के अनुसार, कई जगह पन्ना प्रमुख बनाए जा चुके थे, लेकिन उनसे नियमित संपर्क बनाए रखना आसान नहीं था। जब पन्ना प्रमुख ही लगातार सक्रिय न हो, तब उसके साथ पाँच-छह सक्रिय सदस्यों की टीम तैयार करना और उन्हें लंबे समय तक काम में लगाए रखना और कठिन हो जाता है।

यहीं बिहार का अनुभव एक यह बताता है कि पन्ना समिति, पन्ना प्रमुख के बाद की व्यवस्था है। पहले पन्ना प्रमुख अपने पन्ने के परिवारों से जुड़े, लोगों को जाने और जिम्मेदारी संभाले। उसके बाद उसके साथ काम करने वाले सक्रिय सदस्यों की टीम तैयार हो। तभी समिति का काम टिकाऊ बन सकता है।

इसका मतलब यह भी है कि केवल सूची बनाकर पद दे देना पर्याप्त नहीं है। जिस कार्यकर्ता को जिम्मेदारी दी गई है, वह अपने पन्ने पर कितना सक्रिय है, लोगों से कितना जुड़ा है और संगठन के काम के लिए कितना समय देता है—यह देखना भी जरूरी है।

बिहार का संगठनात्मक सबक

"पहले हर पन्ने पर सक्रिय पन्ना प्रमुख,
फिर उसके साथ सक्रिय पन्ना समिति।"

फोटो कैप्शन: "अररिया में पन्ना प्रमुख और उनकी समिति से बातचीत करती जिला उपाध्यक्ष अंजुलता झा।"

अररिया जिला भाजपा की जिला उपाध्यक्ष अंजुलता झा के अनुसार, बिहार में बूथ प्रबंधन का काम पहले की तुलना में बेहतर हुआ है। पन्ना प्रमुखों को लेकर संगठन ने काफी काम किया है। हालांकि कुछ स्थानों पर पन्ना समिति बनाने में अभी भी कठिनाई दिखाई देती है।

उनका मानना है कि यदि पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति की व्यवस्था को पूरी तरह जमीन पर उतारा जा सके, तो इसका संगठन पर मजबूत असर पड़ेगा। उनके अनुभव में इसकी शुरुआत पन्ना प्रमुख को सक्रिय करने से होती है। जब पन्ना प्रमुख अपने पन्ने के लोगों से लगातार जुड़ा रहता है, तभी उसके साथ काम करने वाले दूसरे कार्यकर्ताओं की टीम भी प्रभावी ढंग से काम कर सकती है।

लेखक की रिपोर्टिंग के दौरान अररिया और सीमांचल के क्षेत्रों में स्थानीय कार्यकर्ताओं से बातचीत में भी यही बात सामने आई कि संगठन को मजबूत बनाने के लिए केवल जिम्मेदारी तय करना पर्याप्त नहीं है। उस जिम्मेदारी की रोज की निगरानी और कार्यकर्ताओं के साथ लगातार संपर्क भी जरूरी है।

बिहार जैसे बड़े राज्य में हर क्षेत्र की अपनी परिस्थिति है। कहीं कार्यकर्ता पहले से सक्रिय हैं, तो कहीं उन्हें फिर से जोड़ने और काम में लगाने की जरूरत है। ऐसे में पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति का काम एक जैसा नहीं हो सकता। जहाँ जिस तरह की जरूरत हो, वहाँ उसी हिसाब से टीम खड़ी करनी पड़ती है।

पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति का तालमेल

अकेला पन्ना प्रमुख नहीं, पूरी टीम बने संपर्क की ताकत

संगठन सूत्र

"पन्ना प्रमुख से लेकर बूथ अध्यक्ष तक, सभी को अपनी ताकत झोंकनी है।"
— ***अमित शाह (केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री)***

पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति को अलग-अलग इकाई मानकर नहीं, बल्कि एक ही कार्य-व्यवस्था की दो कड़ियों के रूप में समझना चाहिए। पन्ना प्रमुख अपने पन्ने का नेतृत्व करता है, जबकि पन्ना समिति उस जिम्मेदारी को सामूहिक शक्ति देती है।

पन्ना प्रमुख के पास मतदाता सूची का पन्ना है, लेकिन उस पन्ने पर दर्ज प्रत्येक परिवार तक नियमित पहुँच बनाना अकेले व्यक्ति के लिए हमेशा आसान नहीं होता। यहीं पन्ना समिति की भूमिका शुरू होती है।

नेतृत्व एक, जिम्मेदारियाँ अनेक

पन्ना प्रमुख का काम केवल नामों की सूची रखना नहीं है। उसे अपने पन्ने के परिवारों की स्थिति समझनी होती है, संपर्क की योजना बनानी होती है और पन्ना समिति के सदस्यों के बीच काम का समन्वय करना होता है।

पन्ना समिति के सदस्य उसी पन्ने के अलग-अलग परिवारों से संपर्क बनाए रखने, सामाजिक एवं सेवा गतिविधियों में भाग लेने, आवश्यक सूचनाएँ पन्ना प्रमुख तक पहुँचाने और संपर्क की निरंतरता बनाए रखने में सहयोग कर सकते हैं।

इस व्यवस्था में पन्ना प्रमुख नेतृत्वकर्ता है, लेकिन पूरी टीम संपर्क की शक्ति है।

काम का बंटवारा, जिम्मेदारी का विस्तार

एक प्रभावी पन्ना समिति में काम केवल पद के आधार पर नहीं, बल्कि क्षमता और क्षेत्र की आवश्यकता के अनुसार बाँटा जाना चाहिए।

पन्ना प्रमुख → योजना और समन्वय

सदस्य–1 → परिवार संपर्क

सदस्य–2 → सामाजिक संपर्क

सदस्य–3 → सूचना एवं फीडबैक

सदस्य–4 → सेवा एवं स्थानीय गतिविधियाँ

अन्य सदस्य → आवश्यकतानुसार सहयोग

परिणाम

एक व्यक्ति की जिम्मेदारी
↓
टीम की जिम्मेदारी
↓
निरंतर संपर्क
↓
परिवारों से संबंध
↓
सशक्त बूथ

तालमेल की असली परीक्षा

पन्ना समिति का गठन कर देना ही पर्याप्त नहीं है। उसकी सफलता तब दिखाई देती है, जब पन्ना प्रमुख और समिति के सदस्य नियमित रूप से एक-दूसरे से संवाद करते हैं।

किस परिवार से संपर्क हुआ?

कहाँ दोबारा जाना है?

किस परिवार की कोई आवश्यकता या शिकायत सामने आई?

कौन-सा सदस्य सक्रिय नहीं रह पा रहा है?

किस सामाजिक गतिविधि में समिति की भागीदारी हो सकती है?

इन छोटी-छोटी जानकारियों का आदान-प्रदान ही धीरे-धीरे एक सक्रिय टीम तैयार करता है।

यही पन्ना समिति को केवल नामों की सूची से एक कार्यशील संगठनात्मक इकाई बनाता है।

जब कोई कार्यकर्ता निष्क्रिय हो जाए...

व्यक्ति की जगह व्यवस्था को जिम्मेदारी संभालनी चाहिए

संगठन सूत्र

"संगठन की मजबूती तभी होती है, जब कार्यकर्ता अपनी जिम्मेदारी को समझकर उसे पूरी निष्ठा से निभाता है।"
— बी. एल. संतोष (राष्ट्रीय संगठन महामंत्री), भाजपा

पन्ना समिति बन जाने के बाद सबसे बड़ी चुनौती उसे लगातार सक्रिय बनाए रखना है। चुनावी उत्साह में बनी टीम कुछ समय बाद निष्क्रिय हो जाए, तो उसका असर सीधे पन्ने के संपर्क पर पड़ता है। इसलिए पन्ना समिति की व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि किसी एक सदस्य की अनुपस्थिति से पूरा काम रुक न जाए।

कार्यकर्ता के निष्क्रिय होने के कई कारण हो सकते हैं—व्यवसाय, नौकरी, पारिवारिक जिम्मेदारी, स्वास्थ्य, स्थान परिवर्तन या समय की कमी। संगठन के लिए महत्वपूर्ण यह नहीं कि कार्यकर्ता क्यों निष्क्रिय हुआ, बल्कि यह है कि उसके हिस्से की जिम्मेदारी आगे कौन और कैसे संभालेगा।

पन्ना प्रमुख निष्क्रिय हो तो?

यदि पन्ना प्रमुख कुछ समय के लिए सक्रिय नहीं रह पाता, तो पन्ना समिति के सदस्य आपसी समन्वय से उसके पन्ने का संपर्क बनाए रखें।

उप-प्रमुख को तत्काल समन्वय की जिम्मेदारी दी जा सकती है। अन्य सदस्य अपने-अपने संपर्क क्षेत्र को संभालें और आवश्यक जानकारी एक-दूसरे तक पहुँचाते रहें।

इसका अर्थ यह नहीं कि पन्ना प्रमुख का महत्व कम हो गया। बल्कि इसका अर्थ है कि पन्ना प्रमुख ने ऐसी टीम तैयार की है जो उसकी अनुपस्थिति में भी संगठन का काम जारी रख सकती है।

समिति का सदस्य निष्क्रिय हो तो?

किसी एक सदस्य के सक्रिय न रहने पर उसकी जिम्मेदारी शेष सदस्यों में अस्थायी रूप से बाँटी जा सकती है।

इसमें सबसे जरूरी बात है—निष्क्रियता को स्थायी स्थिति न बनने देना।

यदि कोई सदस्य लंबे समय तक उपलब्ध नहीं है, तो उसके स्थान पर सक्रिय कार्यकर्ता को जिम्मेदारी देने पर विचार किया जाना चाहिए।

व्यक्ति नहीं, व्यवस्था महत्वपूर्ण

पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति का उद्देश्य किसी एक व्यक्ति को अपरिहार्य बनाना नहीं है। असली सफलता तब है, जब एक कार्यकर्ता की अनुपस्थिति में भी टीम अपनी जिम्मेदारी निभाती रहे।

यही व्यवस्था संगठन को चुनावी समय की अस्थायी टीम से आगे ले जाकर वर्षभर सक्रिय संगठनात्मक नेटवर्क में बदलती है।

एंटी-इनकंबेंसी के बीच पन्ना प्रमुख की भूमिका

असंतोष को टकराव नहीं, संवाद और सेवा में बदलना

संगठन सूत्र

"मैं एंटी-इनकंबेंसी से इनकार नहीं करता, लेकिन यदि आप अपने वादे पूरे करते हैं और लोगों की अपेक्षाओं पर खरे उतरते हैं, तो सकारात्मकता का वोट बैंक बनता है।" — ***अमित शाह (केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री)***

चुनाव के दौरान संगठन के सामने केवल समर्थकों को सक्रिय रखने की चुनौती नहीं होती। कई बार सरकार, स्थानीय जनप्रतिनिधि, प्रशासनिक व्यवस्था अथवा स्थानीय समस्याओं को लेकर लोगों में असंतोष भी दिखाई देता है। इसी स्थिति को सामान्य राजनीतिक भाषा में एंटी-इनकंबेंसी कहा जाता है।

ऐसे समय में पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति की भूमिका और महत्वपूर्ण हो जाती है। क्योंकि असंतोष का सामना केवल बड़े मंच से दिए गए भाषण से नहीं, बल्कि घर-घर बने संबंध और निरंतर संवाद से किया जा सकता है।

पन्ना प्रमुख अपने पन्ने के परिवारों को केवल चुनाव के समय याद न करे। यदि वह वर्षभर उनके बीच रहा है, उनकी समस्याएँ सुनी हैं और सुख-दुःख में साथ खड़ा हुआ है, तो चुनाव के समय कठिन सवालों का सामना करने का विश्वास भी उसके पास होता है।

पन्ना समिति बने संवाद की टीम

एंटी-इनकंबेंसी की स्थिति में एक पन्ना प्रमुख पर जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। इसलिए पन्ना समिति के सदस्य उसके सहयोगी बनकर अलग-अलग परिवारों से संवाद बनाए रख सकते हैं।

किस परिवार में असंतोष है?
किस परिवार की समस्या स्थानीय है?
कहाँ सरकारी योजना की जानकारी नहीं पहुँची?
कहाँ केवल गलतफहमी है?
कहाँ दोबारा संवाद की जरूरत है?

इन जानकारियों को व्यवस्थित ढंग से पन्ना प्रमुख तक पहुँचाना पन्ना समिति को केवल चुनावी टीम से आगे ले जाता है।

चुनाव के दिन नहीं, पूरे वर्ष की परीक्षा

एंटी-इनकंबेंसी के समय अचानक घर-घर जाकर समर्थन माँगना कठिन हो सकता है। इसके विपरीत, जिस परिवार के साथ वर्षभर संपर्क रहा हो, वहाँ बातचीत का रास्ता पहले से खुला रहता है।

इसलिए पन्ना प्रमुख की असली तैयारी चुनाव की तारीख घोषित होने से पहले शुरू होती है।

सेवा हो, सामाजिक कार्यक्रम हो, परिवार का सुख-दुःख हो या स्थानीय समस्या—इन अवसरों पर बना संपर्क चुनाव के समय संगठन के लिए विश्वास की पूँजी बनता है।

फोटो कैप्शन: "मतदाताओं की बात सुनते और स्थानीय समस्याओं को समझते पन्ना प्रमुख एवं पन्ना समिति के कार्यकर्ता—संगठन में संवाद और विश्वास की निरंतरता का प्रयास।"

मत से पहले मन जीतिए

सुख-दुःख में खड़ा कार्यकर्ता ही बनाता है स्थायी विश्वास

संगठन सूत्र

"संगठन की असली ताकत जब कार्यकर्ता सीधे जनता के सु ख-दुख से जुड़ता है, तब संगठन अजेय बनता है।"
— ***विनोद तावड़े (राष्ट्रीय महासचिव) भाजपा***

पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति की पहचान केवल चुनाव के समय घर-घर पहुँचने से नहीं बनती। उनकी असली पहचान तब बनती है, जब चुनाव सामने न हो और फिर भी कार्यकर्ता परिवारों के बीच मौजूद रहे।

किसी परिवार में विवाह हो, बीमारी हो, दुर्घटना हो, बच्चे की शिक्षा का विषय हो, रोजगार की चिंता हो या कोई पारिवारिक संकट—ऐसे अवसरों पर संवेदना और सहयोग के साथ खड़ा होना सामाजिक संबंध को मजबूत करता है।

यही वह अंतर है, जो "मतदाता से संपर्क" को "परिवार से संबंध" में बदल देता है।

संपर्क से संबंध तक

चुनाव के समय किया गया संपर्क सीमित हो सकता है, लेकिन वर्षभर का आत्मीय व्यवहार लंबे समय तक याद रहता है।

पन्ना प्रमुख को अपने पन्ने के परिवारों की सामान्य सामाजिक स्थिति की जानकारी रखने का प्रयास करना चाहिए। पन्ना समिति के सदस्य भी अपने-अपने संपर्क क्षेत्र में परिवारों के साथ सहज संबंध बनाए रखें।

इसका अर्थ यह नहीं कि प्रत्येक समस्या का समाधान कार्यकर्ता के पास होना चाहिए। कई बार सिर्फ समय पर पहुँचना, बात सुनना और उचित सहयोग का रास्ता बताना भी परिवार के लिए महत्वपूर्ण होता है।

सेवा का अवसर, प्रचार का माध्यम नहीं

सुख-दुःख में परिवार के साथ खड़े होने का उद्देश्य राजनीतिक लाभ लेना नहीं होना चाहिए। सेवा तभी प्रभावी होती है, जब उसमें निस्वार्थ भाव और मानवीय संवेदना दिखाई दे।

पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति यदि समाज के बीच इसी दृष्टि से काम करते हैं, तो संगठन की छवि केवल चुनावी गतिविधियों तक सीमित नहीं रहती।

एक परिवार के साथ बना आत्मीय संबंध आगे चलकर पूरे मोहल्ले में संगठन के प्रति सकारात्मक वातावरण बनाने में भूमिका निभा सकता है।

पन्ना प्रमुख की असली पहचान

पन्ना प्रमुख के पास मतदाता सूची में दर्ज नामों की जानकारी हो सकती है, लेकिन संगठन की वास्तविक शक्ति तब बनती है, जब उन नामों के पीछे मौजूद परिवारों और उनकी भावनाओं को समझने का प्रयास किया जाए।

इसीलिए पन्ना प्रमुख को केवल चुनावी कार्यकर्ता नहीं, बल्कि अपने क्षेत्र में संगठन और समाज के बीच एक संवेदनशील सेतु के रूप में काम करना चाहिए।

अध्याय – 4

पन्ने के गणित का आविष्कार

सूक्ष्म संगठन से विराट विजय तक

संगठन सूत्र

"बूथ पर की गई छोटी-छोटी संगठनात्मक तैयारियाँ ही बड़े चुनावी परिणाम तय करती हैं।" ***— अमित शाह (केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री)***

बड़ा चुनाव हमेशा बड़े मंच से नहीं जीता जाता। उसकी नींव उन छोटी-छोटी संगठनात्मक इकाइयों पर तैयार होती है, जहाँ कार्यकर्ता मतदाता से सीधे जुड़ा होता है। पन्ना उसी सूक्ष्म संगठन की सबसे छोटी और महत्वपूर्ण इकाइयों में से एक है।

मतदाता सूची का एक पन्ना केवल नामों की सूची नहीं है। उसके पीछे अनेक परिवार, उनकी आवश्यकताएँ, उनकी अपेक्षाएँ और उनसे जुड़ने की संभावनाएँ होती हैं। जब उस पन्ने की जिम्मेदारी एक कार्यकर्ता को दी जाती है और उसके साथ पन्ना समिति की टीम सक्रिय होती है, तो संगठन की पहुँच घर-घर तक व्यवस्थित रूप से बनाई जा सकती है।

पन्ने से बूथ तक

मान लीजिए किसी विधानसभा क्षेत्र में 300 बूथ हैं और प्रत्येक बूथ पर औसतन 35 पन्ने हैं।

तो— 300 बूथ × 35 पन्ने = 10,500 पन्ने

यदि प्रत्येक पन्ने पर एक पन्ना प्रमुख और उसके सहयोग के लिए पन्ना समिति सक्रिय हो, तो एक विधानसभा क्षेत्र में हजारों छोटी संगठनात्मक इकाइयाँ तैयार हो जाती हैं।

यही है पन्ने का गणित

1 विधानसभा
↓
300 बूथ
↓
10,500 पन्ने
↓
10,500 पन्ना प्रमुख
↓
10,500 पन्ना समितियाँ
↓
लाखों परिवारों तक संपर्क

सशक्त बूथ संगठन

यह संख्या केवल गणना नहीं है। यह बताती है कि बड़े चुनाव को छोटे-छोटे दायित्वों में बाँटकर संगठन किस तरह जमीन तक पहुँच सकता है।

एक पन्ना, एक जिम्मेदारी

पन्ना प्रमुख अपने पन्ने को केवल चुनावी जिम्मेदारी न माने। वह जितने परिवारों की जिम्मेदारी लेता है, उतने ही परिवार उसके संगठनात्मक संपर्क का क्षेत्र बन जाते हैं।

पन्ना समिति इस संपर्क को और व्यापक बनाती है। एक व्यक्ति की जिम्मेदारी जब टीम में विभाजित होती है, तो संपर्क अधिक नियमित और व्यवस्थित हो सकता है।

यही कारण है कि पन्ने का गणित अंततः कार्यकर्ताओं का गणित है।

लेखक की सोच

मेरी दृष्टि में पन्ने का गणित केवल 30, 60 या 120 मतदाताओं की संख्या नहीं है। यह उस जिम्मेदारी का गणित है, जिसमें संगठन यह तय करता है कि उसके किसी भी परिवार तक पहुँचने की जिम्मेदारी अनदेखी न रह जाए। “बड़ी जीत का रास्ता बड़े आंकड़ों से नहीं, छोटी-छोटी जिम्मेदारियों को ईमानदारी से निभाने से बनता है।”

महिला सशक्तिकरण और पन्ना प्रमुख

नारी शक्ति से परिवार तक, परिवार से मजबूत बूथ तक

संगठन सूत्र

*"भारत अब महिला विकास से आगे बढ़कर महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास के मार्ग पर चल रहा है।" — **नरेंद्र मोदी (प्रधानमंत्री)***

पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति की ताकत तभी पूरी होती है, जब समाज के हर वर्ग की भागीदारी उसमें दिखाई दे। महिलाओं की सक्रिय भागीदारी संगठन को परिवारों तक पहुँचने का एक स्वाभाविक और आत्मीय माध्यम देती है।

कई परिवारों में घर से जुड़े निर्णयों, सामाजिक संबंधों और स्थानीय गतिविधियों में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। ऐसे में महिला कार्यकर्ता अपने क्षेत्र की महिलाओं और परिवारों से सहज संवाद स्थापित कर सकती हैं।

इसलिए महिला को केवल "महिला मतदाता तक पहुँचने का माध्यम" मानना पर्याप्त नहीं है। उसे स्वयं संगठन की सक्रिय कार्यकर्ता, पन्ना प्रमुख या पन्ना समिति की जिम्मेदार सदस्य के रूप में आगे लाना अधिक महत्वपूर्ण है।

मजबूत जनसंपर्क

ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष रूप से यह भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है, जहाँ पुरुष रोजगार या व्यवसाय के कारण दिनभर घर से बाहर रहते हैं। महिला कार्यकर्ता परिवार की महिलाओं से सहजता से संवाद स्थापित कर सकती हैं और पन्ना प्रमुख तक आवश्यक जानकारी पहुँचा सकती हैं।

पन्ना प्रमुख बने महिला कार्यकर्ता

महिला की भूमिका केवल पन्ना समिति की सदस्य तक सीमित क्यों रहे?

जहाँ उपयुक्त हो, वहाँ महिलाओं को स्वयं पन्ना प्रमुख की जिम्मेदारी दी जा सकती है। इससे संगठन को नेतृत्व का नया आधार मिलता है और महिलाओं के बीच संपर्क अधिक स्वाभाविक बनता है।

एक सक्रिय महिला पन्ना प्रमुख—

- अपने पन्ने के परिवारों से नियमित संपर्क रख सकती है।
- महिलाओं की स्थानीय समस्याओं को समझ सकती है।
- सामाजिक कार्यक्रमों में सहभागिता बढ़ा सकती है।
- पन्ना समिति की महिला सदस्यों को सक्रिय कर सकती है।
- परिवारों और संगठन के बीच आत्मीय संवाद का माध्यम बन सकती है।

लेखक की सोच

मेरी दृष्टि में महिला को संगठन तक लाना ही पर्याप्त नहीं है; उसे संगठन की जिम्मेदारी देना ज्यादा महत्वपूर्ण है। जिस दिन किसी पन्ने की महिला कार्यकर्ता अपने क्षेत्र की टीम का नेतृत्व करने लगेगी, उस दिन पन्ना समिति केवल संख्या नहीं, बल्कि सामाजिक शक्ति बन जाएगी।

Gen Z और पन्ना प्रमुख

नई पीढ़ी, नई सोच और नया संगठन

संगठन सूत्र

"जब युवा कार्यकर्ता अनुशासन और अध्ययन के साथ मैदान में उतरता है, तो संगठन का प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है।"
— *नितिन नवीन* (राष्ट्रीय अध्यक्ष) भाजपा

Gen Z केवल नई पीढ़ी का नाम नहीं है। यह वह पीढ़ी है जिसने तकनीक, इंटरनेट और डिजिटल दुनिया धरती पर जन्म लेते ही जानने लगता है। उसके लिए सूचना पाने, विचार रखने और लोगों से जुड़ने के तरीके पहले की पीढ़ियों से अलग हैं। संगठन के लिए इस बदलाव को समझना जरूरी है, क्योंकि इसी पीढ़ी में आने वाले समय के कार्यकर्ता और नेतृत्व तैयार होंगे।

पन्ना प्रमुख की जिम्मेदारी में Gen Z की भागीदारी इसीलिए उपयोगी हो सकती है। युवा कार्यकर्ता अपने आसपास के युवाओं और प्रथम मतदाताओं से आसानी से जुड़ सकता है। कॉलेज, रोजगार, प्रतियोगी परीक्षाएँ, खेल, स्वरोजगार और नए व्यवसाय जैसे विषय उसके लिए परिचित हैं। इसलिए वह अपने आयु वर्ग के लोगों के साथ बिना किसी औपचारिकता के बातचीत शुरू कर सकता है।

लेकिन युवा कार्यकर्ता को केवल चुनावी प्रचार तक सीमित रखना उसके सामर्थ्य का पूरा उपयोग नहीं होगा। उसे मतदाता सूची समझने, परिवारों से संपर्क करने, प्रथम मतदाताओं से बात करने और बूथ की गतिविधियों में जिम्मेदारी देने की जरूरत है। सामाजिक और सेवा कार्यों में भागीदारी से भी उसे लोगों के बीच काम करने का अनुभव मिलता है।

Gen Z की तकनीकी समझ पन्ना प्रमुख के काम में एक अतिरिक्त सुविधा दे सकती है। सूचना जल्दी पहुँचाना, युवाओं से डिजिटल माध्यम पर संपर्क रखना

और किसी गतिविधि की जानकारी साझा करना उसके लिए सहज है। फिर भी पन्ना प्रमुख का मूल काम केवल डिजिटल माध्यम से पूरा नहीं हो सकता।

मोबाइल पर संदेश भेजना आसान है, लेकिन किसी परिवार के घर जाकर उसकी बात सुनना अलग अनुभव है। आमने-सामने की बातचीत में लोगों की चिंता, अपेक्षा और नाराजगी को बेहतर ढंग से समझा जा सकता है। इसलिए Gen Z के युवा कार्यकर्ता के लिए तकनीक और व्यक्तिगत संपर्क, दोनों जरूरी हैं।

नई पीढ़ी को संगठन से जोड़ने का अर्थ केवल युवाओं की संख्या बढ़ाना नहीं है। उन्हें जिम्मेदारी देकर काम का अनुभव देना अधिक जरूरी है। जब कोई युवा अपने पन्ने के परिवारों को जानता है, प्रथम मतदाताओं से संवाद करता है और बूथ की जिम्मेदारी निभाता है, तभी उसकी ऊर्जा संगठन की स्थायी ताकत में बदलती है।

मेरी दृष्टि में Gen Z की सबसे बड़ी उपयोगिता उसकी तकनीकी समझ और नई सोच में है। इस क्षमता को जब जमीन से जुड़े संगठनात्मक काम का अनुभव मिलता है, तब एक नई पीढ़ी केवल कार्यकर्ता नहीं बनती, बल्कि आगे की जिम्मेदारियों के लिए तैयार होती है।

लेखक की सोच

मेरी दृष्टि में Gen Z को संगठन से जोड़ने का अर्थ केवल युवा चेहरों की संख्या बढ़ाना नहीं है। असली सफलता तब होगी, जब यही युवा तकनीक की अपनी क्षमता को पन्ने, परिवार और बूथ की जमीनी जिम्मेदारी से जोड़ेंगे।

प्रथम मतदाता और पन्ना प्रमुख

पहला मत, लोकतंत्र से पहला जुड़ाव

संगठन सूत्र

"युवा शक्ति की ऊर्जा ही देश की प्रगति का असली इंजन है।"
— योगी आदित्यनाथ

हर चुनाव में एक नया वर्ग लोकतांत्रिक प्रक्रिया से जुड़ता है—प्रथम मतदाता। 18 वर्ष की आयु पूरी कर पहली बार मतदान करने वाला युवा केवल मतदाता सूची में जुड़ा एक नया नाम नहीं है; वह लोकतंत्र की प्रक्रिया में प्रवेश करने वाला नया नागरिक है।

पन्ना प्रमुख के लिए यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि उसके पन्ने पर कौन-कौन से युवा पहली बार मतदान करने जा रहे हैं। उनके साथ समय रहते संवाद स्थापित करना और मतदान की प्रक्रिया से परिचित कराना संगठनात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है।

पहला संवाद, पहली जिम्मेदारी

प्रथम मतदाता से संपर्क केवल मतदान की तारीख बताने तक सीमित नहीं होना चाहिए। उसके साथ सहज संवाद बनाया जाए, उसकी जिज्ञासाएँ सुनी जाएँ और उसे उसके लोकतांत्रिक अधिकार एवं जिम्मेदारी की जानकारी दी जाए।

प्रथम मतदाता को केवल वोट न समझें

पहली बार मतदान करने वाला युवा आगे चलकर परिवार, समाज और संगठन में प्रभावशाली भूमिका निभा सकता है। इसलिए उसके साथ पहला संपर्क सम्मान, सकारात्मकता और लोकतांत्रिक जागरूकता पर आधारित होना चाहिए।

पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति ऐसे युवाओं को मतदान प्रक्रिया की सामान्य जानकारी देने, आवश्यक निर्वाचन संबंधी जानकारी तक पहुँचाने और मतदान के प्रति जागरूक करने का माध्यम बन सकते हैं।

यहाँ उद्देश्य किसी युवा की स्वतंत्र राजनीतिक पसंद को प्रभावित करना नहीं, बल्कि उसे जागरूक और जिम्मेदार मतदाता के रूप में लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सहभागी बनाना है।

प्रथम मतदाता से संवाद के तीन चरण

पहचान: अपने पन्ने के प्रथम मतदाताओं को समय रहते पहचानें।

संवाद: उनसे सहजता से संपर्क करें और मतदान प्रक्रिया संबंधी जानकारी साझा करें।

सहभागिता: उन्हें लोकतंत्र के इस महत्वपूर्ण अवसर में भाग लेने के लिए प्रेरित करें।

लेखक की सोच

"पहला मत केवल अधिकार नहीं, जिम्मेदारी की पहली अनुभूति भी है।"

वरिष्ठ नागरिक और दिव्यांग मतदाता

सम्मान, सहयोग और सुगम मतदान

संगठन सूत्र

"संगठन केवल चुनावी मशीनरी नहीं है; संकट के समय समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचना ही राजनीति का असली धर्म है।"
— रत्नाकर जी (प्रदेश संगठन महामंत्री, गुजरात)

लोकतंत्र तभी मजबूत होता है, जब प्रत्येक पात्र नागरिक बिना किसी बाधा के अपने मताधिकार का प्रयोग कर सके। वरिष्ठ नागरिकों और दिव्यांग मतदाताओं के लिए मतदान प्रक्रिया को सहज, सम्मानजनक और सुगम बनाना इसलिए महत्वपूर्ण है।

पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति अपने क्षेत्र में ऐसे मतदाताओं की आवश्यकताओं को पहले से समझ सकते हैं। किसी को मतदान केंद्र की जानकारी चाहिए, किसी को प्रक्रिया समझने में सहायता चाहिए और किसी को उपलब्ध आधिकारिक सुविधाओं की जानकारी की आवश्यकता हो सकती है।

संवेदनशील संपर्क के चार चरण

पहचान: अपने क्षेत्र में वरिष्ठ नागरिकों और दिव्यांग मतदाताओं की आवश्यकताओं को समझें।

संवाद: सम्मानपूर्वक उनकी बात सुनें और आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराएँ।

मार्गदर्शन: निर्वाचन आयोग द्वारा उपलब्ध आधिकारिक सुविधाओं और मतदान प्रक्रिया की जानकारी दें।

सहयोग: कानूनी एवं निर्वाचन नियमों के दायरे में रहते हुए उन्हें सुगम मतदान के लिए उपलब्ध व्यवस्थाओं तक पहुँचने में मदद करें।

सम्मान पहले, राजनीति बाद में

वरिष्ठ नागरिकों का अनुभव और दिव्यांग नागरिकों का आत्मसम्मान किसी भी राजनीतिक संपर्क से ऊपर है। उनसे संवाद करते समय उनकी स्वतंत्र राजनीतिक पसंद का सम्मान करना आवश्यक है।

सहायता का उद्देश्य मतदान कराना हो, किसी विशेष दल या उम्मीदवार के पक्ष में प्रभावित करना नहीं।

यही व्यवहार लोकतांत्रिक संस्कृति को मजबूत करता है।

लेखक की सोच

वरिष्ठ नागरिक और दिव्यांग मतदाता केवल मतदाता सूची की एक श्रेणी नहीं, बल्कि हमारे सामाजिक दायित्व का हिस्सा हैं। उनके प्रति सम्मान, संवेदनशीलता और आवश्यक सहयोग ही लोकतांत्रिक सहभागिता की सच्ची भावना है।

अफवाहों के दौर में सजग कार्यकर्ता

सत्यापन, संयम और जिम्मेदार संवाद

संगठन सूत्र

"पन्ना प्रमुख और बूथ कार्यकर्ता हमारे संगठन की अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण कड़ी हैं। अगर वह पूरी तरह सजग तो कोई भी भ्रामक प्रचार संगठन को नुकसान नहीं पहुँचा सकता।"

— तरुण चुग (राष्ट्रीय महासचिव) भाजपा

चुनाव के दौरान सूचनाएँ बहुत तेजी से फैलती हैं। सोशल मीडिया संदेश, वीडियो, ऑडियो और मौखिक चर्चाओं के माध्यम से कई बार अधूरी, भ्रामक या अपुष्ट जानकारी भी लोगों तक पहुँच जाती है। ऐसे समय में कार्यकर्ता की पहली जिम्मेदारी सूचना को आगे बढ़ाना नहीं, बल्कि उसकी सत्यता जाँचना है।

पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति अपने क्षेत्र में लोगों के बीच नियमित संपर्क में रहते हैं। इसलिए यदि किसी परिवार तक कोई भ्रमित करने वाली सूचना पहुँचती है, तो उसे शांतिपूर्वक सुनना, आधिकारिक स्रोत से तथ्य की पुष्टि करना और सही जानकारी उपलब्ध कराना जिम्मेदार संवाद का हिस्सा है।

अफवाह से पहले सत्यापन

सूचना मिली

↓

स्रोत की जाँच

↓

आधिकारिक जानकारी से पुष्टि

↓

गलत हो तो आगे न बढ़ाएँ

↓

तथ्यपूर्ण और संयमित संवाद

तीन बातें हमेशा याद रखें

1. **अपुष्ट संदेश आगे न बढ़ाएँ।**
2. **किसी व्यक्ति या समुदाय के बारे में भ्रामक आरोपों से बचें।**
3. **चुनाव संबंधी जानकारी के लिए निर्वाचन आयोग और अधिकृत स्रोतों को प्राथमिकता दें।**

लेखक की सोच

चुनाव में विचारों का मुकाबला होना लोकतंत्र की स्वाभाविक प्रक्रिया है, लेकिन अफवाह और गलत सूचना लोकतांत्रिक संवाद को कमजोर करती है। इसलिए कार्यकर्ता की पहचान उसके संयम, सत्यापन और जिम्मेदार व्यवहार से होनी चाहिए।

सरकारी योजनाओं के लाभार्थियों से संवाद

जनसेवा से जनविश्वास तक

संगठन सूत्र

"देश का लाभार्थी वर्ग ही 'विकसित भारत' की सबसे बड़ी ताकत है।"
— *नरेंद्र मोदी* (प्रधानमंत्री)

सरकारी योजनाओं का उद्देश्य पात्र नागरिकों तक सुविधाएँ और सहायता पहुँचाना है। पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति अपने क्षेत्र के परिवारों से नियमित सामाजिक संपर्क के दौरान यह समझ सकते हैं कि किन लोगों को किसी योजना का लाभ मिला है और किन पात्र परिवारों को अभी जानकारी या प्रक्रिया संबंधी सहायता की आवश्यकता है।

उज्ज्वला योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, आयुष्मान भारत, किसान सम्मान निधि, जन-धन योजना, जल जीवन मिशन, स्वनिधि योजना, छात्रवृत्ति और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं जैसी योजनाओं के बारे में सही और आधिकारिक जानकारी नागरिकों तक पहुँचाना उपयोगी सामाजिक कार्य हो सकता है।

लाभार्थी से संपर्क का उद्देश्य

लाभार्थी से संपर्क केवल यह जानने तक सीमित न रहे कि उसे योजना का लाभ मिला या नहीं। यह भी समझना चाहिए कि—

लाभ मिला या नहीं
↓
प्रक्रिया में कोई समस्या तो नहीं
↓
आवश्यक जानकारी उपलब्ध है या नहीं
↓
समस्या होने पर संबंधित विभाग की जानकारी
↓
समाधान की दिशा में सहायता

सेवा का अर्थ केवल जानकारी देना नहीं

कई बार नागरिक किसी योजना के पात्र होते हुए भी आवेदन प्रक्रिया, दस्तावेज, स्थानीय व्यवस्था अथवा जानकारी के अभाव में लाभ नहीं ले पाते। ऐसे मामलों में कार्यकर्ता को स्वयं कोई सरकारी निर्णय देने के बजाय संबंधित विभाग, अधिकृत पोर्टल या सक्षम अधिकारी तक सही जानकारी पहुँचाने में सहायता करनी चाहिए।

इससे कार्यकर्ता समाज और प्रशासन के बीच एक जिम्मेदार संवाद-सहयोगी की भूमिका निभा सकता है।

यहाँ एक बात विशेष रूप से महत्वपूर्ण है—सरकारी योजना का लाभ किसी नागरिक का अधिकार या पात्रता के आधार पर मिलने वाली सुविधा है; उसे किसी राजनीतिक समर्थन से जोड़ना उचित नहीं है।

लेखक की सोच

"प्रचार से पहचान बन सकती है, लेकिन सेवा से संबंध बनता है।"

मतदान दिवस की कार्ययोजना

तैयारी पहले, अनुशासन पूरे दिन

संगठन सूत्र

"चुनाव लोकतंत्र का उत्सव है और अधिक से अधिक मतदान ही उसकी सबसे बड़ी शक्ति है।" — ***नरेंद्र मोदी*** **(प्रधानमंत्री)**

मतदान दिवस पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति के लिए पूरे वर्ष की तैयारी की सबसे महत्वपूर्ण परीक्षा है। इस दिन की सफलता केवल मतदान केंद्र पर उपस्थिति से नहीं, बल्कि पहले से की गई तैयारी, स्पष्ट जिम्मेदारी और पूरे दिन के अनुशासन से तय होती है।

पन्ना प्रमुख को अपने पन्ने के पात्र मतदाताओं की सामान्य जानकारी पहले से व्यवस्थित रखनी चाहिए। पन्ना समिति के सदस्य भी अपने-अपने क्षेत्र में संपर्क की जिम्मेदारी स्पष्ट रूप से बाँट लें, ताकि किसी परिवार तक जानकारी या आवश्यक मार्गदर्शन पहुँचाने में भ्रम न हो।

मतदान दिवस से पहले

पन्ने की समीक्षा

↓

पात्र मतदाताओं की जानकारी

↓

जिम्मेदारियों का विभाजन

↓

मतदान केंद्र एवं आवश्यक जानकारी साझा करना

↓

सुव्यवस्थित मतदान दिवस

मतदान के दिन पाँच जरूरी बातें

1. सुबह की तैयारी: मतदान शुरू होने से पहले टीम अपने निर्धारित क्षेत्र और जिम्मेदारियों की समीक्षा करे।

2. नियमित संपर्क: जिन पात्र मतदाताओं को मतदान प्रक्रिया या केंद्र संबंधी जानकारी की आवश्यकता हो, उन्हें समय पर सही जानकारी दी जाए।

3. विशेष आवश्यकता वाले मतदाता: वरिष्ठ नागरिकों, दिव्यांग मतदाताओं और अन्य जरूरतमंद नागरिकों को निर्वाचन नियमों के अनुरूप उपलब्ध सुविधाओं की जानकारी दिलाने में सहयोग किया जाए।

4. संयम और अनुशासन: मतदान केंद्र और उसके आसपास निर्वाचन आयोग के नियमों का पूर्ण पालन हो। किसी प्रकार का विवाद, दबाव या अनुचित गतिविधि न हो।

5. दिन का समापन: मतदान समाप्ति के बाद टीम अपने क्षेत्र की गतिविधियों की समीक्षा करे और आवश्यक संगठनात्मक जानकारी निर्धारित व्यवस्था के अनुसार साझा करे।

मतदान दिवस का मूल मंत्र

संपर्क • अनुशासन • संयम • जिम्मेदारी

पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति का काम मतदाता की स्वतंत्र पसंद का सम्मान करते हुए उसे मतदान प्रक्रिया से जुड़ी सही जानकारी और आवश्यक मार्गदर्शन उपलब्ध कराना है।

मतदान के दिन किसी मतदाता पर दबाव डालना, उसकी पसंद जानने का प्रयास करना अथवा मतदान केंद्र के नियमों का उल्लंघन करना संगठनात्मक अनुशासन और लोकतांत्रिक मर्यादा—दोनों के विपरीत है।

लेखक की सोच

"तैयारी हमारी जिम्मेदारी है, निर्णय मतदाता का अधिकार।"

मतदान के बाद भी संगठन की परीक्षा

परिणाम से पहले समीक्षा, परिणाम के बाद सीख

संगठन सूत्र

"दल दलदल में फंस सकता है, लेकिन निष्ठावान कार्यकर्ता अपनी मेहनत और संकल्प से उस दलदल से भी कमल खिलाने की क्षमता रखता है।"
— अटल बिहारी वाजपेयी (पूर्व प्रधानमंत्री)

मतदान समाप्त होते ही चुनावी जिम्मेदारी समाप्त नहीं हो जाती। वास्तव में मतदान के बाद का समय संगठन के लिए आत्ममंथन और सीख का समय होता है। पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति ने पूरे अभियान के दौरान जो अनुभव प्राप्त किए, उन्हें व्यवस्थित रूप से समझना भविष्य के संगठनात्मक कार्य को बेहतर बनाने में उपयोगी हो सकता है।

किस पन्ने पर संपर्क व्यवस्था अच्छी रही? कहाँ टीम सक्रिय नहीं हो पाई? किन परिवारों तक सामान्य संपर्क नहीं बन सका? किस स्थान पर पन्ना समिति ने बेहतर समन्वय किया? ऐसे सवालों के जवाब अगली तैयारी की दिशा तय कर सकते हैं।

परिणाम से पहले समीक्षा

मतदान के बाद कार्यकर्ताओं के अनुभवों को केवल जीत या हार के चश्मे से नहीं देखना चाहिए। संगठनात्मक दृष्टि से यह समझना अधिक महत्वपूर्ण है कि जमीन पर बनाई गई व्यवस्था कितनी प्रभावी रही।

हार हो या जीत—सीख जरूरी

चुनावी परिणाम संगठन के लिए महत्वपूर्ण होते हैं, लेकिन प्रत्येक चुनाव अपने साथ e दर्ज करना इसलिए आवश्यक है, ताकि अगली बार वही कठिनाई दोबारा सामने न आए।

समीक्षा के पाँच सवाल

1. क्या पन्ना प्रमुख सक्रिय था?
2. क्या पन्ना समिति वास्तव में टीम की तरह काम कर रही थी?
3. क्या जिम्मेदारियाँ स्पष्ट थीं?
4. क्या मतदान दिवस की तैयारी समय पर हुई?
5. अगली बार क्या बेहतर किया जा सकता है?

लेखक की सोच

मेरी दृष्टि में चुनाव का परिणाम अंतिम अध्याय नहीं, बल्कि अगली संगठनात्मक यात्रा की शुरुआत है। यदि मतदान के बाद कार्यकर्ता बैठकर ईमानदारी से अपनी व्यवस्था की समीक्षा करे, तो हर चुनाव अगली तैयारी को पहले से बेहतर बनाने का अवसर बन सकता है।

"परिणाम बताता है कि क्या हुआ, समीक्षा बताती है कि आगे क्या करना है।"

अध्याय–5

डिजिटल पन्ना प्रमुख

आधुनिक तकनीक और संगठन का भविष्य

संगठन सूत्र

"तकनीक और डिजिटल माध्यम केवल संवाद का जरिया नहीं हैं, बल्कि ये कार्यकर्ताओं और जनता के बीच की दूरी को मिटाकर संगठन को लोकतंत्र के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाने की शक्ति हैं।"

— नरेंद्र मोदी (प्रधानमंत्री)

समय के साथ संगठन की कार्यप्रणाली भी बदलती है। आज सूचना कुछ ही क्षणों में एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँच सकती है। मोबाइल, डिजिटल माध्यम और त्वरित संवाद ने पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति के सामने संपर्क और समन्वय के नए अवसर खोल दिए हैं।

डिजिटल पन्ना प्रमुख का अर्थ केवल मोबाइल या सोशल मीडिया का उपयोग करना नहीं है। इसका उद्देश्य संगठनात्मक कार्य को तेज, व्यवस्थित और समयबद्ध बनाना है।

कार्यक्रमों की सूचना, प्रशिक्षण, सेवा गतिविधियों और जनहित से जुड़ी प्रमाणित जानकारी डिजिटल माध्यमों से कम समय में अधिक लोगों तक पहुँचाई जा सकती है। इससे बूथ, पन्ना समिति और पन्ना प्रमुख के बीच सूचना का प्रवाह भी बेहतर हो सकता है।

लेकिन तकनीक की अपनी सीमा है। डिजिटल माध्यम सूचना पहुँचा सकता है, विश्वास नहीं बना सकता। विश्वास के लिए कार्यकर्ता का व्यवहार, उपलब्धता और निरंतर संपर्क आवश्यक है।

इसलिए आधुनिक पन्ना प्रमुख के लिए दो शक्तियाँ साथ-साथ जरूरी हैं—

तकनीक से गति और संपर्क से विश्वास।

यही संतुलन डिजिटल संगठन को प्रभावी बनाता है।

डिजिटल पन्ना प्रमुख के चार आधार

गति — आवश्यक सूचना समय पर पहुँचाना।
समन्वय — कार्यकर्ताओं के बीच बेहतर तालमेल।
सटीकता — प्रमाणित जानकारी का उपयोग।
संपर्क — डिजिटल माध्यम के साथ जमीनी संबंध बनाए रखना।

लेखक की सोच

तकनीक रास्ता छोटा कर सकती है,
लेकिन विश्वास का रास्ता कार्यकर्ता ही बनाता है।

फेक न्यूज़ के दौर में डिजिटल सतर्कता

पहले सत्यापन, फिर प्रसारण

संगठन सूत्र

"डिजिटल टूल्स और वर्चुअल अभियानों ने कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी बूथ स्तर तक के कार्यकर्ताओं को सक्रिय और एकजुट रखा है।"
— जे.पी. नड्डा

डिजिटल माध्यम ने सूचना को तेज बनाया है, लेकिन इसी तेजी के साथ गलत सूचना फैलने का खतरा भी बढ़ा है। फेक न्यूज़, एडिटेड फोटो, डीपफेक वीडियो और अपुष्ट संदेश किसी भी व्यक्ति तक बहुत कम समय में पहुँच सकते हैं।

ऐसे वातावरण में पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति की जिम्मेदारी केवल सूचना पहुँचाने की नहीं, बल्कि सूचना की विश्वसनीयता सुनिश्चित करने की भी है।

किसी संदेश को आगे बढ़ाने से पहले यह देखना चाहिए कि—

- जानकारी का स्रोत कौन है?
- क्या वह आधिकारिक या विश्वसनीय स्रोत है?
- क्या खबर की पुष्टि किसी अन्य विश्वसनीय माध्यम से होती है?
- फोटो या वीडियो पुराना अथवा संदर्भ से बाहर तो नहीं है?
- क्या शीर्षक और वास्तविक सामग्री में अंतर तो नहीं है?

यदि किसी सूचना पर संदेह हो, तो उसे आगे बढ़ाने की जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए।

डिजिटल संवाद में भाषा भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। राजनीतिक या सामाजिक मतभेद के बावजूद व्यक्तिगत आरोप, अपमानजनक भाषा और अनावश्यक

विवाद से बचना चाहिए। कार्यकर्ता का डिजिटल व्यवहार भी संगठन की सार्वजनिक छवि का हिस्सा बनता है।

डिजिटल सतर्कता के पाँच सूत्र

1. पहले सत्यापन, फिर प्रसारण।
2. आधिकारिक और विश्वसनीय स्रोतों को प्राथमिकता दें।
3. संदिग्ध फोटो, वीडियो या संदेश आगे न बढ़ाएँ।
4. असहमति में भी संयम और शालीनता रखें।
5. गलत सूचना का जवाब तथ्य और प्रमाण से दें।

लेखक की सोच

डिजिटल युग में विश्वसनीय कार्यकर्ता वही है, जो खबर फैलाने से पहले उसकी सच्चाई जाँचता है।

व्हाट्सऐप समूह

संगठन का सबसे तेज़ डिजिटल संपर्क सूत्र

संगठन सूत्र

"आज का संगठन केवल पारंपरिक बैठकों तक सीमित नहीं है। डिजिटल तकनीक ने हमारे पन्ना प्रमुखों और कार्यकर्ताओं को पल भर में एक-दूसरे से जोड़कर भाजपा को विश्व का सबसे बड़ा और संगठित राजनीतिक दल बनाया है।" ***— अमित शाह (केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री)***

आज के समय में व्हाट्सऐप जैसे डिजिटल माध्यम संगठनात्मक संवाद को तेज और व्यवस्थित बनाने में सहायक हैं। पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति इनके माध्यम से कार्यक्रमों, बैठकों, सेवा गतिविधियों और आवश्यक संगठनात्मक सूचनाओं को समय पर साझा कर सकते हैं।

एक व्यवस्थित व्हाट्सऐप समूह का उद्देश्य केवल अधिक संदेश भेजना नहीं, बल्कि सही सूचना को सही समय पर सही कार्यकर्ता तक पहुँचाना होना चाहिए।

समूह में साझा की जाने वाली जानकारी उपयोगी और सत्यापित हो। अनावश्यक संदेश, अपुष्ट समाचार, व्यक्तिगत टिप्पणियों और विवादित सामग्री से बचना चाहिए। किसी गलत सूचना के सामने आने पर उसका जवाब शांत और तथ्यात्मक तरीके से देना अधिक प्रभावी होता है।

डिजिटल समूह कार्यकर्ताओं के बीच त्वरित समन्वय बना सकते हैं, लेकिन वे व्यक्तिगत संबंधों का विकल्प नहीं हैं। आवश्यकता पड़ने पर आमने-सामने संवाद और जमीनी संपर्क बनाए रखना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

प्रभावी व्हाट्सऐप समूह के पाँच सूत्र

1. केवल सत्यापित और उपयोगी जानकारी साझा करें।
2. संगठनात्मक कार्यक्रम और आवश्यक सूचनाओं को प्राथमिकता दें।
3. अनावश्यक बहस और व्यक्तिगत टिप्पणियों से बचें।
4. समूह को सक्रिय रखें, लेकिन संदेशों की अनावश्यक भरमार न करें।
5. डिजिटल संवाद के साथ व्यक्तिगत संपर्क भी बनाए रखें।

लेखक की सोच

संदेश की गति संगठन को जोड़ती है, लेकिन संवाद की गुणवत्ता उसे मजबूत बनाती है।

डिजिटल मतदाता सूची और डेटा प्रबंधन

सटीक जानकारी, सशक्त संगठन

संगठन सूत्र

*"सही डेटा के बिना निर्णय अनुमान पर आधारित हो जाता है; इसलिए हर क्षेत्र में सही डेटा आवश्यक है।" **— शिवराज सिंह चौहान***

आधुनिक संगठन में केवल संपर्क महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि सही और अद्यतन जानकारी भी आवश्यक है। पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति अपने क्षेत्र की मतदाता सूची तथा संगठनात्मक संपर्क संबंधी आवश्यक जानकारी को व्यवस्थित रखकर कार्य को अधिक प्रभावी बना सकते हैं।

मतदाता सूची में नए मतदाताओं का जुड़ना, नाम या पते में संशोधन तथा स्थान परिवर्तन जैसी जानकारी समय-समय पर अद्यतन होती रहती है। इसलिए उपलब्ध आधिकारिक मतदाता सूची से नियमित मिलान करना संगठनात्मक कार्य को अधिक व्यवस्थित बनाने में सहायक हो सकता है।

डिजिटल साधनों का उपयोग करते समय सबसे महत्वपूर्ण बात व्यक्तिगत जानकारी की गोपनीयता और सुरक्षा है। किसी व्यक्ति की निजी जानकारी का अनावश्यक संग्रह, प्रसार या अनुचित उपयोग नहीं होना चाहिए।

डेटा का उद्देश्य केवल संख्या इकट्ठी करना नहीं, बल्कि संगठनात्मक कार्य को व्यवस्थित करना, आवश्यक संपर्क बनाए रखना और क्षेत्र की वास्तविक स्थिति को समझना होना चाहिए।

डिजिटल डेटा प्रबंधन के पाँच सूत्र

1. उपलब्ध आधिकारिक जानकारी को समय-समय पर अद्यतन रखें।
2. नए, संशोधित और स्थानांतरित मतदाताओं की जानकारी का उचित रिकॉर्ड रखें।

3. आवश्यक जानकारी को व्यवस्थित और सुरक्षित रखें।
4. व्यक्तिगत जानकारी की गोपनीयता का सम्मान करें।
5. डिजिटल रिकॉर्ड को जमीनी संपर्क का विकल्प नहीं, सहयोगी बनाएं।

लेखक की सोच

सही डेटा संगठन को दिशा देता है, लेकिन उसकी विश्वसनीयता जिम्मेदार उपयोग से तय होती है।

सरल एप / Saral App

काम की डिजिटल पहचान

संगठन सूत्र

"सरल ऐप केवल एक डिजिटल टूल नहीं है, यह संगठन को नीचे बूथ स्तर तक जीवंत और गतिशील बनाने का माध्यम है। जब एक पन्ना प्रमुख तकनीक से जुड़ता है, तो संगठन की ताकत कई गुना बढ़ जाती है।"
— नरेंद्र मोदी (प्रधानमंत्री)

आधुनिक संगठन में कार्यकर्ता का काम केवल धरातल पर होना ही पर्याप्त नहीं है। संगठन के विभिन्न स्तरों तक उसकी गतिविधियों की जानकारी व्यवस्थित रूप से पहुँचना भी आवश्यक है। इसी आवश्यकता ने संगठनात्मक कार्य में डिजिटल रिपोर्टिंग की भूमिका बढ़ाई है।

SARAL — Sangathan Reporting and Analysis को भाजपा की ऐसी डिजिटल व्यवस्था के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिसके माध्यम से बूथ स्तर के कार्यकर्ता और नेता अपनी गतिविधियों तथा संगठन विस्तार से जुड़ी जानकारी दर्ज कर सकते हैं।

SARAL के माध्यम से संगठनात्मक गतिविधियों को व्यवस्थित रूप से दर्ज करने का उद्देश्य केवल आंकड़े जुटाना नहीं, बल्कि यह समझना भी है कि कहाँ कार्य सक्रिय है, कहाँ अधिक प्रयास की आवश्यकता है और संगठनात्मक गतिविधियों को किस प्रकार बेहतर बनाया जा सकता है।

इसके जरिए बूथ अध्यक्षों, पन्ना प्रमुखों और राष्ट्रीय/राज्य स्तरीय पदाधिकारियों की रियल-टाइम उपस्थिति, कार्यक्रमों (जैसे मन की बात, सदस्यता अभियान, जनसंपर्क) की फोटो अपलोडिंग और रिपोर्टिंग की जाती है।

नमो ऐप कार्यकर्ताओ के लिये क्यो जरूरी है

क्या है इस एप का कार्य

संगठन सूत्र

"NaMo App के माध्यम से करोड़ों देशवासियों से निरंतर जुड़े रहना मेरे लिए सौभाग्य की बात है।" ***— नरेंद्र मोदी (प्रधानमंत्री)***

17 जून 2015 को Narendra Modi Mobile App की शुरुआत हुई। इसके प्रारंभिक रूप में प्रधानमंत्री की गतिविधियों की जानकारी, सीधे संदेश और ईमेल, मन की बात, ब्लॉग, सरकारी योजनाओं और उपलब्धियों की जानकारी तथा विभिन्न कार्यों में सहभागिता जैसे विकल्प दिए गए थे।

समय के साथ NaMo App केवल सूचना प्राप्त करने का माध्यम नहीं रहा। इसमें सर्वेक्षण, सुझाव, संवाद, वीडियो, भाषण, क्विज़, कार्य और सहभागिता जैसी सुविधाएँ जुड़ीं। वर्तमान आधिकारिक ऐप विवरण में भी समाचार, सरकारी उपलब्धियों की जानकारी, मन की बात, वीडियो, विचार साझा करने के मंच, छोटे कार्यों में सहभागिता और सुझाव देने जैसी सुविधाएँ शामिल हैं।

पन्ना प्रमुख और कार्यकर्ता के लिए क्यों जरूरी?

1. **सूचना:** संगठन और सरकार से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी समय पर प्राप्त करना।
2. **मार्गदर्शन:** प्रधानमंत्री के भाषण, संदेश, ब्लॉग और वीडियो से विचार एवं दिशा प्राप्त करना।
3. **सहभागिता:** सर्वेक्षण, क्विज़, डिजिटल गतिविधियों और विभिन्न अभियानों में भाग लेना।

4. **संवाद:** अपने विचार, सुझाव और प्रतिक्रिया साझा करने का अवसर। 2024 में जन मन सर्वेक्षण के माध्यम से नागरिकों से सीधे प्रतिक्रिया माँगी गई थी।
5. **नेटवर्क:** ऐप की आधिकारिक जानकारी के अनुसार उपयोगकर्ता समान रुचि वाले लोगों से जुड़ सकते हैं, समूह बना सकते हैं तथा ऑनलाइन नेटवर्किंग को ऑफलाइन गतिविधियों में बदल सकते हैं।

NaMo App का महत्व केवल यह नहीं कि कार्यकर्ता प्रधानमंत्री या सरकार की जानकारी देख सके। इसकी वास्तविक उपयोगिता तब बढ़ती है, जब डिजिटल जानकारी जमीनी कार्य, सहभागिता और संवाद में बदलती है।

2024 में भाजपा सांसदों के साथ NaMo App को सरकार के काम की जानकारी पहुँचाने और लोगों की प्रतिक्रिया लेने के प्रभावी माध्यम के रूप में उपयोग करने पर चर्चा भी हुई थी।

2018 के दौरान NaMo App के माध्यम से बूथ कार्यकर्ताओं के साथ संवाद को पार्टी के डिजिटल विस्तार का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया गया था।

लेखक की सोच

तकनीक की सबसे बड़ी सफलता तब है, जब वह नेतृत्व की आवाज को बूथ तक और बूथ की ऊर्जा को संगठन से जोड़ दे

महत्वपूर्ण:

लॉन्च: 11 जून 2015

लोकप्रियता: 1 करोड़ से अधिक (10M+) डाउनलोड्स

महत्व: यह भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आधिकारिक ऐप है, जो आम नागरिकों और पार्टी कार्यकर्ताओं को सीधे प्रधानमंत्री से जोड़ने का एक सशक्त डिजिटल माध्यम है।

मुख्य आकर्षण: इस ऐप के जरिए सरकार की योजनाओं के अपडेट्स, 'मन की बात', प्रधानमंत्री के भाषण, ब्लॉग्स और डिजिटल अभियानों से जुड़ने (To-Do Tasks) का अवसर मिलता है।

मन की बात

रेडियो से डिजिटल युग तक जनसंवाद की नई यात्रा

संगठन सूत्र

"मन की बात केवल मेरी बात नहीं है; यह देशवासियों के विचारों, सुझावों और अनुभवों को एक साथ जोड़ने वाला संवाद है।"

— नरेंद्र मोदी (प्रधानमंत्री)

शुरुआत कब हुई?

3 अक्टूबर 2014, विजयादशमी के दिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आकाशवाणी के माध्यम से पहली बार 'मन की बात' कार्यक्रम के जरिए देशवासियों से संवाद किया। शुरुआत से इसका उद्देश्य केवल प्रधानमंत्री का संबोधन करना नहीं, बल्कि देश के अलग-अलग हिस्सों के लोगों के विचार, अनुभव और सुझावों को व्यापक मंच देना भी रहा।

प्रधानमंत्री ने बाद में बताया कि रेडियो को इसलिए चुना गया क्योंकि इसकी पहुँच दूर-दराज के गांवों और सामान्य परिवारों तक भी है। उन्होंने इसे देश की विविधता, लोगों की उपलब्धियों और सकारात्मक प्रयासों से जुड़ने का माध्यम बताया।

क्या उद्देश्य था?

'मन की बात' को शुरू से राजनीतिक भाषण के बजाय सामाजिक संवाद के रूप में प्रस्तुत किया गया। प्रधानमंत्री ने 50वीं कड़ी में कहा था कि कार्यक्रम में राजनीति या सरकार की प्रशंसा को स्थान न देने का संकल्प लिया गया था।

कितनी बड़ी पहुँच?

2023 में IIM रोहतक के अध्ययन के आधार पर सरकार ने बताया कि लगभग 23 करोड़ लोग 'मन की बात' से नियमित रूप से जुड़े थे, जबकि करीब 100 करोड़ लोगों ने इसे कम-से-कम एक बार सुना था।

कार्यक्रम की पहुँच केवल हिंदी या रेडियो तक सीमित नहीं रही। इसे भारतीय भाषाओं और बोलियों में प्रसारित किया गया तथा आकाशवाणी के सैकड़ों केंद्रों के माध्यम से देशभर तक पहुँचाया गया।

सबसे ज्यादा कहाँ देखा-सुना गया?

2023 के IIMC अध्ययन में शामिल 890 मीडिया-सम्बंधित उत्तरदाताओं में 37% ने इंटरनेट आधारित माध्यमों को प्राथमिकता दी, जबकि 15% ने टेलीविजन और 12% ने रेडियो को प्राथमिकता दी। यदि कोई कड़ी छूट जाती थी, तो 63% उत्तरदाताओं ने YouTube को पसंदीदा माध्यम बताया।

एक अलग IIM रोहतक अध्ययन में 19–34 आयु वर्ग के लोगों में मोबाइल के माध्यम से कार्यक्रम देखने-सुनने की प्रवृत्ति विशेष रूप से अधिक पाई गई।

इस यात्रा की खास बात

'मन की बात' की शुरुआत रेडियो से हुई, लेकिन समय के साथ इसका प्रसार टेलीविजन, इंटरनेट, मोबाइल और डिजिटल मंचों तक हुआ।

यानी—

रेडियो → टेलीविजन → मोबाइल → इंटरनेट → व्यापक जनसंवाद

यही बदलाव बताता है कि माध्यम बदल सकते हैं, लेकिन जनता से संवाद की आवश्यकता हमेशा बनी रहती है।

लेखक की सोच

सफल संवाद वही है, जो तकनीक बदलने के साथ अपनी पहुँच भी बढ़ाता जाए।

डिजिटल युग में सतत प्रशिक्षण

सीखता कार्यकर्ता, सशक्त संगठन

संगठन सूत्र

"संगठन जब तकनीक से जुड़ता है, तो उसकी गति और पारदर्शिता बहुगुणी हो जाती है।" ***— नरेंद्र मोदी (प्रधानमंत्री)***

डिजिटल युग में संगठन की कार्यशैली लगातार बदल रही है। नई तकनीक, सोशल मीडिया, डिजिटल संचार और डेटा आधारित कार्यप्रणाली को समझना अब आधुनिक कार्यकर्ता की आवश्यक क्षमता बनता जा रहा है।

पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति के लिए प्रशिक्षण केवल किसी एक कार्यक्रम तक सीमित नहीं होना चाहिए। तकनीक बदलती है, इसलिए सीखने की प्रक्रिया भी निरंतर चलनी चाहिए।

एक कार्यकर्ता को समय के साथ यह समझ विकसित करनी होगी कि डिजिटल माध्यम का उपयोग कैसे किया जाए, सूचना की विश्वसनीयता कैसे जाँची जाए और संगठनात्मक कार्य को अधिक व्यवस्थित कैसे बनाया जाए।

तेजस्वी सूर्या ने भी 21वीं सदी की तकनीकी चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए युवा कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता पर जोर दिया है।

प्रशिक्षण का सूत्र

सीखना → अभ्यास करना → टीम को सिखाना → बेहतर कार्य करना

आधुनिक कार्यकर्ता के पाँच संकल्प

1. नियमित प्रशिक्षण में सहभागिता।
2. नई तकनीक का अभ्यास और उपयोग।
3. डिजिटल माध्यमों की जिम्मेदार समझ।
4. तथ्य आधारित और सकारात्मक संवाद।
5. जो सीखें, उसे अपनी टीम तक पहुँचाएँ।

लेखक की सोच

जो कार्यकर्ता सीखना जारी रखता है, वही बदलते संगठन के साथ आगे बढ़ता है।

मिस्ड कॉल से डिजिटल सदस्यता तक

तकनीक से संगठन विस्तार की नई शुरुआत

संगठन सूत्र

"2014-15 में जब हमने पहली बार मिस्ड-कॉल के जरिए डिजिटल सदस्यता अभियान की शुरुआत की, तो कई लोगों को संदेह था। लेकिन तकनीक के इस प्रयोग ने भाजपा को 10 करोड़ से अधिक सदस्यों के साथ दुनिया की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी बना दिया।"

— अमित शाह (केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री)

2014–15 में भाजपा ने सदस्यता अभियान में डिजिटल तकनीक का बड़े पैमाने पर प्रयोग किया। पारंपरिक कागजी प्रक्रिया के स्थान पर मिस्ड कॉल और डिजिटल माध्यम को सदस्यता से जोड़ने का प्रयास किया गया।

इस प्रयोग ने सदस्यता अभियान को तेज बनाया। इच्छुक व्यक्ति मिस्ड कॉल के माध्यम से अभियान से जुड़ सकता था और आगे की प्रक्रिया डिजिटल माध्यम से पूरी की जाती थी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी स्वयं इस डिजिटल सदस्यता अभियान में मिस्ड कॉल के माध्यम से सदस्य बनने वाले पहले व्यक्ति थे।

इस प्रयोग की खासियत केवल सदस्य संख्या बढ़ाना नहीं थी। डिजिटल प्रक्रिया ने सदस्यता से प्राप्त जानकारी को व्यवस्थित करने और आगे संपर्क, सत्यापन तथा संगठनात्मक संवाद के लिए उपयोग करने की संभावना भी पैदा की।

अमित शाह के अनुसार, डिजिटल सदस्यता का उद्देश्य केवल संख्या बढ़ाना नहीं, बल्कि संगठन को समाज के अधिक व्यापक हिस्से तक पहुँचाना था। तकनीक ने शीर्ष नेतृत्व और जमीनी कार्यकर्ता के बीच सूचना के प्रवाह को भी तेज किया।

फ़ोटो कैप्शन : 1 नवंबर 2014 को नई दिल्ली के 11 अशोक रोड (तत्कालीन भाजपा मुख्यालय) में डिजिटल सदस्यता अभियान का शुभारंभ हुआ था, जहाँ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मोबाइल फोन से टोल-फ्री नंबर पर मिस्ड कॉल देकर सदस्यता ली थी।

लेखक की सोच-

डिजिटल अभियानों के माध्यम से केंद्रीय नेतृत्व को तुरंत पता चलता है कि किस क्षेत्र, वार्ड या राज्य में सदस्यता अभियान अच्छा प्रदर्शन कर रहा है और कहां सुस्ती है।

एक युवा का मिस्ड कॉल पर हुआ पुरुस्कृत

एक प्रयास, जिसने संगठन में पहचान बनाई

संगठन सूत्र

"संगठन में जिम्मेदारी मिले तो पूरी ताकत से काम करें और जिम्मेदारी न मिले, तब भी काम करते रहें।"
— अमित शाह (केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री)

भाजपा के डिजिटल सदस्यता अभियान के दौरान सूरत शहर भारतीय जनता युवा मोर्चा के अध्यक्ष करशन गोंडलिया ने युवाओं को संगठन से जोड़ने के लिए मिस्ड कॉल अभियान को आगे बढ़ाया।

करशन गोंडलिया के अनुसार, उनके प्रयास से करीब 15,000 युवाओं ने मिस्ड कॉल के माध्यम से डिजिटल सदस्यता ली। इसके बाद सदस्यों का सत्यापन कर उनका डेटा पार्टी कार्यालय को उपलब्ध कराया गया।

इस अभियान में योगदान के लिए करशन गोंडलिया को गांधीनगर में आयोजित संगठनात्मक कार्यक्रम में तत्कालीन भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह के हाथों सम्मानित किया गया। उनके अनुसार, तत्कालीन मुख्यमंत्री आनंदीबेन पटेल ने भी उनके प्रयास की सराहना की।

लेकिन इस कहानी की सबसे बड़ी सीख 15 हजार का आंकड़ा नहीं, बल्कि निरंतर प्रयास है।

रुकना नहीं, आगे बढ़ते रहना

करशन गोंडलिया वर्ष 2010 में सूरत शहर भाजपा युवा मोर्चा के अध्यक्ष बने। संगठनात्मक जिम्मेदारियों के बीच एक समय विराम आया, लेकिन उन्होंने

पार्टी का काम जारी रखा और आगे चलकर सूरत शहर भाजपा महामंत्री की जिम्मेदारी तक पहुँचे।

कार्यकर्ता के लिए सीख

जिम्मेदारी मिले तो पूरी ताकत से काम करें,

जिम्मेदारी न मिले तब भी काम करते रहें।

पद स्थायी नहीं होता। कार्य और कर्तव्य के प्रति निरंतरता ही कार्यकर्ता की असली पहचान बनाती है।

आज की मेहनत शायद तुरंत दिखाई न दे, लेकिन संगठन में किया गया निरंतर काम भविष्य में अपनी पहचान बनाता है।

एक बात हमेशा याद रखें

"जिस दिन कार्यकर्ता काम करना छोड़ देता है,

उसी दिन उसकी आगे बढ़ने की राह भी रुकने लगती है।"

अंतिम सूत्र : "पद रास्ता नहीं बनाता, निरंतर कर्म रास्ता बनाता है।"

फोटो: 15 हजार मिस्ड कॉल पर करसन गोंडलिया को सन्मानित करते तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह व साथ गुजरात की सीएम आनंदी बेन पटेल व प्रदेश अध्यक्ष विजय रूपानी।

मैं भी पन्ना प्रमुख

जब अमित शाह ने संभाली मतदाता सूची के एक पन्ने की जिम्मेदारी

संगठन सूत्र

"पन्ना प्रमुख पार्टी के सबसे महत्वपूर्ण जमीनी कार्यकर्ताओं में से एक है।"
— *अमित शाह* (केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री)

भारतीय जनता पार्टी की संगठनात्मक व्यवस्था में पन्ना प्रमुख की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है, इसका सबसे प्रभावशाली उदाहरण तब सामने आया जब केंद्रीय गृह मंत्री और भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह स्वयं पन्ना प्रमुख बने।

गुजरात में अमित शाह को गांधीनगर के नारणपुरा क्षेत्र के बूथ नंबर 38 के पन्ना नंबर 7 की जिम्मेदारी दी गई थी। इस तथ्य का उल्लेख 2021 की रिपोर्टों में स्पष्ट रूप से किया गया है।

यह केवल एक संगठनात्मक नियुक्ति नहीं थी। इसके पीछे कार्यकर्ताओं के लिए एक स्पष्ट संदेश था—

संगठन में जिम्मेदारी पद देखकर नहीं, काम देखकर महत्वपूर्ण होती है।

राष्ट्रीय स्तर का नेता भी जब मतदाता सूची के एक पन्ने की जिम्मेदारी स्वीकार करता है, तो वह यह बताता है कि संगठन की वास्तविक ताकत उसकी सबसे निचली इकाई तक पहुँचने में है।

पन्ना प्रमुख का काम केवल सूची संभालना नहीं है। वह अपने पन्ने से जुड़े परिवारों और मतदाताओं से संपर्क बनाए रखने वाली संगठन की जमीनी कड़ी है। यही कारण है कि भाजपा की बूथ रणनीति में पन्ना प्रमुख को महत्वपूर्ण स्थान मिला।

अमित शाह के उदाहरण से तीन संदेश

1. पद बड़ा हो सकता है, जिम्मेदारी छोटी नहीं।
2. नेतृत्व ऊपर से आता है, लेकिन संगठन नीचे से मजबूत होता है।
3. जिस काम की अपेक्षा सामान्य कार्यकर्ता से की जाती है, उसे नेतृत्व स्वयं करे तो कार्यकर्ताओं का विश्वास और मनोबल दोनों बढ़ते हैं।

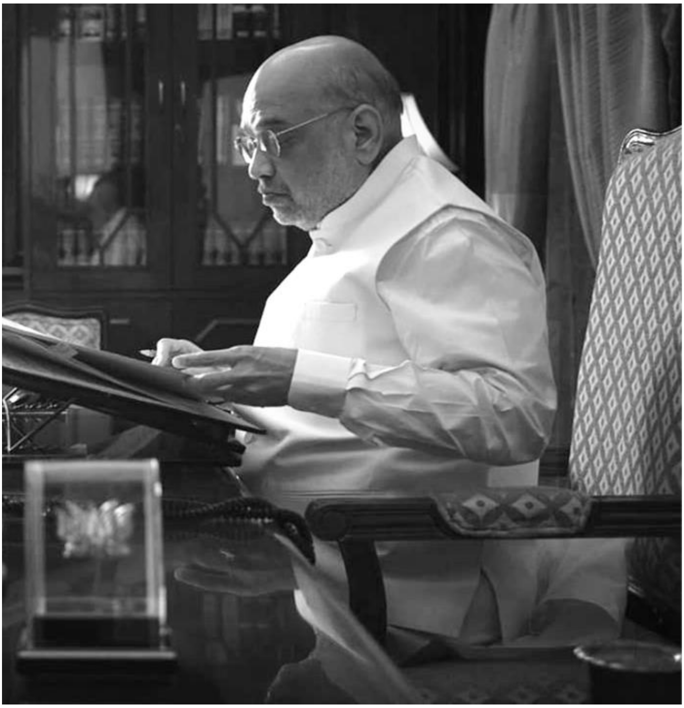

फ़ोटो कैप्शन : अहमदाबाद (नारनपुरा / गांधीनगर क्षेत्र) में बूथ विजय अभियान और चुनावी जनसंपर्क के दौरान जमीनी स्तर पर कार्यकर्ताओं के साथ कार्य करते अमित शाह।

लेखक की सोच

जब नेतृत्व स्वयं पन्ना संभालता है, तब पन्ना प्रमुख की जिम्मेदारी का महत्व और बढ़ जाता है।

विशेष महत्वपूर्ण

मतदान प्रतिशत (Voter Turnout) बढ़ाने का अचूक नुस्खा

किसी भी चुनाव में केवल अपने समर्थकों की संख्या बढ़ाना पर्याप्त नहीं होता, सबसे महत्वपूर्ण यह सुनिश्चित करना होता है कि वे समर्थक मतदान के दिन पोलिंग बूथ तक पहुँचें। भारत में औसतन 60 से 65 प्रतिशत मतदान होता है, जिसका अर्थ है कि लगभग 35 प्रतिशत मतदाता घर से निकलते ही नहीं हैं।

इस उदासीन वर्ग में अक्सर मध्यम वर्ग, कामकाजी लोग और उच्च शिक्षित वर्ग शामिल होते हैं। पन्ना प्रमुख व्यवस्था इस 35 प्रतिशत के अंतर को पाटने का सबसे अचूक नुस्खा है।

पन्ना प्रमुख को अच्छी तरह पता होता है कि उसके पन्ने के कौन से लोग सुबह जल्दी वोट डालना पसंद करते हैं, कौन दोपहर में और कौन नौकरी या व्यवसाय के कारण व्यस्त हैं। वह मतदान के दिन सुबह से ही अपने पन्ने के परिवारों के संपर्क में रहता है, जिससे मतदान प्रतिशत में 5 से 10 फीसदी की सीधी बढ़ोतरी दर्ज की जाती है।

साइलेंट वोटर (शांत मतदाता) की पहचान

भारतीय चुनावों में एक बहुत बड़ा वर्ग 'साइलेंट वोटर' का होता है। ये वे मतदाता होते हैं जो किसी भी राजनीतिक रैली में नहीं जाते, अपने घर पर किसी दल का झंडा नहीं लगाते और न ही किसी चौराहे या चाय की दुकान पर राजनीतिक बहस का हिस्सा बनते हैं। वे बेहद शांति से सब कुछ देखते हैं और मतदान के दिन अपना फैसला सुना देते हैं।

पारंपरिक चुनाव प्रचार के माध्यम से इन साइलेंट वोटर्स के मन को पढ़ना लगभग नामुमकिन होता है। लेकिन पन्ना प्रमुख अपनी सूक्ष्म कार्यप्रणाली के कारण इस वर्ग तक आसानी से पहुँच जाता है।

वह जब औपचारिक राजनीति से दूर हटकर, एक पड़ोसी या परिचित के नाते उनके ड्राइंग रूम तक पहुँचता है, तो वे साइलेंट वोटर भी धीरे-धीरे खुलकर

अपने विचार साझा करने लगते हैं। यह सूक्ष्म जानकारी संगठन को अपनी रणनीति को अंतिम रूप देने में बहुत मदद करती है।

एग्जिट पोल से सटीक पन्ना प्रमुख का पोल

मतदाता का मिजाज, बूथ की जानकारी और परिणाम का अनुमान

चुनाव के समय टीवी चैनलों और सर्वे एजेंसियों के एग्जिट पोल मतदाताओं के नमूने के आधार पर संभावित परिणाम का अनुमान लगाते हैं। लेकिन बूथ स्तर पर काम करने वाला पन्ना प्रमुख किसी सर्वेक्षणकर्ता की तरह केवल कुछ लोगों से सवाल नहीं करता। वह लंबे समय से अपने क्षेत्र के परिवारों के संपर्क में रहता है और मतदान से पहले मतदाताओं के रुझान, स्थानीय मुद्दों तथा मतदान की संभावित स्थिति को समझता है।

गुजरात में पन्ना समिति की कार्यप्रणाली पर प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार, पन्ना समिति के सदस्य अपने हिस्से के मतदाताओं से संपर्क कर यह समझने का प्रयास करते थे कि कौन भाजपा के पक्ष में है, कौन तटस्थ है और कहाँ पार्टी को अधिक मेहनत की जरूरत है।

यही जानकारी जब पन्ना प्रमुख से बूथ, विधानसभा और संगठन के वरिष्ठ स्तर तक पहुँचती है, तो नेतृत्व को जमीन पर चुनावी स्थिति की एक तस्वीर मिलने लगती है।

फ़ोटो कैप्शन: मतदान के दिन मत डालने के लिए कतार में लगी महिलाएं

मतदान समाप्त होने के बाद भी पन्ना प्रमुख और बूथ स्तर के कार्यकर्ताओं की भूमिका समाप्त नहीं होती। मतदान प्रतिशत, अपने क्षेत्र के मतदाताओं की भागीदारी और बूथ पर प्राप्त स्थानीय जानकारी को मिलाकर संगठन अपने स्तर पर चुनावी प्रदर्शन का विश्लेषण करता है।

गुजरात की पन्ना समिति व्यवस्था के बारे में India Today ने लिखा कि प्रत्येक टीम को सीमित संख्या में मतदाताओं की जिम्मेदारी देने वाली यह संरचना मतदान के बाद तेज और व्यवस्थित विश्लेषण में भी उपयोगी रही।

इसीलिए किसी बड़े चुनावी सर्वे से पहले ही संगठन के भीतर बूथ स्तर से एक अलग तरह का "ग्राउंड पोल" तैयार हो जाता है।

यह वैज्ञानिक चुनावी सर्वेक्षण का विकल्प नहीं है, लेकिन संगठन के लिए जमीनी फीडबैक की महत्वपूर्ण व्यवस्था हो सकती है।

ईवीएम पर सवाल का जवाब क्या?

कभी-कभी चुनाव परिणाम को लेकर यह आरोप लगाया जाता है कि जीत केवल ईवीएम के कारण हुई। ऐसे राजनीतिक दावों पर निष्कर्ष निकालने के बजाय इस पुस्तक का महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि चुनावी परिणाम से पहले ही राजनीतिक दलों के पास बूथ स्तर से आने वाला व्यापक फीडबैक मौजूद होता है।

पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति के हजारों कार्यकर्ताओं द्वारा अलग-अलग क्षेत्रों से प्राप्त जानकारी नेतृत्व को यह समझने में मदद कर सकती है कि कहाँ संगठन मजबूत है, कहाँ मुकाबला करीबी है और कहाँ अतिरिक्त प्रयास की आवश्यकता है।

इसलिए चुनाव परिणाम को समझने के लिए केवल मतदान मशीन को देखना पर्याप्त दृष्टिकोण नहीं है; मतदाता तक पहुँचने वाली पूरी संगठनात्मक प्रक्रिया को समझना भी जरूरी है।

लेखक की सोच

एग्जिट पोल मतदान के बाद अनुमान लगाता है; पन्ना प्रमुख वर्षों के संपर्क से मतदाता का मिजाज समझता है।

पन्ना समिति बहुत बड़ी ताकत

सी. आर. पाटिल का संगठनात्मक प्रयोग और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सराहना

पन्ना प्रमुख की जिम्मेदारी को सामूहिक स्वरूप देकर पन्ना समिति विकसित करना सी. आर. पाटिल के महत्वपूर्ण संगठनात्मक प्रयोगों में माना जाता है। इसका उद्देश्य केवल मतदाता सूची के एक पन्ने की जिम्मेदारी तय करना नहीं, बल्कि उस पन्ने से जुड़े परिवारों तक नियमित और व्यवस्थित संपर्क स्थापित करना था।

मोदी ने भी सराहा

दिसंबर 2022 में गुजरात विधानसभा चुनाव में भाजपा की 156 सीटों की ऐतिहासिक जीत के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने गुजरात संगठन और सी. आर. पाटिल की पन्ना समिति की संगठनात्मक कार्यशैली की प्रशंसा की। जिसने पन्ना समिति मॉडल को राष्ट्रीय चर्चा में और प्रमुखता दी।

आठ उपचुनाव, आठ जीत

2020 में गुजरात की आठ विधानसभा सीटों पर उपचुनाव हुए और भाजपा ने सभी आठ सीटों पर जीत दर्ज की। यह पन्ना समिति आधारित सूक्ष्म संगठन व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण परीक्षा थी।

हालाँकि किसी चुनावी परिणाम का पूरा श्रेय केवल पन्ना समिति को देना उचित नहीं होगा, लेकिन 8 में 8 जीत ने बूथ स्तर की संगठित कार्यप्रणाली की क्षमता को जरूर रेखांकित किया।

70 लाख घरों तक पहुँच

सी. आर. पाटिल के अनुसार, गुजरात में पन्ना समिति के माध्यम से 70 लाख घरों तक संगठन की पहुँच बनाई गई। इसका महत्व केवल संख्या में नहीं, बल्कि उस व्यवस्था में है जिसमें—

परिवार → जिम्मेदार कार्यकर्ता → नियमित संपर्क → जानकारी → संगठन

यही पन्ना समिति को केवल चुनावी व्यवस्था से आगे बढ़ाकर निरंतर जनसंपर्क का माध्यम बनाता है।

संगठन सूत्र

"बड़ी राजनीतिक ताकत बड़े मंचों से नहीं, बल्कि छोटे-छोटे परिवारों तक पहुँचने वाले समर्पित कार्यकर्ताओं से बनती है।"

लेखक की सोच:

एक पन्ने से शुरू हुआ संपर्क, जब लाखों परिवारों तक पहुँचता है, तो वही संगठन की वास्तविक शक्ति बन जाता है।

गुजरात में पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति का टोटल डेटा

कुल पेज समित सदस्य : 7070160

कुल पन्ना प्रमुख कितने बने: 1546521

गुजरात की 182 विधानसभाओं में पन्ना समिति का व्यापक नेटवर्क

पन्ना समिति की जमीनी ताकत और उसके विस्तार को समझने के लिए गुजरात की सभी 182 विधानसभा क्षेत्रों का यह विधानसभा-वार डेटा महत्वपूर्ण तस्वीर प्रस्तुत करता है। गुजरात के पन्ना समिति प्रभारी यज्ञेश दवे की रिपोर्ट के आधार पर तैयार इस आंकड़ा-संकलन में प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में सक्रिय पन्ना समिति सदस्यों की संख्या दर्ज की गई है। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार गुजरात में कुल 70,70,160 पन्ना समिति सदस्य दर्ज हैं।

यह आंकड़ा केवल संख्या नहीं, बल्कि उस संगठनात्मक व्यवस्था का प्रमाण है जिसमें मतदाता सूची के प्रत्येक पन्ने तक कार्यकर्ता की पहुंच बनाने का प्रयास किया गया है। कच्छ से लेकर दक्षिण गुजरात और सौराष्ट्र से लेकर उत्तर गुजरात तक विधानसभा-वार आंकड़े बताते हैं कि पन्ना समिति का नेटवर्क राज्य के अलग-अलग सामाजिक और भौगोलिक क्षेत्रों में किस व्यापक स्तर तक विकसित हुआ है। प्रस्तुत तालिका इसी जमीनी संगठन की विधानसभा-वार तस्वीर सामने रखती है।

विधानसभा-वार पन्ना समिति सदस्य संख्या

क्र.	विधानसभा क्षेत्र	कुल पन्ना समिति सदस्य
1	अबडासा	52,281
2	मांडवी	41,776
3	भुज	38,130
4	अंजार	40,341
5	गांधीधाम	47,361
6	रापर	63,561
7	वाव	40,321
8	थराद	36,276
9	धानेरा	35,275
10	दांता	29,239
11	वडगाम	43,417
12	पालनपुर	41,546
13	डीसा	40,470
14	डीओदर	36,398
15	कांकेरज	38,970
16	राधनपुर	45,114
17	चाणस्मा	51,491
18	पाटन	48,876
19	सिद्धपुर	47,835
20	खेरालु	24,218

21	उंझा	31,705
22	विसनगर	34,679
23	बेचराजी	45,656
24	कड़ी	42,235
25	मेहसाणा	45,857
26	विजापुर	35,475
27	हिम्मतनगर	40,477
28	इडर	39,181
29	खेड़ब्रह्मा	37,938
30	भीलोडा	41,481
31	मोडासा	35,933
32	बायड	31,900
33	प्रांतिज	35,476
34	दहेगाम	26,002
35	गांधीनगर दक्षिण	47,546
36	गांधीनगर उत्तर	28,242
37	मानसा	34,862
38	कालोल	28,767
39	वीरमगाम	49,741
40	साणंद	47,081
41	घाटलोडिया	56,797
42	वेजलपुर	41,332
43	वटवा	57,591
44	एलिसब्रिज	31,843
45	नारणपुरा	30,811

46	निकोल	33,586
47	नरोडा	38,053
48	ठक्करबापा नगर	23,989
49	बापूनगर	19,209
50	अमराईवाड़ी	34,407
51	दरियापुर	17,821
52	जमालपुर-खाड़िया	22,858
53	मणिनगर	41,083
54	दाणीलिमडा	32,481
55	साबरमती	31,714
56	असरवा	21,327
57	दस्क्रोई	44,820
58	धोलका	28,769
59	धंधुका	34,088
60	दसाड़ा	39,891
61	लिम्बडी	40,247
62	वढवाण	34,971
63	चोटिला	29,139
64	ध्रांगध्रा	35,707
65	मोरबी	56,352
66	टंकारा	24,803
67	वांकानेर	30,918
68	राजकोट पूर्व	38,846
69	राजकोट पश्चिम	49,639
70	राजकोट दक्षिण	35,906

71	राजकोट ग्रामीण	49,825
72	जसदण	38,938
73	गोंडल	55,819
74	जेतपुर	55,621
75	धोराजी	55,011
76	कालावड़	11,155
77	जामनगर ग्रामीण	9,246
78	जामनगर उत्तर	50,989
79	जामनगर दक्षिण	45,073
80	जामजोधपुर	16,841
81	खंभालिया	41,081
82	द्वारका	44,554
83	पोरबंदर	5,089
84	कुटियाणा	2,869
85	मनावदर	36,973
86	जूनागढ़	42,490
87	विसावदर	47,595
88	केशोद	36,336
89	मंगरोल	34,119
90	सोमनाथ	41,186
91	तलाला	36,441
92	कोडिनार	35,950
93	ऊना	41,761
94	धारी	40,330
95	अमरेली	47,156

96	लाठी	38,669
97	सावरकुंडला	42,818
98	राजुला	39,157
99	महुवा	55,058
100	तलाजा	37,498
101	गारीयाधार	49,373
102	पालिताणा	44,023
103	भावनगर ग्रामीण	51,666
104	भावनगर पूर्व	59,019
105	भावनगर पश्चिम	57,915
106	गढ़ड़ा	38,542
107	बोटाद	37,888
108	खंभात	34,211
109	बोरसद	37,938
110	अंकलाव	33,603
111	उमरेठ	40,223
112	आनंद	49,520
113	पेटलाद	36,887
114	सोजित्रा	30,478
115	मातर	32,832
116	नडियाद	47,399
117	मेहमदाबाद	33,340
118	महुधा	37,008
119	थासरा	37,981
120	कपडवंज	37,667

121	बालासिनोर	48,379
122	लूनावाड़ा	40,431
123	संतरामपुर	39,583
124	शेहरा	34,220
125	मोरवा हडफ	30,078
126	गोधरा	39,632
127	कालोल	35,894
128	हालोल	44,830
129	फतेपुरा	39,458
130	झालोद	41,328
131	लिमखेड़ा	41,497
132	दाहोद	42,649
133	गरबाड़ा	44,060
134	देवगढ़ बारिया	54,803
135	सावली	41,172
136	वाघोडिया	38,557
137	छोटा उदयपुर	41,007
138	जेतपुर	36,607
139	संखेड़ा	40,742
140	डभोई	35,347
141	वडोदरा शहर	50,620
142	सयाजिगंज	44,264
143	अकोटा	40,003
144	रावपुरा	44,371
145	मंझालपुर	38,610

146	पादरा	37,493
147	करजन	32,291
148	नांदोड़	37,341
149	डेडियापाड़ा	38,812
150	जंबूसर	35,381
151	वागरा	33,214
152	झगड़िया	38,061
153	भरूच	44,203
154	अंकलेश्वर	35,335
155	ओलपाड	68,576
156	मंगरोल	5,924
157	मांडवी	41,149
158	कामरेज	60,289
159	सूरत पूर्व	30,960
160	सूरत उत्तर	28,202
161	वराछा रोड	27,723
162	करंज	28,726
163	लिम्बायत	39,863
164	उधना	34,671
165	मजूरा	32,443
166	कतारगाम	60,883
167	सूरत पश्चिम	35,915
168	चोर्यासी	32,449
169	बारडोली	56,799
170	महुवा	35,559

171	व्यारा	33,051
172	निजार	53,390
173	डांग	33,202
174	जलालपुर	38,773
175	नवसारी	33,566
176	गणदेवी	41,397
177	वांसदा	42,406
178	धरमपुर	35,479
179	वलसाड	34,988
180	पारडी	31,593
181	कपराडा	48,047
182	उमरगांव	38,575
कुल	**कुल पन्ना समिति सदस्य**	**70,70,160**

गुजरात में पन्ना समिति का लोकसभा-वार व्यापक विस्तार

गुजरात पन्ना समिति इंचार्ज यज्ञेश दवे की रिपोर्ट के अनुसार, राज्य की 26 लोकसभा सीटों में कुल 70,70,160 पन्ना समिति सदस्य दर्ज हैं। यह आँकड़ा गुजरात में पन्ना-स्तर तक संगठन के विस्तार और मतदाता सूची के प्रत्येक पन्ने से जुड़ने की संगठनात्मक क्षमता को रेखांकित करता है। कच्छ से लेकर वलसाड तक प्रत्येक लोकसभा क्षेत्र में पन्ना समिति सदस्यों का विस्तृत नेटवर्क तैयार किया गया है। इस रिपोर्ट के लोकसभा-वार आँकड़े यह स्पष्ट करते हैं कि पन्ना समिति केवल चुनावी व्यवस्था नहीं, बल्कि बूथ से लेकर मतदाता सूची के प्रत्येक पन्ने तक संगठन को सक्रिय और जवाबदेह बनाने की एक व्यापक संरचना है। इसके बाद प्रस्तुत लोकसभा-वार विवरण इस संगठनात्मक विस्तार की पूरी तस्वीर सामने रखता है।

लोकसभा वार पन्ना समिति सदस्य संख्या

लोकसभा क्रमांक	लोकसभा का नाम	कुल पन्ना समिति सदस्य
1	कच्छ	3,39,802
2	बनासकांठा	2,59,525
3	पाटन	2,99,921
4	मेहसाणा	2,70,469
5	साबरकांठा	2,62,386
6	गांधीनगर	2,64,744
7	अहमदाबाद पूर्व	2,45,976
8	अहमदाबाद पश्चिम	2,01,820
9	सुरेंद्रनगर	2,63,784
10	राजकोट	2,68,875
11	पोरबंदर	2,47,718
12	जामनगर	2,18,939
13	जूनागढ़	2,79,542

14	अमरेली	3,12,561
15	भावनगर	3,26,551
16	आनंद	2,62,860
17	खेड़ा	2,61,835
18	पंचमहल	2,66,615
19	दाहोद	3,03,378
20	वडोदरा	2,97,597
21	छोटा उदयपुर	2,73,367
22	भरूच	2,57,297
23	बारडोली	2,86,161
24	सूरत	2,80,985
25	नवसारी	2,53,162
26	वलसाड	2,64,290
कुल	—	**70,70,160**

उपसंहार

पन्ने से परिवर्तन तक

किसी भी बड़े संगठन की शक्ति उसके आकार में नहीं, बल्कि उसकी सबसे छोटी इकाई की सक्रियता में छिपी होती है। इस पुस्तक की यात्रा भी इसी विचार से शुरू होकर बूथ, कार्यकर्ता, पन्ना प्रमुख, परिवार, पन्ना समिति और आधुनिक डिजिटल संगठन तक पहुँचती है।

पन्ना प्रमुख की जिम्मेदारी देखने में भले ही मतदाता सूची के एक पन्ने तक सीमित दिखाई देती हो, लेकिन वास्तव में यह जिम्मेदारी उस पन्ने पर दर्ज प्रत्येक परिवार से जुड़ने, संवाद बनाने, उनकी बात सुनने और आवश्यकता के समय उनके साथ खड़े रहने की है। यही निरंतर संपर्क धीरे-धीरे परिचय को संबंध और संबंध को विश्वास में बदलता है।

इस पुस्तक के विभिन्न अध्यायों में हमने देखा कि बूथ संगठन की मूल इकाई है, लेकिन बूथ को जीवंत बनाने वाला कार्यकर्ता है। बूथ समिति ने सामूहिक शक्ति दी, पन्ना प्रमुख ने संपर्क को सूक्ष्म बनाया और पन्ना समिति ने उस व्यक्तिगत जिम्मेदारी को टीम की शक्ति में बदलने का रास्ता दिखाया। विभिन्न राज्यों के अनुभवों ने यह भी बताया कि परिस्थितियाँ अलग हो सकती हैं, लेकिन कार्यकर्ता की निष्ठा, अनुशासन, संवाद और निरंतरता हर जगह संगठन की मूल शक्ति बनी रहती है।

पन्ना प्रमुख का काम केवल चुनाव के दिनों का काम नहीं है। चुनाव तो उसकी सक्रियता की परीक्षा का एक अवसर मात्र है। वास्तविक संगठन उस समय बनता है जब कार्यकर्ता चुनाव के बीच के लंबे समय में भी समाज के बीच उपस्थित रहता है—सुख में शुभकामना देने, कठिन समय में सहयोग करने, वरिष्ठ नागरिकों का सम्मान करने, युवाओं से संवाद करने, महिलाओं की बात सुनने और नए मतदाताओं को लोकतांत्रिक प्रक्रिया से जोड़ने के रूप में।

आज संगठन के सामने एक नई चुनौती भी है। डिजिटल तकनीक ने संपर्क की गति बढ़ा दी है, लेकिन तकनीक स्वयं संगठन का विकल्प नहीं हो सकती। मोबाइल, डिजिटल मतदाता सूची, सामाजिक माध्यम, संदेश समूह और संगठनात्मक अनुप्रयोग कार्यकर्ता की क्षमता को बढ़ा सकते हैं, लेकिन विश्वास आज भी आमने-सामने के संवाद से ही बनता है। इसलिए भविष्य का प्रभावी पन्ना प्रमुख वह होगा जो तकनीक और मानवीय संबंध—दोनों को साथ लेकर चले।

इस पूरी यात्रा में एक बात सबसे स्पष्ट होकर सामने आती है—पद से अधिक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है और संख्या से अधिक महत्वपूर्ण गुणवत्ता। एक सक्रिय पन्ना प्रमुख एक बूथ को मजबूत कर सकता है; मजबूत बूथ संगठन को शक्ति दे सकता है और मजबूत संगठन लोकतांत्रिक प्रक्रिया में व्यापक जनभागीदारी का आधार बन सकता है।

चुनाव का परिणाम केवल मतदान मशीन में दर्ज संख्या नहीं होता। उसके पीछे वर्षों का संपर्क, संवाद, सेवा, विश्वास, प्रशिक्षण, अनुशासन और कार्यकर्ताओं का परिश्रम होता है। इसलिए चुनावी विजय को समझने के लिए केवल अंतिम परिणाम को देखना पर्याप्त नहीं है; उस जमीन को समझना भी जरूरी है जहाँ कार्यकर्ता और मतदाता के बीच संबंध बनता है।

इस पुस्तक की सबसे बड़ी सीख यही है कि संगठन किसी एक व्यक्ति से नहीं चलता। व्यक्ति व्यवस्था को प्रारंभ कर सकता है, लेकिन मजबूत टीम उसे निरंतर आगे बढ़ाती है। यदि एक कार्यकर्ता अनुपस्थित हो जाए और उसके स्थान पर दूसरा कार्यकर्ता जिम्मेदारी संभाल सके, यदि एक पन्ने की जिम्मेदारी टीम मिलकर निभा सके और यदि संगठन हर परिस्थिति में सक्रिय रह सके, तभी संगठन वास्तव में मजबूत माना जाएगा।

अंततः पन्ना प्रमुख केवल एक संगठनात्मक पद या जिम्मेदारी नहीं, बल्कि जमीनी लोकतांत्रिक कार्यसंस्कृति का प्रतीक है। यह हमें सिखाता है कि बड़ी उपलब्धियों की शुरुआत छोटी जिम्मेदारियों को ईमानदारी से निभाने से होती है।

एक पन्ना सक्रिय होगा तो एक बूथ मजबूत होगा।

एक बूथ मजबूत होगा तो संगठन मजबूत होगा।

और जब संगठन की शक्ति समाज के विश्वास से जुड़ती है, तब विजय केवल चुनाव का परिणाम नहीं रहती—वह निरंतर संगठनात्मक परिश्रम की परिणति बन जाती है।

पन्ने से बूथ तक, बूथ से परिवार तक,
परिवार से विश्वास तक और विश्वास से विजय तक—
यही पन्ना प्रमुख की यात्रा है।— यजुवेंद्र दुबे